www.terapanthinfo.com

इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 56 ■ अंक : 13 ■ 1-15 मई, 2011

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❒ सदस्यता शुल्क :

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❒ विज्ञापन सहयोग :

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 20,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 5,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 3,000 रु.

❒ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली–110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

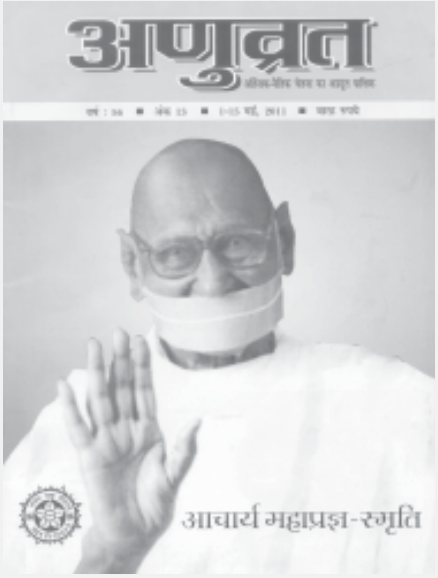

◆ अणुव्रत की आधार-भित्ति	*आचार्य महाप्रज्ञ*	3
◆ महाप्रज्ञ का समर्पण भाव	*आचार्य तुलसी*	6
◆ आचार्य महाप्रज्ञ	*आचार्य महाश्रमण*	10
◆ आचार्य महाप्रज्ञ : एक संदेश	*प्रो. धर्मपाल मैनी*	12
◆ इंसान को इंसान से जोड़ा	*अब्दुल जब्बार*	13
◆ प्रामाणिकता-ईमानदारी-सच्चाई	*राजेन्द्र शंकर भट्ट*	14
◆ मानव मूल्यों के प्रहरी : आचार्य महाप्रज्ञ	*बी.एल. आच्छा*	16
◆ जन-जन की नजर में	*डॉ. हीरालाल छाजेड़*	17
◆ अनेकांत के व्याख्याता	*मुनि दीपकुमार*	18
◆ आचार्य महाप्रज्ञ और व्यक्तित्व विकास	*मुनि राकेशकुमार*	19
◆ तुलसी मसीहा थे तो महाप्रज्ञ महर्षि	*डॉ. महेन्द्र भानावत*	20
◆ एक अमिट स्मृति	*रमेश हिरण*	22
◆ डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति....	*ललित गर्ग*	24
◆ मन से आगे है भावधारा	*नीलम शर्मा*	29
◆ महाप्रज्ञ के योगदान को सदैव याद रखा जायेगा	*मुनि गिरीशकुमार*	31

■ स्तंभ

◆ संपादकीय	2
◆ प्रेरणा	9, 29
◆ कविता	23, 30
◆ पाठक दृष्टि	32
◆ अणुव्रत आंदोलन	33-39
◆ अणुव्रत योगक्षेमी योजना	40

www.terapanthinfo.com

प्रणाम

ऋषिमना अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ को हमारे मध्य से विदा हुए एक वर्ष बीत गया। जीवन की गहराइयों को समझते हुए ऋषि पुरुष ने जो कहा वह जीवन का दर्शन बन गया। आपाधापी और वर्तमान मशीनी युग में मनुष्य किस तरह से अकर्मण्य बनता जा रहा है, इसे आचार्य महाप्रज्ञ ने एक कथा के माध्यम से स्पष्ट करते हुए बोध पाठ दिया कि प्रकृति के नियमों का उल्लंघन जीवन रेखा के साथ आत्मघाती है

सेवा करने वाले में जो पहली बात होनी चाहिए, वह है सहनशीलता एवं समर्पण भाव। जब तक सहन करने की शक्ति नहीं आती, सेवा का दायित्व नहीं उठाया जा सकता। गुरु के एक ही शिष्य था। शिष्य आलसी था। रात का समय। दीया जल रहा है। रात गहरा गई तो गुरु ने पास ही लेटे हुए शिष्य से कहा, 'सोने का समय हो गया। प्रकाश की जरूरत नहीं, अब दीये को बुझा दो।'

शिष्य उठना नहीं चाहता था। बोला, 'गुरु जी, दीये को बुझाने की क्या जरूरत है? मुंह पर वस्त्र रख लीजिए, प्रकाश दिखाई देना बंद हो जाएगा।' थोड़ी देर बाद गुरुजी ने कहा, 'वर्षा हो रही थी। जरा बाहर निकलकर देखो कि अभी बूंदें पड़ रही हैं या आसमान साफ हो गया।'

'नहीं, अभी बूंदें थमी नहीं हैं। वर्षा धीमी गति से अभी भी हो रही है।' शिष्य ने लेटे हुए उत्तर दिया।

'तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि वर्षा हो रही है? तुम तो बाहर गए ही नहीं।' गुरु बोले। शिष्य ने कहा मैंने पता कर लिया। अभी एक बिल्ली बाहर से कमरे में आई। उसकी पीठ पर हाथ फेर कर मैंने पता कर लिया, वह भीगी हुई थी।' थोड़ी देर बाद गुरुजी ने कहा, 'खिड़की से हवा का बार-बार झोंका आता है और खटखट की आवाज होती है। खिड़की को बंद कर दो।'

गुरुजी के बार-बार के आदेश ने शिष्य के मन में चिढ़ पैदा कर दी। उसने कहा, 'आपने दो आदेश दिए, मैंने तत्काल उनकी क्रियान्विति कर दी। अब यह एक छोटा-सा काम आप ही कर दें।' सहिष्णुता और श्रमनिष्ठा दोनों सेवा के अनिवार्य गुण हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ जीवनभर श्रम एवं यात्रा करते रहे शरीर के साथ, विचारों के साथ। यह दुस्साहस ही था कि 82 वर्ष की अवस्था में भी उन्होंने राष्ट्रव्यापी अहिंसा यात्रा करने का संकल्प किया और राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली, हरियाणा, पंजाबवासियों को अहिंसा दर्शन से परिचित करवाया।

मैं अपने परिजनों-साथियों के साथ जब कभी भी गुरुदेव महाप्रज्ञ के उतपात में बैठता तो जीवन की गहराइयों को समझने-सुनने के साथ-साथ उनके करुणामय व्यक्तित्व की झलक भी मिलती। जून का महीना सन् ठीक से याद नहीं। घटना प्रसंग जैन विश्व भारती का है। आकाश से आग उगलता सूर्य और तपती धरती। मैं अपने पिता देवेन्द्र काका और माँ अंजना के साथ जैन विश्व भारती गया था अणुव्रत की बैठक में भाग लेने। युवाचार्य महाप्रज्ञजी के साथ काका की लम्बी चर्चाओं का दौर रहता। एक दिन चर्चा लम्बी हो गई दोपहर के लगभग बारह बज गये। यकायक काका को क्या सूझी, बोले मैं पास में ही ठहरा हुआ हूं आज आप गौचरी की कृपा करायें! युवाचार्यश्री भी सहज भाव से बोले चलो। यह सुनते ही सहयोगी साधु-साध्वियों ने कहा पूज्यश्री सड़कें आग उगल रही हैं, पांव जल जाएंगे। युवाचार्य महाप्रज्ञ ने पूरी बात सुनने के बाद कहा देवेन्द्र बहुत भोला है। यह गौचरी के लिए कभी कहता नहीं। पता नहीं आज कैसे भावना भा दी। चलो, चलें और युवाचार्य महाप्रज्ञ आग उगलती सड़कों पर पांव धरते हुए काका के साथ आवास स्थल पहुंचे। काका-माँ के हाथों भिक्षा ग्रहण कर ऋषि पुरुष ने करुणामय अंदाज में शिष्य की भावना को बहुमान दिया। उस दृश्य में मैंने गुरु-शिष्य के आत्मीय संबंधों की थाह लेते हुए महाप्रज्ञजी के जीवन दर्शन को देखा, जिसे आग उगलता सूर्य भी डिगा नहीं सका। आस्था और समर्पण के बिना महाप्रज्ञ के जीवन दर्शन को समझना और आचरण में लाना आसान नहीं है। आवश्यकता है इसे आत्मसात कर आसान बनाने की। जीवन निर्माता, पथदर्शक, ऋषि पुरुष आचार्य महाप्रज्ञ को भावभरा प्रणाम!

● डॉ. महेन्द्र कर्णावट

www.terapanthinfo.com

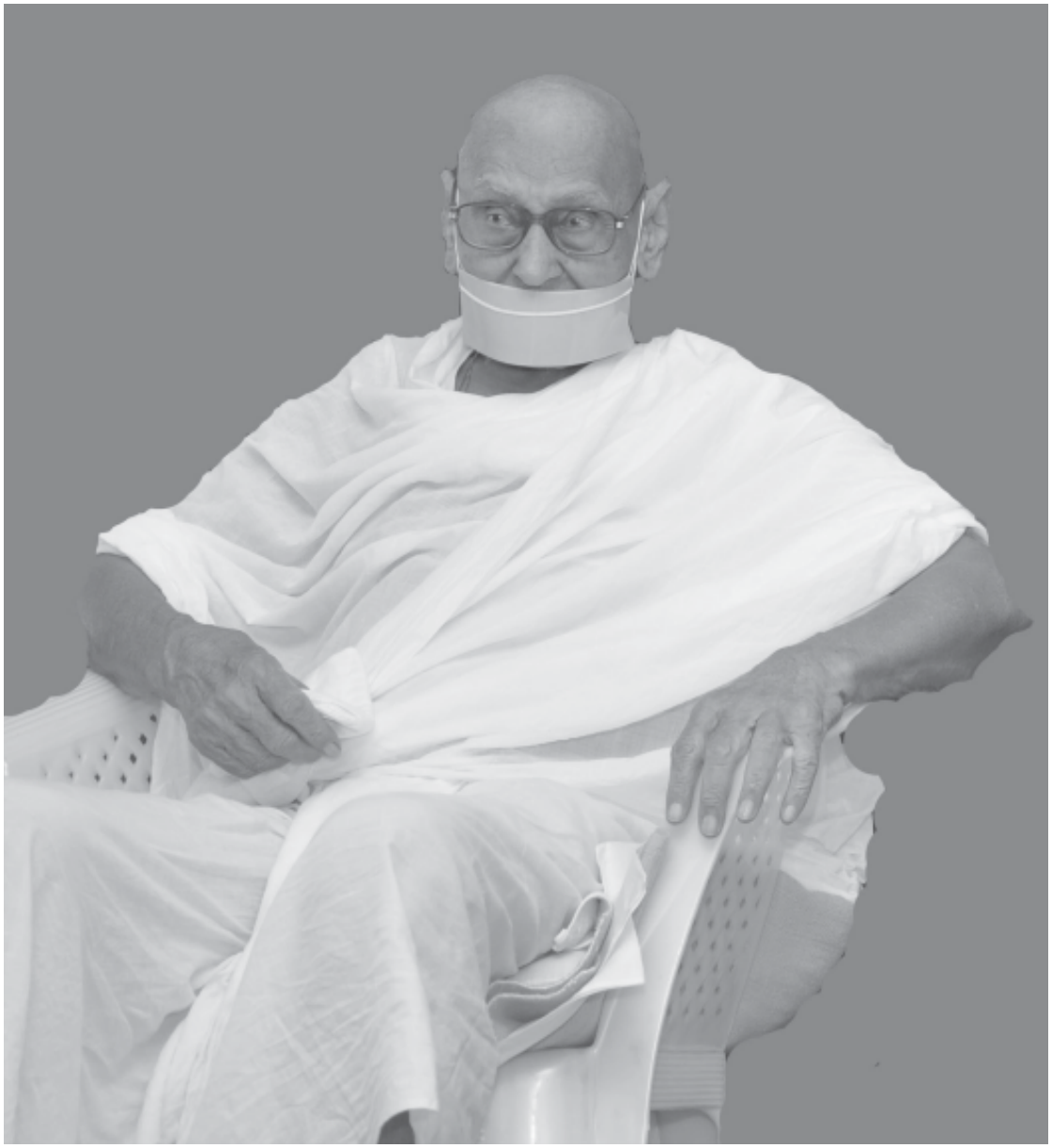

अणुव्रत की आधार-भित्ति

आचार्य महाप्रज्ञ

www.terapanthinfo.com

संयम का अर्थ है उस व्यक्तित्व का विकास, जो बाह्य से निरपेक्ष होकर अपने आपमें परिपूर्ण, संतुष्ट और परितृप्त है।

संयम का अर्थ है उस व्यक्तित्व का विनाश, जो बाह्य से अधिक सम्बद्ध होकर अपने आपमें अपूर्ण, असंतुष्ट और अतृप्त रहता है।

ममत्व का विसर्जन ही आध्यात्मिकता है। अणुव्रत आंदोलन की आधार-भित्ति यही है।

समाज का आधार परस्परावलंबन है। एक दूसरे को सहारा देता है और एक-दूसरे से सहारा लेता है, यह परस्परावलंबन है। समाज का आधार एक-क्षेत्रीयता नहीं किंतु एक-सूत्रता है। एक गाँव में हजार आदमी एकत्र हैं किंतु वे परस्पर सहयोग के धागे में बँधे हुए नहीं हैं तो वे हजार व्यक्ति हैं, एक समाज नहीं हैं। सहयोग के सूत्र में बँधे हुए पाँच व्यक्तियों का भी समाज बन जाता है। व्यक्ति की अंतिम सीमा-रेखा स्वार्थ है और समाज की आदि-रेखा परार्थ है। जितना स्वार्थ है, वह अपना है। जितना परार्थ है, वह सहयोग है। यह सहयोग ही व्यक्ति के व्यक्तित्व को सामाजिक रूप में बदल देता है।

समाजवादी दर्शन ने यह दृष्टि दी कि व्यक्ति अपने को पूर्णरूपेण समाज में विलीन कर दे पर ऐसा नहीं हुआ और हो भी नहीं सकता। जहाँ व्यक्ति को भौतिक स्पर्द्धाओं में से गुजरने की छूट है और भौतिक विकास ही परम लक्ष्य है, वहाँ व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को समाज में विलीन नहीं कर सकता।

यद्यपि समाजवाद या साम्यवाद स्वार्थ-संयम की प्रक्रिया है, फिर भी उसके पास स्वार्थ-संयम का कोई प्रबल सूत्र नहीं है। उसे स्वार्थ-संयम का वैधानिक प्रयोग माना जा सकता है किंतु वह उस (स्वार्थ-संयम) की प्रत्यक्ष प्रेरणा नहीं है। समाजवादी पद्धति में बल-प्रयोग से स्वार्थ को सीमित किया गया है किंतु उससे स्वार्थ का स्रोत सूखा नहीं है।

स्वार्थ-संयम और अध्यात्म

साम्यवादी जीवन-पद्धति इसी मनोवृत्ति की प्रतिक्रिया है। साम्यवाद को स्वार्थ-संयम का विधान-प्रेरित प्रयोग माना जा सकता है। उसमें स्वार्थ-संयम की प्रत्यक्ष प्रेरणा नहीं है। किन्तु वैधानिक ढंग से स्वार्थ को सीमित करने से वह (स्वार्थ-संयम) फलित होता है। कानून की जकड़ में भी कुछ न कुछ 'स्व' का पोषण चलता ही है। कानून की जकड़ ढीली हो जाए तो वह अधिक मात्रा में चल सकता है। इसका फलित यही हुआ कि साम्यवादी जीवन-पद्धति में भी व्यक्ति अपने 'स्व' को सुरक्षित रखे हुए है।

लोकतंत्रीय जीवन-पद्धति में 'स्व' को संरक्षण प्राप्त है। वहाँ कानून की जकड़ कठोर नहीं है। इसलिए वहाँ स्वार्थ-पोषण की संभावनाएं मुक्त हैं।

किसी भी जीवन-पद्धति में व्यक्ति का 'स्व' खण्डित नहीं है-अहं (मैं) के संग्रह का विसर्जन नहीं है। यह अहं का संग्रह ही सब दोषों का उत्पत्ति-बीज है। हिंसा, झूठ, चोरी, अब्रह्मचर्य और परिग्रह-ये सब किसलिए हैं? अपने लिए और केवल अपने लिए।

जितनी भी पदार्थवादी पद्धतियां हैं, वे 'स्व' का निरसन करने में असमर्थ हैं। उनका आधार भौतिकता है। भौतिकतावादी व्यवस्था 'स्व' का शोधन नहीं करती, नियमन करती है। फलतः वह प्रत्यक्ष में शांत और परोक्ष में उद्दीप्त रहता है। इसीलिए व्यक्ति छिपे-छिपे अनैतिक आचरण करता है।

आध्यात्मिकता ही एक ऐसा सत्य है, जिससे 'स्व' का शोधन होता है। जिसका अर्थ है अंतर-जगत में प्रवेश। वहाँ पहुँचने पर व्यक्ति सामाजिक होते हुए भी अकेला रहता है। बाह्य-जगत् का वह उपयोग करता है किंतु उसके प्रति उसका 'स्व' या 'ममत्व' नहीं होता। यह ममत्व का विसर्जन ही आध्यात्मिकता है। अणुव्रत आंदोलन की आधार-भित्ति यही है।

समाज-परिवर्तन की अक्षमता

कुछ लोग इस भाषा में सोचते हैं कि आध्यात्मिकता से सामाजिक परिवर्तन नहीं हो सकता। हजारों वर्ष बीत जाने पर भी आध्यात्मिक लोग समाज को नहीं बदल सके हैं। समाजवादी पद्धति ने पचास वर्षों में समाज का ढांचा ही बदल दिया है। उनका सोचना सही है। समाज का ढाँचा बदलता है आर्थिक-विकास और व्यवस्था से। जहाँ औद्योगिक क्रांति हुई है, वहाँ समाज का रूप-परिवर्तन हुआ है, फिर वहाँ समाजवादी पद्धति है या जनतंत्रीय प्रणाली।

समाज की जो अपेक्षाएं हैं-रोटी, कपड़ा, मकान, दवा, शिक्षा आदि, वे सब अर्थ के अधीन हैं। अर्थाधीन व्यवस्था की पूर्ति की अपेक्षा आध्यात्मिकता से की जाए, यह मूल में भूल है। इसी प्रकार आध्यात्मिकता से होने वाले सामाजिक लाभ की अपेक्षा अर्थव्यवस्था से की जाए, वह भी मूल में भूल है। हमें हर वस्तु का मूल्यांकन उसके वास्तविक अस्तित्व के आधार पर करना चाहिए।

आध्यात्मिकता क्यों?

आर्थिक विकास और व्यवस्था होने पर भी आज का सम्पन्न मनुष्य उतना ही अर्थ-लोलुप है, जितना पहले था।

वैज्ञानिक विकास अपने चरम शिखर पर है, फिर भी आज का विज्ञान-जीवी मनुष्य उतना ही आक्रामक है, जितना पहले था।

आर्थिक, वैज्ञानिक और शैक्षणिक विकास ने मनुष्य के व्यवहार को बदला है पर उसी को बदला है, जो उनसे संबंधित है। मनुष्य में ऐसी अनेक मूल प्रवृत्तियां हैं, जिन्हें ये नहीं बदल सकते। क्रोध, अभिमान,

www.terapanthinfo.com

कपट, लोभ, भय, शोक, घृणा, काम-वासना, कलह-ये मनुष्य की शाश्वत मूल प्रवृत्तियां हैं। आर्थिक अभाव तथा अज्ञान के कारण जो सामाजिक दोष उत्पन्न होते हैं, वे आर्थिक और शैक्षणिक विकास से मिट जाते हैं किंतु मूल प्रवृत्तियों से उत्पन्न होने वाले दोष उनसे नहीं मिटते। मूल प्रवृत्तियों का नियंत्रण या शोधन आध्यात्मिकता से ही हो सकता है, इसलिए समाज में उसका अस्तित्व अनिवार्य है।

आध्यात्मिकता से भले ही समाज का रूप परिवर्तन न हुआ हो, किंतु उससे सत्य के प्रति आस्था की सृष्टि हुई है। चरित्र और नैतिकता के प्रति जो आस्था है, वह आध्यात्मिकता का ही प्रतिफलन है। आध्यात्मिकता का अंकन संख्या से मत करिए। उसका अंकन गुण-मात्रा से करिए। यह देखिए वे लोग कैसे हैं, जिनमें आध्यात्मिक विकास हुआ है।

अध्यात्म का व्यावहारिक रूप

जिन विचारधाराओं ने मनुष्य को भौतिक इकाइयों में विभक्त किया है, वे सब काल्पनिक और सामयिक हैं। आध्यात्मिकता का प्रतिबिम्ब मानवीय विभक्ति नहीं किंतु एकता है। उसके अनुसार भौगोलिक, जातीय, सांप्रदायिक, भाषायी-ये भेद अस्वाभाविक हैं, एकता स्वाभाविक है।

आध्यात्मिक व्यवहार की स्वीकृति के मुख्य अंग हैं 1. मानवीय एकता में विश्वास 2. मानवीय स्वतंत्रता में विश्वास 3. विश्व-शांति एवं विश्व-मैत्री में विश्वास 4. सह-अस्तित्व में विश्वास 5. सत्य में विश्वास 6. प्रामाणिकता में विश्वास 7. निश्छल व्यवहार में विश्वास 8. पवित्रता में विश्वास 9. संग्रह की सीमा में विश्वास। ये विश्वास धर्म के मूलभूत सिद्धांतों में आस्था को प्रकट करते हैं। प्रथम चार विश्वास अहिंसा अणुव्रत के फलित हैं। पाँचवां सत्य, छठा-सातवां अचौर्य, आठवां ब्रह्मचर्य और नवां अपरिग्रह का फलित है। व्यवहार में अध्यात्म का प्रतिपालन जीवन की महान् सफलता है। इससे व्यक्ति और समाज दोनों लाभान्वित होते हैं।

ज्ञान से अगला चरण

ज्ञान में बहुत विश्वास है और किया जाता है पर उस ज्ञान में सफलता का विश्वास नहीं किया जा सकता, जो साधना शून्य है। अणुव्रत-आंदोलन ज्ञान का आंदोलन नहीं है, वह साधना का आंदोलन है। इसमें ज्ञान की अपेक्षा नहीं है, ऐसा नहीं है। किंतु इसमें साधना की प्रधानता है। ऐसे अनेक लोग हैं, जो बुराई को जानते हैं पर छोड़ नहीं पाते। बुराई को बुराई न जानने वाला उसे न छोड़े, वह अज्ञान है। पर बुराई को बुराई मानने वाला उसे न छोड़े, वह कुछ और है। इससे फलित होता है कि बुराई कोरे ज्ञान से नहीं छूटती। उसे छोड़ने के लिए कुछ और भी अपेक्षित है। वह है साधना। साधना अर्थात् ज्ञान को अभ्यास की आँच में पकाना और उतना पकाना, जिससे जानने और करने के बीच की दूरी मिट जाए। आत्म-चिंतन, ध्यान और मैत्री का अभ्यास यह अणुव्रत की साधना है। इससे गृहीत व्रत सिद्ध होते हैं, सुख और शांति के प्रति काल्पनिक मान्यता वास्तविकता में बदल जाती है।

संयम का अर्थ

मनुष्य अपूर्ण है। अपूर्ण इस अर्थ में है कि वह अपेक्षाओं से घिरा हुआ है। उसके शरीर है, इसलिए उसे खाने-पीने की अपेक्षा है। उसके वाणी है, इसलिए उसे समाज की अपेक्षा है। उसके मन है, इसलिए उसे मान-सम्मान एवं पूजा-प्रतिष्ठा की अपेक्षा है। एक मनुष्य, हजारों अपेक्षाएं। वे पूरी होती हैं बाह्य जगत से। वह बाह्य जगत् से लेता है और अपने में भरता है। यह आदान उसकी व्यक्तिगत सीमा को तोड़ उसे सामाजिक बना देता है। व्यक्ति यदि निरपेक्ष होता, बाहर से कुछ भी लेना अपेक्षित नहीं होता तो वह व्यक्ति ही होता है। किंतु ऐसा नहीं है, इसीलिए वह व्यक्ति और सामाजिक दोनों रूपों में अवस्थित है।

समाज की शृंखला अपेक्षा है और वही हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह का उद्गम-हेतु है। पूर्णता की ओर बढ़ने का मार्ग है अपेक्षाओं का संयम। अपेक्षाओं के संयम का अर्थ है हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह का संयम।

संयम का अर्थ है उस व्यक्तित्व का विकास, जो बाह्य से निरपेक्ष होकर अपने आपमें परिपूर्ण, संतुष्ट और परितृप्त है।

संयम का अर्थ है उस व्यक्तित्व का विनाश, जो बाह्य से अधिक सम्बद्ध होकर अपने आपमें अपूर्ण, असंतुष्ट और अतृप्त रहता है।

निरपेक्षता की स्थिति ध्यान की उत्कृष्ट साधना के द्वारा प्राप्त हो सकती है। अति-सापेक्षता की स्थिति ध्यान की साधना से शून्य व्यक्ति में होती है। तीसरी स्थिति ध्यान की मध्यम साधना से प्राप्त हो सकती है। उसमें अपेक्षाएं रहती हैं पर निरंकुशता नहीं। उनकी पूर्ति का प्रयत्न किया जाता है, पर येन- केन-प्रकारेण नहीं। इस संस्कार-धारा में हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह की प्रवृत्ति सीमित हो जाती है। यही 'अणुव्रत' है। ध्यान की मध्यम-साधना के द्वारा अपेक्षाओं का परिसीमन और फलतः हिंसा आदि का परिसीमन ही 'अणुव्रत' है।

नैतिकता के बिना अहिंसा सिद्ध नहीं हो सकती और अहिंसा के बिना नैतिकता प्रतिष्ठापित नहीं हो सकती। अणुव्रत का अर्थ नैतिकता है।

www.terapanthinfo.com

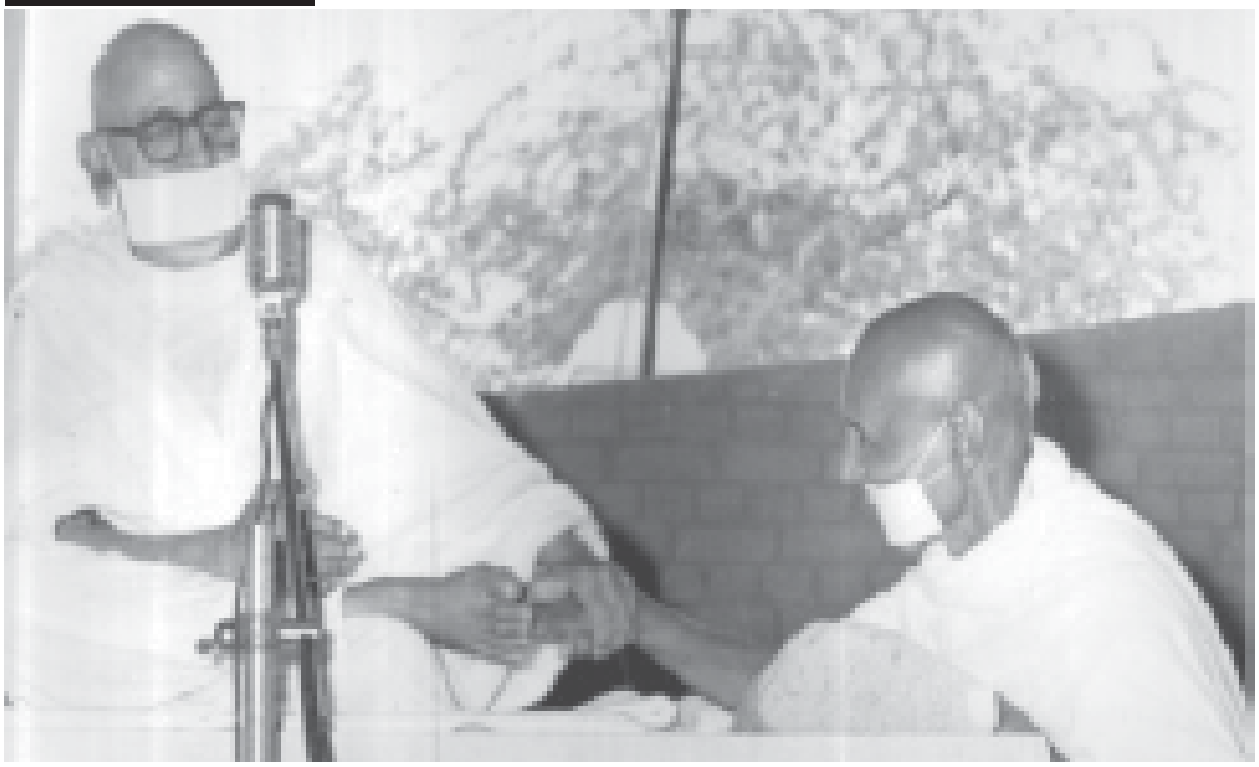

महाप्रज्ञ का समर्पण भाव

आचार्य तुलसी

दृष्टि वह पारदर्शी स्फटिक है, जिसके सामने से गुजरने वाला हर व्यक्ति अपना प्रतिबिम्ब वहां छोड़ देता है। बार-बार छोड़े गए बहुरूपी प्रतिबिम्ब एक रंग-बिरंगे गुलदस्ते के रूप में स्थिर हो जाते हैं और उनके आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का स्वाभाविक विश्लेषण होता रहता है। युवाचार्य महाप्रज्ञ का व्यक्तित्व भी मेरी दृष्टि पर इस प्रकार से अंकित हो चुका है, जिससे लगभग पाँच दशकों के संस्मरण अपनी व्यापक प्रस्तुति के लिए उतावले हो रहे हैं। उन सबका व्यक्तिकरण या लिपिकरण न तो सम्भव है और न अपेक्षित ही है। फिर भी मेरे मन में जिस स्थिति की अमिट छाप है, वह है 'अचिन्तित रूपान्तरण।' एक व्यक्ति अपने समर्पण, अपने संकल्प और अपनी साधना से कितना बदल जाता है और कहां से कहां पहुँच जाता है, इसका प्रत्यक्ष निदर्शन है हमारे युवाचार्य महाप्रज्ञ, जिनकी इस यात्रा का प्रारम्भ मुनि नथमल के रूप में होता है।

मुनि की भूमिका

वि.सं. 1987, शीतकाल का समय, मर्यादा-महोत्सव का उल्लास और माघ शुक्ला दशमी का दिन। स्वर्गीय गुरुदेव पूज्य कालूगणीजी ने एक साढ़े दस वर्षीय बालक नथमल को दीक्षित कर मुझे सौंप दिया। यह सौंपना एक शैक्ष मुनि को साधु-जीवन का प्रारम्भिक अवबोध कराने या अध्ययन कराने की दृष्टि से ही नहीं था, इसमें निहित थी जीवन के सर्वांगीण विकास की सम्भावनाओं को उभार देने की एक व्यापक दृष्टि। उस दिन से लेकर अब तक मुनि नथमलजी एक समर्पित शिष्य के रूप में मेरे पास रहे और मैं भी उनके सर्वात्मना समर्पित जीवन के रेखाचित्र में अपेक्षित रंग भरता रहा। मुनि नथमलजी की ग्रहणशीलता और मेरी सृजनधर्मिता के अन्योन्याश्रित संयोग ने उनको युवाचार्य महाप्रज्ञ की भूमिका तक पहुँचा दिया, जिसकी मैंने उस समय कोई कल्पना ही नहीं की थी।

कालूगणी की कृपा

महाप्रज्ञ अपने मुनि जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में बहुत भोले थे। इन्होंने अपने खाने-पीने, घूमने-फिरने, बैठने-सोने, पहनने-ओढ़ने आदि के सम्बन्ध में कभी सोचने-विचारने का प्रयत्न ही नहीं किया। मैं जो कुछ कहता, उसे ये सहजभाव से कर लेते। भोजन कब करना है और क्या करना है? इस दैनांदिन कार्य में ये मेरे निर्देश की प्रतीक्षा करते रहते। वस्त्र कब सिलाने हैं और कब पहनने हैं, यह काम भी ये अपने आप नहीं करते थे। शीतकाल में स्वाध्याय करते-करते बिना ही वस्त्र ओढ़े तब तक सोते रहते, जब तक मैं इन्हें

www.terapanthinfo.com

जगाकर वस्त्र ठीक ढंग से ओढाकर नहीं सुला देता। इनकी गति भी विलक्षण थी। कालूगणी बहुत बार इन्हें अपने सामने दस-बीस कदम चलने के लिए कहते और जब ये टेढे-मेढे कदम भरते हुए गुरुदेव के निकट से गुजरते तो आपको बड़ा अच्छा लगता। कालूगणी भोले-भाले मुनियों को बहुत वात्सल्य देते थे। महाप्रज्ञ उन भद्र मुनियों की पंक्ति में थे, जिन्हें गुरुदेव का अतिशायी स्नेह प्राप्त था। इन्हें वे बंगू, शंभू, वल्कलचीरी, हाबू या नाथू कहकर पुकारते थे।

स्थितिपालकता

महाप्रज्ञ ने अपने सहपाठी मुनि बुधमलजी के साथ मेरे पास अध्ययन शुरू किया। इनके अध्ययन के प्रारम्भिक क्रम में मैं स्वयं इनके साथ बैठता और आधा-आधा घण्टा तक इनके साथ-साथ पद्यों का उच्चारण करता था। ऐसा करने का मेरा एक ही उद्देश्य था कि इनका उच्चारण अशुद्ध न रहे। याद करने की क्षमता इसमें शुरू से ही ठीक थी, पर उस समय समझ विकसित नहीं थी। बुधमलजी इनसे अच्छा समझते थे। मेरे मन में कई बार आता था कि ये छोटी-छोटी बात को ही नहीं समझते हैं तो आगे जाकर क्या करेंगे? मैं बहुत बार इन्हें समझाने का प्रयत्न करता पर सफलता नहीं मिली। तीन साल तक ये मुझे बराबर असफल करते रहे।

अप्रत्याशित बदलाव

महाप्रज्ञ की दीक्षा के तीन-चार साल बाद कालूगणी जोधपुर की यात्रा पर थे। वहां इनकी आंखें बहुत अधिक खराब हो गईं। पहले भी आंखों की पीड़ा कई बार हो जाती थी। कभी आँखों में दाने हो जाते, कभी आंखे दुःखने लगती, कभी कुछ और हो जाता। इनकी आंखें ठीक करने के लिए मैंने बहुत प्रयत्न किए। कभी पिप्पली, कभी नींबू का रस, कभी शहद तो कभी कुछ, पर विशेष लाभ नहीं हुआ। उस समय गर्मी का मौसम था। कालूगणी को जसोल, बालोतरा आदि क्षेत्रों की ओर जाना था। मैंने गुरुदेव से निवेदन किया नथमलजी की आंखें बहुत दुःख रही हैं, इन्हें यहीं छोड़ दिया जाए तो ठीक रहेगा। कालूगणी ने इनको वहां मुनि हेमराजजी के पास छोड़ दिया। जोधपुर कालूगणी वापस पधारे तब तक ढाई महीनों का समय लग गया। यह समय इनके जीवन में एक बहुत बड़े रूपान्तरण का समय था। वह क्षेत्र परिपाकी क्षयोपशम था या अवस्था परिपाकी क्षयोपशम, कुछ कहा नहीं जा सकता। पर जब हम आए तो वे हमें सर्वथा बदले हुए मिले। यह बदलाव बाहर और भीतर दोनों ओर से घटित हुआ था। उस ढाई मास के छोटे से काल में इनकी समझ काफी विकसित हो गई। जो कुछ पहले का सीखा हुआ था, उसे पक्का, शुद्ध और व्यवस्थित कर लिया गया। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि ये एक अबोध शिशु की भूमिका से ऊपर उठकर आत्म-बोध की भूमिका तक पहुँच गए थे।

मेरी शाला के प्रथम छात्र

नथमलजी, बुधमलजी आदि मेरी छोटी-सी पाठशाला के प्रथम छात्र थे। धीरे-धीरे छात्रों की संख्या में वृद्धि होती रही। कई मुनि उस क्रम में आए और चले गए पर महाप्रज्ञ बराबर बने रहे। उस समय इनके बारे में मेरी यह कल्पना नहीं थी कि इनमें कोई विलक्षणता है। उस समय न तो इनमें प्रतिभा का इतना निखार था और न ही इनके बारे में ऐसी कोई सम्भावना थी। मेरे मन पर इनकी किसी बात का कोई प्रभाव था तो वह था इनका सहज समर्पण। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि इनके निर्माण में इनके अपने समर्पण का स्थान सर्वोपरि रहा है। जैसा कहें वैसा करना, इस एक सूत्र ने इनको विकास की दिशा में अग्रसर किया। जोधपुर चातुर्मास के बाद मुझे भी इनसे कुछ आशा बंधी, जो उदयपुर और गंगापुर इन दो चातुर्मासों में फलित होती हुई सामने आई।

गंगापुर-चातुर्मास के प्रारम्भ तक ये अविच्छिन्न रूप से मेरे पास रहे। उसके बाद पूज्य गुरूदेव कालूगणी का स्वर्गवास होने के बाद मेरी स्थिति बदल गई। अब ये सेवाभावीजी की देखरेख में रहने लगे। वे इनकी संभाल पूरी करते थे, फिर भी ये अनमने-से हो गए। इन्हें अकेलापन-सा अनुभव होने लगा। इस कारण सहज ही ये उदास रहने लगे। मैंने एक दिन इनको अपने पास बुलाकर पूछा- तुम उदास क्यों हो? ये बोले मेरा मन नहीं लगता। मैंने इन्हें आश्वस्त करते हुए कहा कि तुम मेरे पास आया करो और अपने अध्ययन के क्रम को चालू रखो। इसके बाद मैंने इनके विकास की दृष्टि से एक विशेष लक्ष्य बनाया और समय-समय पर इन्हें प्रेरणा देता रहा।

शिक्षा में नये आयाम

कालूगणी के स्वर्गवास के बाद बीकानेर-चातुर्मास में मैंने दर्शन और संस्कृत काव्य-साहित्य का विशेष अध्ययन शुरू किया। हम लोग (मैं, मुनि धनराजजी, मुनि चन्दनमलजी आदि) पण्डित रघुनन्दनजी शर्मा के पास अपना अध्ययन चलाते। भाषा और व्याकरण की दृष्टि से पंडितजी का ज्ञान विशिष्ट था, पर सैद्धान्तिक और दार्शनिक परिभाषाओं में वे रुक जाते। वहां हम लोग अपनी जानकारी का उपयोग करते। इस प्रकार एक मिले-जुले प्रयत्न से हमारी, दर्शन के संस्कृत-ग्रंथों (प्रमाण, नय-तत्त्व, लोकालंकार आदि) की यात्रा निर्बाध रूप से चल रही थी। उस समय मैंने महाप्रज्ञ आदि से कहा कि तुम भी अध्ययन के समय साथ रहो। कुछ समझ में आए या न आए सुनते रहो सुनते-सुनते एक क्रम बन गया।

वि.सं. 2001 का हमारा चातुर्मास सुजानगढ़ था, उस समय मेरे मन में आया कि हमारे धर्मसंघ में इतनी साधु-साध्वियां हैं, इनमें कोई भी उच्चकोटि का चिन्तक, लेखक और वक्ता नहीं है। काश! हमारे साधु-साध्वियां भी हिन्दी में बोल और लिख सकते। इसी बीच शुभकरण दसानी ने मुझे बताया कि कुछ मुनि हिन्दी में बहुत अच्छा लिखते हैं कविताएं भी, निबन्ध भी, पर आपसे संकोच करते हैं, इसलिए बताते नहीं। उनमें महाप्रज्ञ भी एक थे। मैंने इनकी कविताओं को देखा, निबन्धों को पढ़ा,

www.terapanthinfo.com

प्रसन्नता हुई। इसके बाद समय-समय पर संस्कृत, हिन्दी और प्राकृत-भाषा में बोलने, लिखने, श्लोक बनाने का अभ्यास चलता रहा। यथा-समय प्रतियोगिताओं का आयोजन, प्रोत्साहन और प्रेरणा ने थोड़े समय में अकल्पित सफलता का द्वार खोल दिया।

वि.सं. 2002 राजगढ़ चातुर्मास में एक विद्वान व्यक्ति सम्पर्क में आया। उसने तेरापंथ के बारे में साहित्य देखना चाहा। उस समय तक साहित्य-लेखन की कोई बात ध्यान में नहीं थी। छोगमल चोपड़ा द्वारा लिखित तेरापंथ की शार्ट हिस्ट्री नामक छोटी-सी पुस्तक हमारे धर्मसंघ का साहित्य था। मुझे एक अभाव महसूस हुआ। मैंने उसी समय इनको बुलाकर कुछ ट्रैक्ट तैयार करने के लिए कहा। उन्नीसवीं सदी का नया आविष्कार, धर्म और लोक व्यवहार, अहिंसा आदि कुछ ट्रैक्ट तैयार हुए, मन को थोड़ा सन्तोष मिला।

वि.सं. 2003 श्रीडूंगरगढ़ चातुर्मास में धर्मदेव विद्यावाचस्पति दिल्ली से दर्शन करने आए थे। वे एक अच्छे वक्ता थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में संस्कृत श्लोकों का धारावाहिक और प्रभावशाली उपयोग किया, मुझे अच्छा लगा। मैंने उसी दिन महाप्रज्ञजी आदि कुछ संतों को बुलाकर वक्तृत्व-कला के विकास तथा संस्कृत में धाराप्रवाह बोलने के लिए निरंतर अभ्यास करने का संकल्प करा दिया। अभ्यास इतना व्यवस्थित और परिपक्व हुआ कि जिसकी मुझे आशा नहीं थी।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि वि.सं. 2006 तक महाप्रज्ञ इस रूप में तैयार हो गए कि हर क्षेत्र में ये मेरे सहयोगी बन गए। एक ओर ये मेरे चिन्तन के सफल भाष्यकार थे तो दूसरी ओर ये मेरे हर स्वप्न को आधार देने के लिए कटिबद्ध हो गए। यद्यपि किसी नए कार्य को प्रारम्भ करने में ये हिचकिचाते थे, किन्तु मेरे द्वारा प्रारब्ध-कार्य को परिसम्पन्नता तक पहुँचाना इनकी सहज प्रवृत्ति हो गई थी।

बीज का विस्तार

मेरे युग तक पहुँचते-पहुँचते अठारह-उन्नीस दशकों की लम्बी अवधि पार करने पर भी तेरापंथ के सिद्धान्त लोगों के गले नहीं उतर रहे थे। मैंने पाया आचार्य भिक्षु का तत्त्व-चिन्तन मौलिक है। उनकी प्रारूपणा विलक्षण है। लोगों ने अब तक भी उसकी गहराई तक पहुँचने का प्रयास नहीं किया है। यही कारण है कि वे तेरापंथ की सैद्धान्तिक मान्यताओं का विरोध कर रहे हैं। यदि हम उन मान्यताओं को युगीन सन्दर्भ में प्रस्तुत कर सकें तो विरोधी वातावरण को ठीक करने में जो शक्ति और समय लगता है, उसका उपयोग किसी रचनात्मक काम में हो सकता है। मैंने अपने चिन्तन के बीज महाप्रज्ञ के सामने विकीर्ण कर दिए। उसके बाद इन्होंने उन बीजों को विस्तार दिया। भिक्षु-विचार-दर्शन तैयार होकर आ गया। प्रबुद्ध लोगों की धारणाएँ बदलीं। धीरे-धीरे विरोध का कुहरा छँट गया और सत्य का सूरज दुगुने तेज से दमकने लगा।

अणुव्रत आन्दोलन को लेकर भी समाज में एक तूफान खड़ा हो गया था। इसकी क्या जरूरत है? अणुव्रत के नाम पर मिथ्यादृष्टि को सम्यकदृष्टि बनाया जा रहा है, सन्त किसी आन्दोलन के प्रवर्तक नहीं हो सकते आदि अनेक मुद्दों को लेकर एक हलचल हुई थी। नए मोड़ को लेकर भी काफी बवंडर हुआ। उस सन्दर्भ में मैंने अपने विचार इनको बता दिए। इन्होंने उन विचारों के साथ सैद्धान्तिक सामंजस्य स्थापित कर उन्हें संतुलित रूप में प्रस्तुत कर दिया। प्रसंग अणुव्रत का हो या अन्य किसी सिद्धान्त का, उसे तुलनात्मक दृष्टि से, व्यावहारिक दृष्टि से और सैद्धान्तिक दृष्टि से विस्तृत विवेचन के साथ प्रतिपादित कर उसका औचित्य सिद्ध कर देते। इसके बाद हमारे धर्मसंघ में जितने परिवर्तन हुए, प्राचीन धारणाओं में जितना परिमार्जन हुआ, उन सबमें ये मेरे पूरे सहयोगी रहे। किसी भी परिस्थिति में मैंने इनको अपने विचारों से प्रतिकूल होते हुए नहीं देखा।

नथमलजी, बुधमलजी आदि मेरी छोटी-सी पाठशाला के प्रथम छात्र थे। धीरे-धीरे छात्रों की संख्या में वृद्धि होती रही। कई मुनि उस क्रम में आए और चले गए पर महाप्रज्ञ बराबर बने रहे। उस समय इनके बारे में मेरी यह कल्पना नहीं थी कि इनमें कोई विलक्षणता है। उस समय न तो इनमें प्रतिभा का इतना निखार था और न ही इनके बारे में ऐसी कोई सम्भावना थी। मेरे मन पर इनकी किसी बात का कोई प्रभाव था तो वह था इनका सहज समर्पण।

मेरे स्वप्न साकार हुए

मैं एक स्वप्नद्रष्टा हूं। मेरे ये स्वप्न रात को नींद में नहीं आते। मैं जागृत अवस्था में सपने देखता हूं। दिन हो या रात, जब भी अवकाश मिलता है, मैं नई कल्पनाएँ करता हूं और इन्हें साकार करने के लिए महाप्रज्ञ को आमंत्रित कर लेता हूं। मेरी ये कल्पनाएँ शिक्षा, साहित्य, शोध आदि अनेक विषयों से सम्बन्धित हैं। मैं यहां कुछ कल्पनाओं को उल्लिखित कर रहा हूं।

वि.सं. 2007 की बात है। उस समय तक हमारे धर्म-संघ में एक लेख- पत्र पर प्रत्येक साधु को प्रतिदिन हस्ताक्षर करने होते थे। लेख-पत्र की धाराएँ बहुत उपयोगी थीं, पर वे थीं ठेठ राजस्थानी भाषा में। भाषा युगानुरूप नहीं थी। अतः उस लेखपत्र को भाषान्तरित करने की बात सूझी और वह काम इनको सौंप दिया। प्रश्न उठा कि लेख-पत्र को बदलने का क्या उद्देश्य है? उद्देश्य स्पष्ट था, उसे सन्तों को बताकर पहले संस्कृत-भाषा में लेख-पत्र का रूपान्तरण हुआ। बाद में उसे हिन्दी में कर दिया और हस्ताक्षर करने के स्थान पर प्रतिदिन

www.terapanthinfo.com

प्रातःकाल उसका प्रत्यावर्तन करने का क्रम स्थिर कर दिया।

सामयिक साहित्य-सृजन के साथ मैंने सैद्धान्तिक एवं दार्शनिक साहित्य- निर्माण की अपेक्षा अनुभव की। मैंने इनके सामने अपने मत की बात रखी। इन्होंने मेरी अनुभूति को अधिक तीव्रता से अनुभव किया और काम शुरू हो गया। मैं लिखाता गया और ये लिखते गए। लिखने के बाद उसे विस्तृत और व्यवस्थित कर दिया। जैन-सिद्धान्त-दीपिका और भिक्षु-न्याय-कर्णिका, ये दो ग्रन्थ तैयार हो गए।

वि.सं. 2005 तक हमारे साधु-साध्वियों के अध्ययन हेतु कोई पाठ्यक्रम नहीं था। रूस की एक पत्रिका में मैंने वहाँ का पाठ्यक्रम देखा और तत्काल इन्हें बुलाकर कहा अपने यहाँ भी कोई निश्चित पाठ्यक्रम होना चाहिए। मेरा संकेत इनके लिए आलम्बन था। कुछ ही समय में व्यवस्थित पाठ्यक्रम तैयार हो गया और साधु-साध्वियों ने उसके आधार पर अध्ययन शुरू कर दिया। समय-समय पर अपेक्षित संशोधन के लिए स्तरीय शिक्षा का क्रम चल पड़ा जो अब तक चल रहा है।

महाराष्ट्र के मंछर गाँव में आहार के बाद धर्मदूत नामक पत्र के पन्ने पलट रहा था। सहसा मेरा ध्यान केन्द्रित हो गया। वहां बौद्ध-पिटकों के संपादन की सूचना थी। एक क्षण का विलम्ब किए बिना मैंने इनको बुला लिया और पत्र का उल्लेख करते हुए कहा क्या हम भी जैन-आगमों का सम्पादन नहीं कर सकते? नहीं क्यों? आपकी कृपा से सब कुछ कर सकते है। महाप्रज्ञ के एक वाक्य ने मुझे आश्वस्त कर दिया। फिर भी इनके धैर्य की थाह पाने के लिए मैंने कहा काम तो बहुत बड़ा है। कैसे हो सकेगा? बिना एक पल सोचे ये बोले ऐसी क्या बात है? आप जो चाहेंगे, वह काम हो जाएगा।

उस समय आगम-सम्पादन के कार्य का न तो हमें अनुभव था और न ही कोई विज्ञ व्यक्ति ही हमारे सामने था। हमने सोचा पाँच वर्ष में सारा काम हो जाएगा। उसी वर्ष काम शुरू भी कर दिया। काम करने का अनुभव जैसे-जैसे बढ़ा, हमें लगा

मैंने महाप्रज्ञ को जिस रूप में ढालना चाहा, ये ढलते गए। मैंने इनसे जो अपेक्षाएं कीं, ये पूरी करते गए। हमारे बीच में शिक्षक एवं विद्यार्थी का जो सम्बन्ध था, वह आगे जाकर गुरु-शिष्य के रूप में और फिर आगे चलकर अद्वैत रूप में स्थापित हो गया। अब मुझे ऐसा प्रतीत नहीं होता कि ये मुझसे भिन्न कोई व्यक्ति हैं। जब से मैंने इनमें अपना उत्तराधिकार नियोजित किया है, मैं इनमें अपना ही रूप देखता हूँ।

कि यह काम पाँच क्या पचास वर्षों में भी पूरा नहीं हो सकेगा। अब तो ऐसा लगता है कि काम की कोई सीमा है ही नहीं। जितना काम करते हैं, उससे अधिक काम की नई सम्भावनाएं खुलती रहती हैं। ऐसा होने पर भी इनको काम भार नहीं लग रहा है। बड़ी दत्तचित्तता से आगे बढ़ रहे हैं।

साधना के क्षेत्र में भी एक अभाव-सा महसूस हो रहा था। सतरह-अठारह वर्ष पूर्व मैंने इनके सामने चर्चा की- जैनों में कोई स्वतंत्र साधना-पद्धति नहीं है। भगवान् महावीर का जीवन, साधना का जीवन्त प्रतीक रहा है, किन्तु वर्तमान में कहीं भी उसका व्यवस्थित उल्लेख या प्रयोग नहीं है। क्या मैं आशा करूं कि साधना की इस अवरूद्ध धारा को हम आगे बढ़ा सकते हैं? उस दिन से एक लक्ष्य बना। अध्ययन और प्रयोग-प्रयोग और अध्ययन। निष्कर्ष के रूप में आज प्रेक्षाध्यान की पद्धति हमारे यहां प्रचलित हो गई।

इसके अलावा और भी अनेक घटनाएं है जो महाप्रज्ञ के समर्पण-भाव को उजागर करने वाली हैं। उन सबके आधार पर यही कहा जा सकता है कि मैंने इनको जिस रूप में ढालना चाहा, ये ढलते गए। मैंने इनसे जो अपेक्षाएं कीं, ये पूरी करते गए। हमारे बीच में शिक्षक एवं विद्यार्थी का जो सम्बन्ध था, वह आगे जाकर गुरु-शिष्य के रूप में और फिर आगे चलकर अद्वैत रूप में स्थापित हो गया। अब मुझे ऐसा प्रतीत नहीं होता कि ये मुझसे भिन्न कोई व्यक्ति हैं। जब से मैंने इनमें अपना उत्तराधिकार नियोजित किया है, मैं इनमें अपना ही रूप देखता हूँ। अपने ही प्रतिरूप को मैं प्रशस्ति की दृष्टि से देखूं, अपेक्षित नहीं लगता क्योंकि इनकी प्रशस्ति मेरा अपना आत्मख्यापन होगा। इस दृष्टि से कुछ तथ्यों की प्रस्तुति का काम पूरा कर मैं अपने अग्रिम स्वप्न संजोने में लग रहा हूं।

रचनाकाल : 1979

पारिवारिक जीवन के लिए दो शब्द बड़े महत्वपूर्ण हैं 1. आश्वास, 2. विश्वास। पारिवारिक जीवन का निर्माण इसीलिए किया गया कि हर परिस्थिति में व्यक्ति को यह आश्वासन प्राप्त है मैं अकेला नहीं हूं।

विश्वास के बिना जीवन-यात्रा नहीं चलती। सर्वाधिक विश्वास अपने परिवार पर किया जा सकता है।

आश्वास और विश्वास इन दोनों संकल्पों के आधार पर संयुक्त परिवार की व्यवस्था हुई।

संयुक्त परिवार का सुरक्षा कवच है सहिष्णुता। सहिष्णुता का प्राण है सापेक्षता। वर्तमान युग में सहिष्णुता सहन करने की शक्ति कम हो रही है। परस्परता या एक-दूसरे की अपेक्षा की अनुभूति कम हो रही है।

परिवार के साथ वे ही व्यक्ति रह सकते हैं अथवा संयुक्त परिवार को दीर्घजीवी वे ही बना सकते हैं जिनमें सहिष्णुता और सापेक्षता का भावात्मक विकास होता है। आज की अपेक्षा है शिक्षा, प्रशिक्षण और अभ्यास के द्वारा इन गुणों का अभ्यास किया जाए।

आचार्य महाप्रज्ञ

www.terapanthinfo.com

आचार्य महाप्रज्ञ एक संत थे। भारतीय संस्कृति में संत का बहुत ऊंचा स्थान रहा है। यहां तक कि एक वर्ष का संत भी एक नब्बे वर्ष के गृहस्थ के लिए वंदनीय होता है। गुरुदेव महाप्रज्ञ एक सामान्य सन्त नहीं, एक विशिष्ट सन्त, गुरु और मार्गदर्शक थे। वे उनहत्तर वर्षों से संतत्व की साधना कर रहे थे। उन्होंने संयम की विशिष्ट आराधना की।

आचार्य महाप्रज्ञ

आचार्य महाश्रमण

मनुष्य के जीवन का एक आधार है आहार। उसके बिना आदमी सामान्यतया लम्बे समय तक जीवित नहीं रह सकता। भोजन शरीर के लिए आवश्यक है, किन्तु अभोजन उससे कहीं ज्यादा आवश्यक है और यों कहना चाहिए कि भोजन और अभोजन का विवेक महत्त्वपूर्ण है। खाना कोई बड़ी बात नहीं, नहीं खाना कोई बड़ी बात नहीं, खाने और न खाने का विवेक बड़ी बात है। महाप्रज्ञ के जीवन में अनाहार (उपवास आदि) तपस्या की लम्बी सूची नहीं है। उन्होंने उपवास के अतिरिक्त एक बेला विक्रम संवत् 1987 में टमकोर में मुनि छबीलजी (सुधरी) के चातुर्मास में किया और उस समय दो दिन वे 'ठिकाणे' में ही रहे। एक तेला विक्रम संवत् 1996 में बीदासर में पचरंगी के उपक्रम में किया। पहले एक वर्ष में तीन उपवास किया करते थे, आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को, कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी को और संवत्सरी को। फिर वर्ष में दो उपवास होने लगे और इन वर्षों में वर्ष में एक ही उपवास होता था और वह भी संवत्सरी के दिन। परन्तु आचार्य महाप्रज्ञ का ऊनोदरी तप प्रशस्त था।

विक्रम संवत् 2035 गंगाशहर चातुर्मास से रविवार को प्रायः नमक-वर्जन करते थे। मावे की व तली हुई वस्तुओं का लम्बे समय से परिहार रखते थे। मिठाई भी वर्षों से लगभग वर्जित थी।

महाप्रज्ञ की दिनचर्या

मुझे स्मरण हो रहा है, मैं महाश्रमण बन चुका था। एक दिन गुरुदेव तुलसी जैन विश्वभारती, लाडनूं के 'भिक्षु विहार' में टहल रहे थे। मैं पास में था। उस समय गुरुदेव तुलसी ने जो फरमाया, उसका भाव यह है 'महाप्रज्ञजी की जीवनशैली अच्छी है। सोने-जागने का क्रम निश्चित है। तुम्हें भी अपनी जीवनशैली अच्छी रखनी है।' गुरुदेव तुलसी सोने में बहुधा देरी करते थे परन्तु गुरुदेव महाप्रज्ञ प्रायः सोने में देरी नहीं करते। प्रायः चार बजे जागते थे। कुछ समय तक ध्यान आदि का प्रयोग करते थे, फिर साधुओं की सामूहिक उपस्थिति में स्वाध्याय, अर्हत् वन्दना का क्रम चलता था। फिर प्रतिक्रमण, प्रतिलेखन करते थे। फिर दर्शनार्थ समागत लोगों व साध्वियों के लिए उपलब्ध रहते। इस प्रकार सूर्योदय से दस-बीस मिनट (कभी कम-ज्यादा भी) बाद तक का समय बीत जाता था। फिर देह-चिन्ता से निवृत्त होकर आसन आदि करते, कुछ प्रातराश लेते। उसके बाद लेखन-पठन में संलग्न हो जाते। बीच-बीच में दर्शनार्थी लोग भी आते-जाते रहते। उसके बाद कुछ समय विश्राम कर प्रवचन सभा में पधारते और प्रवचन करते। तत्पश्चात् प्रवास-स्थल पर पधार जाते। लगभग पौन घण्टा/एक घण्टा लोगों से मिलन, संघीय व्यवस्थाओं का चिंतन और कभी कुछ लेखन कार्य भी चलता था। फिर मध्याह्नकालीन भोजन लेते, तत्पश्चात् समाचार-पत्र पठन और फिर विश्राम करते थे।

लगभग दो बजे से चार बजे तक ग्रन्थ लेखन, सम्पादन आदि का कार्य चलता था। तत्पश्चात् प्रतिलेखन, देह-चिन्ता निवृत्ति व भोजन कार्य होता था। फिर कुछ ग्रन्थ-निर्माण तथा व्यक्तिगत साधना चलती। सूर्यास्त के बाद प्रतिक्रमण होता। उसके बाद फिर कुछ देर लोगों का मिलने का क्रम चलता था। फिर अर्हत् वन्दना होती। तत्पश्चात् कभी संगोष्ठियां, संघीय व्यवस्था पर चिंतन चलता। लगभग नौ बजे से चार बजे तक प्रायः विश्राम करते थे।

सायंकाल चार या साढ़े चार बजे से तीन घंटे तक प्रायः मौन रहता था। उस समय सहज विश्राम और एकांतवास भी हो जाता। यह मोटी-मोटी दिनचर्या थी। ऋतु, परिस्थिति के आधार पर कुछ परिवर्तन भी होता था। पिछले दो-तीन वर्षों से विश्राम कुछ बढ़ गया। प्रवचन भी प्रतिदिन नहीं करते, कभी-कभी करते। शरीर में कभी वायुविकार हो जाता, उससे असाता भी हो जाती। शरीर कुछ दौर्बल्य को भी प्राप्त हो गया था।

महाप्रज्ञ की प्रवचन-शैली

पिछले कई वर्षों से आचार्य महाप्रज्ञ के प्रवचन के समय प्रायः पास ही बैठता था। मेरा अनुभव है कि उनका प्रवचन काफी सरल और सरस होता था। कुछ वर्षों से उनके प्रवचन संस्कार चैनल द्वारा प्रसारित किए जा रहे थे। उससे न जाने कितने लोगों को उनके प्रवचन को सुनने और उनके प्रतिबिम्ब को साक्षात् देखने का मौका मिल जाता। टेलीविजन में प्रवचनों का प्रसारण होने से दूरस्थ लोगों के लिए भी वह सुलभ हो गया। आचार्य महाप्रज्ञ की प्रवचन-शैली की वस्तुस्थिति मेरी दृष्टि में यह है

- उच्चारण शुद्ध और स्पष्ट था।
- भाषा में सहज माधुर्य था।
- भाषा में आरोह-अवरोह प्रायः नहीं होता।

www.terapanthinfo.com

● छोटी-छोटी कहानियों, घटनाओं का प्रयोग प्रचुरता से होता था।

● परिषद् के अनुरूप सामग्री प्रदान की जाती थी।

● शब्दोच्चार में प्रायः ज्यादा जल्दबाजी नहीं होती।

● वर्तमान युग की समस्याओं पर भी श्रोताओं का ध्यान आकृष्ट किया जाता था।

● समस्याओं के संदर्भ में धर्म की उपयोगिता प्रस्तुत की जाती।

● भाषण की सम्पन्नता से पूर्व प्रायः सम्पन्नता की निकटता सूचित हो जाती थी।

● प्रवचन बौद्धिक लोगों को भी खुराक देने वाला होता तो साधारण जनता को भी पोषण देने वाला होता था।

व्याख्यान का एक अंग है संगीत। मधुर कण्ठ और लय का अभ्यास रखने वाला व्यक्ति संगीत-प्रिय जनता को अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है। गुरुदेव महाप्रज्ञ ज्यादा नहीं गाते थे। परन्तु उनके कण्ठ में माधुर्य था। कभी-कभी जब गाते थे, उसमें रसवत्ता प्रतीत होती थी।

प्रतिष्ठित व्यक्तित्व

आचार्य महाप्रज्ञ हिन्दुस्तान के एक सम्माननीय एवं प्रतिष्ठित व्यक्तित्व बन चुके हैं। मेरी दृष्टि में उसके चार प्रमुख कारण थे

अवस्था ज्येष्ठत्व

आचार्य महाप्रज्ञ ने नब्बे वर्ष का आयुष्य प्राप्त किया। हमारी भारतीय परम्परा में अवस्था ज्येष्ठत्व भी एक सम्मान का आधार माना जाता है। भारत में धर्मगुरुओं, साहित्यकारों, राजनेताओं में बहुत से व्यक्तियों से वे अवस्था ज्येष्ठ थे।

विशिष्ट संतत्व

भारतीय संस्कृति में संत का बहुत ऊंचा स्थान रहा है। यहां तक कि एक वर्ष का संत भी एक नब्बे वर्ष के गृहस्थ के लिए वंदनीय होता है। आचार्य महाप्रज्ञ एक सामान्य सन्त नहीं, एक विशिष्ट सन्त और सन्तों के भी गुरु, मार्गदर्शक थे। वे उनहत्तर वर्षों से संतत्व की साधना कर रहे थे। उन्होंने संयम की विशिष्ट आराधना की।

कुशल नेतृत्व

आचार्य महाप्रज्ञ एक प्रसिद्ध धर्मगुरु थे। 9 मई 2010 के दिन एक सौ पचपन संत, पांच सौ सोलह साध्वियां, दो समण और एक सौ पांच समणियां तथा लाखों अनुयायी। इसके अलावा बहुत-से इतर तेरापंथी और अजैन लोग भी महाप्रज्ञजी के मिशन के साथ जुड़े हुए थे। इतना विशाल समुदाय एक आचार्य के नेतृत्व में था।

ज्ञान वृद्धत्व

आचार्य महाप्रज्ञ ने ज्ञान की जो आराधना की, वैदुष्य की जिस ऊंचाई का स्पर्श किया, वह भी प्रतिष्ठित व्यक्तित्व का एक कारण बना है। उनके द्वारा सैकड़ों पुस्तकों का निर्माण हुआ। उन्होंने जैन आगमों को सम्पादित कर आधुनिक स्वरूप में प्रस्तुत किया। राजकीय समस्याओं के समाधान के लिए मार्गदर्शन किया। संस्कार चैनल द्वारा प्रवचनों का प्रसारण हुआ। विभिन्न वर्गों में रहने वाले व्यक्तियों राजनेताओं, साहित्यकारों, पत्रकारों, विचारकों से मिलन और विचार-मंथन हुआ, इस उपक्रम ने भी आचार्य महाप्रज्ञ को प्रतिष्ठित बनाया। उनका न्याय, दर्शन आदि विभिन्न विषयों का अध्ययन उनके ज्ञानात्मक व्यक्तित्व को उच्चता पर ले जा रहा था।

www.terapanthinfo.com

आचार्य महाप्रज्ञ : एक संदेश

प्रो. धर्मपाल मैनी

आचार्य महाप्रज्ञ का संवाद जिस शाश्वत संदेश को देता है, वह न केवल सहजता और स्वाभाविकता के महत्व को प्रतिपादित करता है, अपितु साधना के स्वरूप को भी स्पष्ट करता है। महापुरुषों का क्षणिक सत्संग भी कितना महत्वपूर्ण होता है, यह इसका ज्वलंत प्रभाव है। बार-बार नमन है ऐसे आचार्य महाप्रज्ञजी के लिए, जिनसे जब-जब मिलना हुआ, इसी प्रकार के शाश्वत प्रेरक व उद्‌बोधक संदेश मिलते रहे!

यह जीवन साधना का जीवन है। इस साधना में तप, त्याग और सेवा विशेष उपयोगी होते हैं, तभी यह साधना सफल हो पाती है। तप अर्थात् एक कार्य में लगातार लगन एवं अपनी सभी शक्तियों को उसी दिशा में लगा देना, चाहे शरीर को सशक्त बनाना है या मन को एकाग्र करना है, यही तप है, जो व्यक्ति को साधना की दिशा में ले जाता है। इसके लिए बड़ा त्याग करना पड़ता है। सामान्य भौतिक लाभ के कार्यों से अलग होकर अपने लक्ष्य के लिए अन्य सुख-सुविधाओं को छोड़ना पड़ता है। न तो आप समय को व्यर्थ गंवा सकते हैं, न ही अनियमित व अनावश्यक भोजन ग्रहण कर सकते हैं। इस प्रकार सभी उन कार्यों का त्याग करना पड़ता है, जो अपनी साधना के माध्यम से लक्ष्य प्राप्ति में किसी भी प्रकार बाधक हों। ऐसा करते हुए सहयोगी एवं जन-सामान्य को किसी प्रकार का कष्ट न हो, अपितु उन्हें भी इस दिशा में बढ़ने में हमारे प्रयत्नों से सुविधा हो, यही सेवा का आरम्भिक रूप हो सकता है। यह जीवन में साधना का एक रूप है, जो प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक है।

आचार्य तुलसी के प्रबुद्ध शिष्य एवं उत्तराधिकारी आचार्य महाप्रज्ञ हम दोनों को साधना का महत्व समझा रहे थे। लगभग 30 वर्ष पूर्व एन.सी.ई.आर.टी. ने 'शिक्षा में नैतिक मूल्यों' के अभाव के कारणों और उन्हें दूर कर भारतीय शिक्षा और शिक्षण को अधिक मूल्य-परायण बनाने के लिए कुछ चुने हुए विज्ञों की राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया था, जिसके लिए कुछ विद्वानों को चुना गया था, ताकि इन तीनों दिनों में जहां यह विद्वान इस समस्या पर आपस में विचार-विनिमय करें, वहां उस स्थान के मनीषियों, साधकों के चिंतन का भी इस दिशा में लाभ उठा सकें। हम दोनों अपनी गोष्ठी समाप्त होने पर आचार्य महाप्रज्ञ के पास विचार करने चले आते थे और इस साधनामय जीवन के महत्व को समझने में प्रयत्नशील थे। आचार्य महाप्रज्ञ भी हमारी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए सदाचार-परायण सात्विक जीवन सृजन की चेतना देते रहते थे, यह उसी का एक अंश है।

इसी क्रम में वे बोलते गए भाई! जीवन को अधिक से अधिक प्राकृतिक रूप में बिताना चाहिए। वह जितना स्वाभाविक होगा और कृत्रिमता से दूर होगा, उतना ही सहज और सुविधाजनक होगा। आप पैंट पहनते हो, तो सदा उसकी क्रीज का ध्यान बना रहता है कि यह खराब न हो जावे, जब बैठते हो तब भी। इस प्रकार अपनी सहजता में भी कृत्रिमता लाते हो। यह तो बहुत सामान्य-सी बात है। इसी प्रकार हम अपने सम्पूर्ण आचरण को कभी सभ्यता के नाम पर और कभी शिष्टता के नाम पर कृत्रिम बनाए रखते हैं और इस प्रकार स्वाभाविकता से दूर हटते जाते हैं, जिसके लिए हमें विशेष प्रयत्न भी करना पड़ता है। यह प्रयत्न लौकिकता की दिशा में है। यदि इस प्रयत्न को हम साधना की दिशा में लगा दें, तो आंतरिक व्यक्तित्व का विकास आरम्भ हो जाता है। यही विद्यार्थी की चेतना जागरण की आधार-भूमि है। यह न केवल उसकी पढ़ाई के लिए आवश्यक है, अपितु उससे अधिक उसके चरित्र-निर्माण एवं उपयुक्त व्यक्तित्व-विकास के लिए भी नितांत आवश्यक है। जिस लक्ष्य को लेकर आप यहां आए हो, मुझे लगता है, उसके लिए इन दिशाओं पर अधिक विचार-विनिमय कर साधन और समाधान ढूंढने की आवश्यकता है जिससे बालक-बालिकाओं के सुसंस्कृत व्यक्तित्व का सृजन हो सके।

आचार्य महाप्रज्ञ का यह संवाद जिस शाश्वत संदेश को देता है, वह न केवल सहजता और स्वाभाविकता के महत्व को प्रतिपादित करता है, अपितु साधना के स्वरूप को भी स्पष्ट करता है। महापुरुषों का क्षणिक सत्संग भी कितना महत्वपूर्ण होता है, यह इसका ज्वलंत प्रभाव है। बार-बार नमन है ऐसे आचार्य महाप्रज्ञजी के लिए, जिनसे जब-जब मिलना हुआ इसी प्रकार के शाश्वत प्रेरक व उद्‌बोधक संदेश मिलते रहे! कि बहुना।

1-6, साउथ सिटी-1, गुड़गांव - 122001

www.terapanthinfo.com

इंसान को इंसान से जोड़ा

सारे जहाँ को मान और सम्मान से जोड़ा,
महाप्रज्ञ ने इन्सान को इन्सान से जोड़ा।

भव्य भाल कंचन सी काया, निर्मल हृदय विशाल
अमन अहिंसा आलोकित कर, जग को किया निहाल
अपने सरल स्वभाव को, अवदान से जोड़ा
महाप्रज्ञ ने इन्सान को, इन्सान से जोड़ा।

वो टमकोर के नथमल बनके, संतों के सरताज
देवलोक में विचरण करने, चले धरा से आज
परमात्मा ने आत्मा को, मान से जोड़ा
महाप्रज्ञ ने इन्सान को, इन्सान से जोड़ा।

परम प्रेरणा महामना की, देस गई परदेस
त्याग तपस्या दया धरम के, लेकर सब संदेश
काँटों में करुणा भर-भर के गुलदान से जोड़ा
महाप्रज्ञ ने इन्सान को, इन्सान से जोड़ा।

दुनियां भर को राह दिखाई, भले विचारों से
मुक्त कराया मानव मन को, भरे विकारों से
प्राणी की पग-पग रक्षा की, वरदान से जोड़ा
महाप्रज्ञ ने इन्सान को, इन्सान से जोड़ा।

ज्योति पुंज वो देश प्रेम की, पूंजी के भण्डार
ज्ञान की गंगा दया के सागर भक्ति के भण्डार
हर साधना को जीते जी, जी-जान से जोड़ा
महाप्रज्ञ ने इन्सान को, इन्सान से जोड़ा।

जो मिसाइल मैन अभी, अणुबम पे भारी है
वो अहिंसा प्रेमी, अणुव्रत का पुजारी है
लो अध्यात्म को गुरुदेव ने, विज्ञान से जोड़ा
महाप्रज्ञ ने इन्सान को, इन्सान से जोड़ा।

कहां जा रहे हमें छोड़कर, है प्राणों के प्राण
अन्तिम दर्शन दो दुनियाँ को, लो अन्तिम प्रणाम
अपनों से रिश्ता तोड़ क्यूं, अन्जान से जोड़ा
महाप्रज्ञ ने इन्सान को, इन्सान से जोड़ा।

दर्शन देना देव हमें भी, चाँद सितारों से
दयादीन पे करना दाता, स्वर्ग मिनारों से
हमने तो जीवन, आपके फरमान से जोड़ा
महाप्रज्ञ ने इन्सान को, इन्सान से जोड़ा।

संत संवारे हर समाज को, कर-कर के उपकार
भटका राही पथ पा जाए, भज-भज के नवकार
आराधना अवधारणा को, ज्ञान से जोड़ा
महाप्रज्ञ ने इन्सान को, इन्सान से जोड़ा।

● **अब्दुल जब्बार**
'नूर निकेतन' कुम्भानगर बाजार
चित्तौड़गढ़ (राज.) 312001

www.terapanthinfo.com

प्रामाणिकता-ईमानदारी-सच्चाई

राजेन्द्र शंकर भट्ट

संयोग जब विचार-स्तर पर होता है, इसका तात्पर्य यही होता है कि उद्गारों की भावना व्यापक और महत्वपूर्ण है। चूंकि संयोग का एक अर्थ दैववशात भी होता है, यह परमात्मा के स्तर से भी है। बात इतनी उन्नत और आवश्यक है कि यह स्वतः ही विचारणीय और आचरण में आने योग्य है, और जो कहा जा रहा है उसमें तो अनिवार्यता इतनी है कि इसके अनुसरण से भारत को प्राप्त स्वतंत्रता से वांछित परिणाम हो सकते हैं, और इसके विपरीत व्यवहार से देश और गिरेगा और स्वतंत्रता से परिणाम प्राप्त करना कठिनतर होता जायेगा।

आचार्य महाप्रज्ञ साम्प्रदायिक धर्मगुरु ही नहीं बल्कि भारत के स्तुत्य विचारक और युगप्रबोधक भी थे। उनका एक कथन है ''समाज की शक्ति का सूत्र है प्रामाणिकता, ईमानदारी और सच्चाई। इसके बिना समाज शक्तिशाली नहीं होता। चिरंजीवी नहीं होता। जो लोग अप्रामाणिक व्यवहार करते हैं, वे दुःखी बने रहते हैं। दुःख का कारण है तनाव। जो अप्रामाणिक व्यवहार करता है, वह चिंता, भय और आशंका से ग्रस्त रहता है। झूठ और तनाव का गहरा संबंध है। शक्ति-संवर्धन और चिरायु होने के लिए जरूरी है कि हम प्रामाणिकता और सत्यनिष्ठा का मूल्यांकन करें। अगर हम इनके साथ अपनी चेतना को जोड़ दें तो समाज सुखी और सम्पन्न बनेगा।''

महाप्रज्ञ एक बार इस ओर इतने व्यग्र और स्व-प्रेरित थे कि अगले दिन उन्होंने फिर कहा ''अंतःकरण की शुद्धि आवश्यक है। शुद्ध अंतःकरण एक शक्ति है। जिस समाज में लोगों का अंतःकरण शुद्ध होता है, वह समाज शक्तिशाली होता है। अंतःकरण की मलिनता का कारण है अदत्त या व्यापार। आज ज्ञान का बहुत विकास हुआ है। किन्तु चोरी और अवरोध के तरीके भी कई तरह के हो गये हैं। अदत्त का ग्रहण समाज को भ्रष्ट बनाता है। अदत्त के ग्रहण से व्यक्ति का भावना-बल भी गिरता है। दूसरों को पीड़ित करने वाला समाज कभी शक्तिशाली नहीं बन सकता है। बाहरी स्वच्छता से कहीं ज्यादा जरूरी है भीतर की स्वच्छता और पवित्रता। अपने श्रम से कमाया हुआ धन चरित्र विकास में सहयोगी बनाता है। व्रत, संयम और चरित्र इस त्रिवेणी की वेदी पर जीवन की प्रतिष्ठा करें, जीवन में शक्ति का संचार होगा, समाज भी स्वस्थ व सुंदर बनेगा।

इस कथन में भारत के प्राचीन ज्ञान की जितनी परिपुष्टि है, उतनी ही समय की गतिविधियों के प्रति क्षोभ है, उससे विरत होने का आग्रह और इस ओर चेतावनी है। इसका प्रमाण यह है कि आचार्य महाप्रज्ञ ने जिस ''अदत्त'' शब्द का प्रयोग किया वह स्मृतियों के समय से उपदेशों में आया है। इसका अर्थ तो इतना आधारित है कि कहा गया है अदत्त वह वस्तु होती है जिसके दिये जाने पर भी लेने वाले को उसे रखने का अधिकार नहीं होता।

इसकी प्राचीनता यह अवश्य दर्शाती है कि इस प्रकार के उद्बोधन की आवश्यकता हमारे समाज और राष्ट्र में बार-बार आई है, और इसकी उपेक्षा का ही परिणाम है कि हम बार-बार गिरे हैं। भारतीयता की आत्मिक शक्ति के कारण फिर-फिर उठे हैं। परन्तु प्राप्त स्वतंत्रता को हम क्या स्थायी नहीं बनाना चाहते क्या इसी से संतुष्ट रहना चाहते हैं कि गिरें-गिरें, फिर उठ लेंगे।

इसमें और भी गहरी यह बात है कि हमारे सौभाग्य से इस बार की व्यवस्था लोकतंत्रात्मक और निर्वाचनीय है। अर्थात् जो देशवासी हैं वे ही देश के भाग्यविधाता हैं निर्वाचन अधिकार से अधिक यह दायित्व देते हैं कि हम ऐसी स्थिति में सहायक होने वालों के हाथों में शासनाधिकार नहीं सौंपे जो देश को उन्नत करने की जगह और भी गिरायें। अदत्त का आधुनिक अर्थ भ्रष्टाचार समाज के विकास में इस बुरी तरह बाधक बना हुआ है कि आचार्य महाप्रज्ञ के उद्गार समस्त राष्ट्र की ओर से सहज ही हो गए हैं।

इसीलिए यहां भूतपूर्व राष्ट्रपति ने जो कहा उसे भी लाया जा रहा है। डॉ. ए.

आचार्य महाप्रज्ञ साम्प्रदायिक धर्मगुरु ही नहीं बल्कि भारत के स्तुत्य विचारक और युगप्रबोधक भी थे। उनका एक कथन है ''समाज की शक्ति का सूत्र है प्रामाणिकता, ईमानदारी और सच्चाई। इसके बिना समाज शक्तिशाली नहीं होता। चिरंजीवी नहीं होता।''

www.terapanthinfo.com

भारतीय संसद में आचार्य तुलसी, मुनि नथमल (आचार्य महाप्रज्ञ), मुनि चम्पालाल, साधु–साध्वी एवं शुभकरण दस्सानी

पी.जे. अब्दुल कलाम का कथन है ''यदि दिल में सच्चाई है तो चरित्र में खूबसूरती घर करती है और चरित्र की खूबसूरती से घर/परिवार में प्रेम और सौहार्द की गंगा उमड़ती है। ऐसी गंगा से देश खुशहाल बनता है और जहां का राष्ट्र खुशहाल होता है वहां विश्व शांति का प्रसार होता है। सच्चाई और उससे संबंधित सारे गुण चैतन्य माता, पिता और विश्वविद्यालय ही प्रदान करते हैं। ज्ञान के तीन सकार सृजन, सच्चाई एवं साहस पर जीवनोत्कर्ष निर्भर करता है। तीन गुण सामर्थ्य, साहस और सक्षमता के सहारे कोई भी अपने जीवन को सार्थक बनाते हुए समाज एवं राष्ट्र के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।''

परन्तु आज 'राष्ट्र के लिए उपयोगी' कौन होना चाहता है? सब अपने लिए उपयोगी, सम्पन्न और सफल होना चाहते हैं। यह इतनी संकुचित वृत्ति है कि इसे तो आत्महत्या ही कहा जाना चाहिए। यों देखें कि जिस पेड़ पर चढ़ा जाता है उसी को नीचे से काटने पर ऊपर पहुंचा ही कैसे जा सकता है।

जो विचार धर्माचार्य महाप्रज्ञ और पूर्व राष्ट्रपति कलाम के थे उनमें सहभागिता के अतिरिक्त यह संयोग और है कि दोनों का उद्बोधन उदयपुर (राजस्थान) में हुआ। इसका यह अभिप्राय निकालना तो गलत होगा कि राजस्थान की दुरावस्था ही इस प्रकार के विचारों की उत्प्रेरक है, जो इन दो राष्ट्र-पुरुषों ने कहा वह समस्त राष्ट्र के लिए अनुकरणीय है। परन्तु इन आग्रहों का अवतरण हमारे राज्य से हुआ है, हमें इनके अनुसरण से देश के सामने उचित उदाहरण उपस्थित करने का प्रबलतर आह्वान है।

जिनके हाथों में देश की स्थिति उन्नत करने की शक्ति है उनके हाथों में देश और उसका भविष्य कितना सुरक्षित है, इसमें आती आशंका इसकी द्योतक है कि प्रामाणिकता, ईमानदारी और सच्चाई के उद्बोधन अधिक ही सामयिक है। इस संयोग पर सीधा विचार आवश्यक है कि ऐसे उद्गार क्या इन गुणों का अभाव अपने आप प्रकट नहीं करते।

इससे जुड़े दो और प्रश्न हैं। भारत का यह भी पुराना अनुभव है कि प्रामाणिकता, ईमानदारी और सच्चाई का आचरण सहज संभव नहीं होता। इसके लिए आंतरिक शुद्धता के अतिरिक्त उचित दंड व्यवस्था का ही निर्णायक योगदान रहता है। दिक्कत या दुर्दशा यह है कि दंड जिस शासनिक और न्यायिक व्यवस्था पर निर्भर है वही इस समय अपर्याप्त, अक्षम और प्रदूषित है।

इस ओर सुधार के लिए जो अलग-अलग हम इस समय के भारतीय हैं उनकी अपनी आंतरिक शक्ति से अपने में से अप्रामाणिकता को निकालकर ईमानदारी और सच्चाई को अपनाना होगा। किसी दूसरे से अपेक्षा उसी की जा सकती है जिसके लिए स्वयं अपनी पात्रता हो। यह पात्रता-अपात्रता की बात भी भारत में बहुत पुरानी है, जिसका आज का संदर्भ यही है कि हम हजार साल बाद प्राप्त स्वतंत्रता की रक्षा अपनी और हमारे भारत में जीवनयापन करने वालों की ''प्रामाणिकता, ईमानदारी और सच्चाई'' के बिना नहीं कर सकते। यह हमारा सौभाग्य है कि ऐसे उद्बोधन करने वाले हमारे सामने, हमारे सन्निकट रहे। प्रकाश अधिक ही निकट जाने पर दृष्टि जो अक्षम कर देता है ऐसा नहीं हो, नहीं हो, यह बार-बार कहे जाने लायक है। यही उपर्युक्त उद्गारों के संयोग का तात्पर्य है।

स्फटिक, 3, जयाचार्य मार्ग, रामनिवास बाग
जयपुर (राजस्थान) 302004

www.terapanthinfo.com

मानव मूल्यों के प्रहरी : आचार्य महाप्रज्ञ

बी.एल. आच्छा

आचार्य महाप्रज्ञ भारतीय दर्शन और प्रज्ञा के जीवन्त इतिहास पुरुष थे। यद्यपि वे तेरापंथ धर्मसंघ के दशम आचार्य थे, परन्तु पंथ की धुरी पर रहकर भी विश्व के प्रमुख दर्शनों और अध्यात्म की अवधारणाओं के ज्ञाता और विश्रुत विद्वान थे। तेरापंथ धर्मसंघ के आधुनिकीकरण एवं युगीन आवश्यकताओं के अनुरूप नवीनीकरण में उनका अहम् योगदान रहा। वे आगम-दर्शन के व्याख्याता थे, जीवन के सार्थक नियोजन के जीवन-विज्ञानी थे। सभी धर्मों-सम्प्रदायों के बीच समन्वय और सहिष्णुता के सेतु थे। धर्म की तत्व-विवेचना के मनीषी थे। धर्म को जीवन के अनुरूप व्यवस्था देने वाले शिल्पकार थे। राष्ट्र की संवैधानिक व्यवस्था के अनुरूप समता के पोषक थे और विषमता को पाटने के उद्घोषक थे। वे मूर्तिपूजक नहीं थे, परन्तु शब्दों में भावपूजा से, भक्तामर की मर्मस्पर्शी व्याख्या से शब्द-मूर्ति रचने वाले गद्य-शिल्पी थे।

वे बाजारवाद के शोषक जबड़ों से मुक्ति दिलाने वाले महावीर के अर्थशास्त्र के पैरोकार थे। वे रूढ़ियों का वैज्ञानिक स्तर पर विरोध करने वाले समाजशास्त्री थे। वे प्रयोग के आधार पर धर्म की प्रतिष्ठा करने वाली वैज्ञानिक दृष्टि के प्रयोक्ता थे। वे अवचेतन की तहों को चीरकर धर्म के निर्झर को बहाने वाले आध्यात्मिक-मनोविज्ञान के प्रतिष्ठाता थे। वे अहिंसा के शास्त्रीय रूप के विश्लेषक ही नहीं, प्रयोक्ता के रूप में समाज को आंदोलित करने वाले अहिंसा-पुरुष थे।

आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी आध्यात्मिक, समन्वयकारी, वैज्ञानिक, संवैधानिक एवं लोकमंगलकारी दृष्टि से राष्ट्र एवं विश्व को प्रभावित किया। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एवं आचार्य महाप्रज्ञ ने धर्म और विज्ञान के पूरक चिंतन से धर्म को विज्ञानपरक एवं विज्ञान को धर्मपरक बनाकर राष्ट्र के रूपांतरण एवं विश्व में ऐसे नेतृत्व के विकास के लिए सशक्त चिंतन प्रस्तुत किया। धर्म उनके लिए साधना नहीं जीवन-व्यवहार का उत्कर्ष रूप था। इसीलिए सामाजिक-आर्थिक विषमताओं एवं कन्या भ्रूणहत्या जैसे ज्वलंत विषयों को वे आधार बनाते थे और सामाजिक रूपांतरण के लिए जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान को साधन रूप मानते थे।

आचार्य महाप्रज्ञ अपने धर्मसंघ में जितने पूज्य थे, उतने ही अन्य धर्म-समाजों, सामाजिक गलियारों और राजनीतिक क्षेत्रों में विश्रुत और लोकप्रिय। ऐसे दिव्य पुरुष मानवता और राष्ट्र के आध्यात्मिक-प्रहरी होते हैं, जो सामाजिकता में आये विकारों के प्रति सदैव सचेत करते रहते हैं।

एक महान साधक, विचारक, साहित्यकार, भाषाविज्ञानी, अनुशासक, पाच्य एवं आधुनिक दर्शन के व्याख्याकार के रूप उनका योगदान अप्रतिम है। लेकिन उनके व्यक्तित्व का सबसे बड़ा पहलू उनकी सरलता, अहंकारविहीनता एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति है। उन्होंने अपने आचार्य के अनुशासन का सदैव अभिवंदन किया। उनकी सरलता, दार्शनिकता और ग्रंथिविहीनता उन्हें महामानव का आभा-मंडल देती है। प्रारंभ में वे जैन दर्शन के 'अकादमिक पुरुष' थे, बाद में उनकी दृष्टांतपूर्ण व्याख्यान शैली, सरल भाषा और समाज के रूपांतरण की तड़प, व्यक्तित्व विकास की अन्तर्दृष्टि ने उन्हें अपनी सरलता में ही विशिष्ट बना दिया।

यही कारण है कि आचार्य महाप्रज्ञ अपने धर्मसंघ में जितने पूज्य थे, उतने ही अन्य धर्म-समाजों, सामाजिक गलियारों और राजनीतिक क्षेत्रों में विश्रुत और लोकप्रिय। ऐसे दिव्य पुरुष मानवता और राष्ट्र के आध्यात्मिक-प्रहरी होते हैं, जो सामाजिकता में आये विकारों के प्रति सदैव सचेत करते रहते हैं।

73, रवीन्द्र नगर
उज्जैन (मध्यप्रदेश) 456010

अणुव्रत सत्य का प्रतिनिधित्व करता है। सत्य त्रैकालिक होता है सामयिक नहीं होता। नैतिकता, चरित्र भी त्रैकालिक है।

● आचार्य महाप्रज्ञ ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-**कोलकाता**-700019

● दूरभाष : 22809695

www.terapanthinfo.com

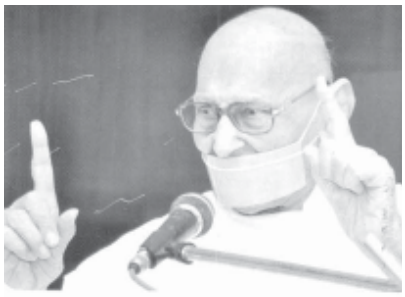

जन-जन की नजर में

डॉ. हीरालाल छाजेड़

महान दार्शनिक, यथार्थ के पक्षधर, महान व्याख्याकार, प्रज्ञा पुरुष अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ गुरुदेव तुलसी के योग्यतम उत्तराधिकारी थे। प्रेक्षाध्यान पद्धति के महान अनुसंधाता एवं प्रयोक्ता आचार्य महाप्रज्ञ के रूप में सृष्टि ने हमें एक वरदान दिया था।

सौम्य आकृति, सरल स्वभाव, तीव्र मेधाशक्ति, तभी उन्हें आचार्य तुलसी का सान्निध्य मिला। दर्शन, न्याय, व्याकरण, कोष, मनोविज्ञान, ज्योतिष, आयुर्वेद, एक्यूप्रेशर आदि विभिन्न विषयों का गहन अध्ययन किया। आगे चलकर उन्होंने भारतीय तथा जैन दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन किया और यही कारण है वे भारतीय दर्शन के सफलतम व्याख्याकारों में माने जायेंगे। उनकी प्रतिभा और अनुकरणीय जीवन शैली से राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ आधुनिक युग के विवेकानंद हैं। प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी सार्वजनिक सभाओं में बहुधा कहा करते थे कि मैं महाप्रज्ञ-साहित्य का प्रेमी हूं।

आचार्य महाप्रज्ञ ने विविध विषयों पर तीन सौ ग्रंथ लिखे हैं, जिनमें उनका मौलिक चिंतन प्रस्फुटित हुआ है। उन्होंने इससे मानवता की विशिष्ट सेवा की है। उनकी सर्जनात्मकता में सम्पूर्ण मानवता लाभान्वित हुई है। गहन ज्ञान, दूरदर्शी दृष्टि एवं प्रज्ञा से पूरे विश्व को आलोकित किया है, नयी जीवन दृष्टि दी है। उनके दिव्य गुणों में विनम्रता, दया, समझ, विवेक, धैर्य और विश्व भ्रातृत्व प्रमुख हैं। वे संसार में भारत के सांस्कृतिक एवं पारंपरिक मूल्यों के प्रचारक हैं। अहिंसा, शान्ति, नैतिकता, सामाजिक-धार्मिक सौहार्द, आध्यात्मिक जीवन-विज्ञान, प्रेक्षाध्यान, पर्यावरण आदि हमारी भारतीय परम्परा के अभिप्रेरक अंग रहे हैं। आप इन मूल्यों के संवाहक थे।

आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा के प्रचारक थे, उसकी गहन व्याख्या उन्होंने की है। उनका कहना था कि महावीर की अहिंसा महज हिंसा पर अंकुश नहीं है, वह छोटे से छोटे प्राणी के लिए प्रेम और करुणा की जीवन दृष्टि है। यह प्राणी मात्र में एक समग्र जीवन देखने का अंतर-दर्शन है। अहिंसा विश्व धर्म की धुरी है।

महाप्रज्ञ ने विज्ञान एवं अध्यात्म को परस्पर पर्याय के रूप में प्रस्तुत किया है। धार्मिक क्षेत्र में यह पूर्णतः नया सिद्धांत है, जिसने धर्म के संदर्भ में नयी दिशा दी है। अब तक इन दोनों को दो ध्रुव माना जाता रहा है।

आचार्य महाप्रज्ञ एक प्रवचनकर्ता या साहित्यकार ही नहीं संवेदनशील कवि, समाज सुधारक, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के उद्‌बोधक, सत्य ज्ञान के मार्ग पर चलने वाले सद्‌भावना और प्यार, सरल और ऊंचे विचारों से परिपूर्ण महान संत पुरुष थे।

उपरोक्त विचार प्रसिद्ध लेखक व वरिष्ठ पत्रकारों के आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति हैं। उनके प्रति मेरी भावना व विचार ऐसे हों यह तो स्वाभाविक है, वे मेरे गुरु व आस्था के केन्द्र रहे। उनके संबंध में जितना लिखूं कम है। उन्होंने राजनेताओं, समाज सुधारकों, अर्थशास्त्रियों, कलाकारों, वैज्ञानिकों, कवियों व देश-विदेश की नामी हस्तियों के दिलों पर गहरी छाप छोड़ी है। उन सभी के विचार अल्प पंक्तियों में व्यक्त करना असंभव है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने कर्तृत्व से बीसवीं और इक्कीसवीं सदी को प्रभावित किया। उनको अनेक अलंकरणों से अलंकृत किया गया। अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत होकर भी उनका मन सदा निःस्पृह व प्रभावों से अछूता रहा। आचार्य महाप्रज्ञ का वह अनासक्त योग युग दीवट पर सदा प्रेरणा का दीप बनकर जलता रहेगा और आने वाली शताब्दियां उनके विचारों व योगदान को यादकर सदा नमन करती रहेंगी।

भारत गणतंत्र की राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल के शब्दों में आचार्य महाप्रज्ञ एक महान संत और दर्शनिक थे। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन को नई दिशा दी तथा अपनी अहिंसा यात्रा के माध्यम से सम्पूर्ण राष्ट्र में शांति व समरसता का संदेश फैलाया।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की अध्यक्ष सोनिया गांधी के विचारों में आचार्य महाप्रज्ञ एक अत्यंत उच्च कोटि के विचारक, साहित्य-सर्जक और समाज के मार्गदर्शक थे। उन्होंने जीवन भर जिन मानव-मूल्यों की स्थापना और प्रचार-प्रसार के लिए प्रयास किया, उनके बिना समाज और मानव सभ्यता की कल्पना नहीं की जा सकती।

आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा की प्रतिमूर्ति थे। धर्म को वे समाज सेवा और उसे श्रेष्ठ संस्कार देने का माध्यम मानते थे। अणुव्रत आंदोलन में उनका योगदान और उनकी अहिंसा यात्रा एक लंबे समय तक याद की जायेगी। आचार्यश्री की अपने गुरु आचार्य तुलसी के प्रति अगाध श्रद्धा स समर्पण की भावना बेजोड़ थी। तभी तो आचार्य तुलसी जैसे समर्थ गुरु का चिर संयोग महाप्रज्ञ के भाग्योदय का महानतम घटक है।

सत्य का अन्वेषण और अध्यात्म की साधना ही जिनके जीवन का लक्ष्य था ऐसे आचार्य महाप्रज्ञ की अध्यात्म साधना का यह रत्नदीप युगों-युगों तक जग को आलोकित करता रहेगा।

जयश्री टी. कंपनी, चौधरी बाजार
नन्दीशाही, कटक-1 (उड़ीसा)

www.terapanthinfo.com

अनेकांत के व्याख्याता

मुनि दीपकुमार

आचार्य महाप्रज्ञ अनेकांत के सजीव उदाहरण थे। उन्हें अनेकांतदर्शन बहुत प्रिय था। उन्होंने अपने जीवन के रहस्यों को अनावृत्त करते हुए सर्वप्रथम अनेकांत के दृष्टिकोण की चर्चा करते हुए लिखा 'भाग्य मानूं या नियति? सबसे पहली बात मुझे जैन शासन मिला। जिनशासन का अर्थ मानता हूं अनेकांत का दृष्टिकोण मिला। मैंने अनेकांत को जिया है। यदि अनेकांत का दृष्टिकोण नहीं होता तो शायद कहीं न कहीं दलदल में फंस जाता। मुझे अनेकांत का दृष्टिकोण मिला, इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूं। जिस व्यक्ति को अनेकांत की दृष्टि मिल जाये, अनेकांत की आंख से दुनिया को देखना शुरू करे तो बहुत सारी समस्याओं का समाधान अपने आप हो जाता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने अनेकांत की आंख से विश्व को आध्यात्मिक मार्गदर्शन दिया। उन्होंने अनेकांतवाद पर वृहत् साहित्य लिखा। उनका जीवन अनेकांत की प्रयोगशाला था।

अतीन्द्रिय चेतना के धनी

वर्तमान युग में बुद्धि का विकास तीव्र गति से हो रहा है। पर जिनकी अंतः चेतना जागृत होती है वे प्रज्ञावान महापुरुष स्वल्प होते हैं। आचार्य महाप्रज्ञजी अतीन्द्रिय चेतना के धनी थे। जब आचार्यश्री गृहस्थ अवस्था में बालक थे तब एक बार वे अपने चाचाजी और मां के साथ कोलकाता महानगर में गये। एक दिन बालक नथमल अपने चाचाजी के साथ कोलकाता का बाजार देखने गया। वहां पर बाजार की भीड़-भाड़ में बालक अकेला रह गया। मानो बालक नथमल की अतीन्द्रिय चेतना जागृत थी उसी के प्रभाव से बालक बिना किसी डर-भय के महानगर में घूमता-घूमता अपने प्रवास स्थल पर पहुंच गया। आचार्यप्रवर के ज्ञान का संबंध चेतना के आंतरिक स्रोत से था। वे प्रज्ञा के शिखर पुरुष थे। वे कठिन से कठिन समस्या का समाधान सहजता से प्रस्तुत करते थे।

विलक्षण विनम्रता

सत्ता और अधिकार मिल जाने पर व्यक्ति अहं के नशे में डूब जाता है। वे विरल व्यक्तित्व होते हैं जो अहंकार के नशे से दूर रहते हैं। उन विरल व्यक्तित्वों में एक महापुरुष थे आचार्य श्री महाप्रज्ञ। वे आचार्य पद से अलंकृत होने के बाद भी इतने विनम्र रहे कि हम एक प्रसंग से रूबरू हो सकते हैं। दिल्ली में आचार्य पदाभिषेक के बाद का प्रसंग है। आचार्य महाप्रज्ञजी आचार्य बनने के बाद भी गुरुदेव श्री तुलसी को विधिवत् वंदना करते थे। एक बार गुरुदेव ने विनोद भरे स्वरों में कहा 'महाप्रज्ञजी! अब तो तुम आचार्य बन गये हो। ऐसे ही वंदना कर लिया करो। इस तरह विधिवत् वन्दना करने की क्या अपेक्षा है?' तब आचार्यश्री ने विनम्र शब्दों में निवेदन किया 'गुरुदेव! मैं और सभी के लिए आचार्य हो सकता हूं पर आपके लिए तो एक छोटा-सा शिष्य हूं।' उस समय सब आचार्यश्री की विनम्रता के प्रति नतमस्तक हो गये। किसी को विनम्रता का प्रशिक्षण लेना हो तो वह आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन-दर्शन से ले सकता है।

कीर्तिमानों की शृंखला

आचार्य महाप्रज्ञ युग प्रधान थे। जो आचार्य युग को नई दिशा प्रदान करते हैं धर्मशासन को नये उन्मेष देते हैं वे युगप्रधान होते हैं। आचार्यप्रवर के जीवन में कीर्तिमानों की एक लंबी शृंखला बन गयी। आज तक के जैन शासन के इतिहास में किसी एक आचार्य के जीवन में इतने कीर्तिमान बने या नहीं यह खोज का विषय है। 2 अगस्त 2005 को दिल्ली के विज्ञान भवन में जब आचार्यश्री को सांप्रदायिक सद्भावना पुरस्कार दिया गया तो उस अवसर पर तत्कालीन उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत ने कहा 'आचार्य महाप्रज्ञ को पुरस्कार मिलकर पुरस्कार स्वयं सम्मानित हो रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ की श्रुत, साहित्य और साधना की धारा इतनी विशाल थी कि उसके सामने बड़े से बड़े उपाधि-अलंकरण बहुत बौने प्रतीत होते हैं। जो अवसर को समझता है वह समयज्ञ कहलाता है। आचार्य महाप्रज्ञ समयज्ञ आचार्य थे। इसके लिए अप्रमाद की साधना जरूरी है।

ग्रहणशीलता

विकास के लिए जिज्ञासा वृत्ति का होना जरूरी है। जो व्यक्ति जिज्ञासु और ग्रहणशील होता है वही क्रमशः ऊंचाइयां प्राप्त कर सकता है, जो अपनी सीमाओं और उपलब्धियों से संतुष्ट होता है उसके लिए प्रगति का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। आचार्य महाप्रज्ञ का शैशव जहां बीता था वहां शिक्षा की सुविधायें नगण्य थी। फिर भी आचार्य तुलसी के मार्गदर्शन में उन्होंने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास किया। उनकी जिज्ञासावृत्ति बहुत प्रबल रही। जहां कहीं भी उन्हें सारभूत और प्रेरक विचार मिला उन्होंने उसे ग्रहण किया। वे प्रारंभ से ही श्रद्धालु और समर्पणशील होते हुए भी चिंतनशील रहे। आचार्य महाप्रज्ञ ज्ञान के सुमेरू थे। विश्व का हर चिंतनशील व्यक्ति उनके चिंतन और ज्ञान वैभव से प्रभावित रहा।

आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन के इन सूत्रों से व्यक्तित्व विकास की पावन वीथी पर हम अग्रसर हो सकते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ और व्यक्तित्व विकास

मुनि राकेशकुमार

व्यक्तित्व विकास वर्तमान युग का ज्वलंत विषय है। आज हर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को संवारना चाहता है। विकास से शिखर पर आरूढ़ होना चाहता है। कुछ दशकों पूर्व जब शिक्षा का अभाव था, तब अधिकतर लोगों के मानस पर भाग्यवादी धारणा का प्रभाव था। जो जिस परिस्थिति में था, उसमें संतुष्ट था। वह किसी भी प्रसंग को भाग्यवाद और देववाद की देन समझकर प्रसन्नता से स्वीकार कर लेता था। पर आज बढ़ती हुई वैज्ञानिक अवधारणाओं ने जन-मानस में नया विश्वास और उल्लास उत्पन्न किया है। वह स्वयं को परिस्थिति का दास नहीं निर्माता समझता है। कुछ सीमा तक वह भाग्य की रेखाओं का परिवर्तन करने में भी स्वयं को समर्थ समझता है। इस वातावरण में आज हर विचारशील व्यक्ति व्यक्तित्व विकास के विषय में रुचि लेता है। फलस्वरूप इस विषय में विश्व की हर भाषा में साहित्य की बाढ़ आ रही है। हमारा यह परम सौभाग्य रहा कि आचार्य महाप्रज्ञ के रूप में व्यक्तित्व विकास के एक सजीव और प्रेरक उदाहरण हमारे समक्ष थे जिन्होंने तलहटी से शिखर तक विकास की यात्रा की। उनकी यात्रा में जो सहयोगी तत्त्व थे, उसमें से कुछ की यहां चर्चा कर रहे हैं।

आत्मविश्वास

आत्मविश्वास व्यक्तित्व विकास का मौलिक सूत्र है। इसके अभाव में किसी भी प्रकार की सफलता और सिद्धि के द्वार पर पहुंचा नहीं जा सकता। मनुष्य में विकास की असीम संभावना है, पर जब तक विचारों पर निराशा, हीनता और भीरुता का आवरण होता है तब तक अपनी संभावनाओं और शक्तियों पर श्रद्धा का जागरण नहीं हो सकता। आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने चरण आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ाये। भगवान महावीर ने कहा है अपने विचारों को अग्नि शिखा की तरह उर्ध्वमुखी रखें। पानी की तरह निम्नमुखी नहीं। आचार्यश्री ने अपने विचारों को अग्नि शिखा की तरह उर्ध्वमुखी रखा। यह उनके जीवन निर्माण का एक महत्वपूर्ण गुर रहा। **''नौ निन्हवेज्ज वीरिय'' आत्मशक्ति को कभी मत छिपाओ। आचारांग का यह सूत्र उनके जीवन में रमा हुआ रहा। वे कभी कठिनाइयों से विचलित नहीं हुए। आत्मविश्वास के साथ उनके श्रीचरण सदा गतिशील रहे।**

समयज्ञता

जीवन का हर क्षण मूल्यवान है। उसके गर्भ में स्वर्णिम भविष्य का संदेश अंकित रहता है। जिसकी अंतर आंखें खुली होती हैं, वह उस संदेश को पढ़ने और समझने में समर्थ होता है। जो लोग विशिष्ट अवसर की प्रतीक्षा में रहते हैं। वे भाग्यवादी और सुविधावादी होते हैं। उनकी चेतना कुंठित और मूर्च्छित होती है। कल्पना और प्रतिक्षा में वे अपना समय व्यर्थ गंवा देते हैं। जिनका जीवन साधना और तपस्यापरायण होता है, उनके लिए हर क्षण अवसर बन जाता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने हर क्षण को सार्थक बनाया। उन्होंने पूरी जागरूकता के साथ हर क्षण का उपयोग किया। सफलता आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व को हम क्षेत्र और काल की सीमा में नहीं बांध सकते। वे कालजयी व्यक्तित्व के धनी थे। वे अनुपम थे। कुछ विद्वानों ने उनको वर्तमान युग का विवेकानंद कहा। कतिपय विद्वानों ने उनको डॉ. राधाकृष्ण की उपमा प्रदान की। पर गुरुदेव तुलसी ने कहा 'महाप्रज्ञ कैसे? महाप्रज्ञ जैसे। वे किसी की अनुकृति नहीं हैं।' उन्होंने विश्व को अद्भुत अवदान प्रदान किये हैं। वे नैसर्गिक प्रतिभा के धनी थे।

आगम व्याख्याकार

आगम साहित्य महासागर के समान है। आचार्यश्री ने उनका मंथन कर जो जन-जन के लिए कल्याणकारी तत्त्व प्राप्त किया उससे हर संप्रदाय के आचार्य बहुत प्रसन्न और प्रभावित हुए। मूर्तिपूजक संप्रदाय के वयोवृद्ध आचार्य विजय रामचंद्र सूरीजी ने कहा था 'आचार्य तुलसी के नेतृत्व में महाप्रज्ञजी ने जो आगमों का संपादन और विवेचन किया है वह बहुत निष्पक्ष है। उसका स्वाध्याय कर बहुत आनंद का अनुभव हुआ है।' आचार्य महाप्रज्ञ ने आगमों का संपादन कर जैन शासन की महान सेवा की है। इसलिए जैन शासन उनका सदा ऋणी रहेगा।

अमृतमय वाणी

आचार्य महाप्रज्ञ ने अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय की सुंदर भूमिका का निर्माण किया। उन्होंने चिंतन के नये क्षितिज का उद्घाटन किया। उनके प्रवचनों से हर वर्ग के लोग लाभान्वित होते रहे। 'कंठे सुधवसति वै खलु सज्जनाम' महापुरुषों के गले में अमृत निवास करता है। आचार्य प्रवर के कंठ में हर समय अमृत की धारा प्रवाहित रहती थी। उन्होंने जीवन की अंतिम दिन भी प्रभावी प्रवचन किया। उम्र के नौवें दशक में जब व्यक्ति की वाणी लड़खड़ाने लगती है उस समय में भी आचार्य महाप्रज्ञ की वाणी स्पष्ट थी। उसमें ओझ था, तेज था। उनके प्रवचनों में वर्तमान युग की समस्याओं का समाधान प्राप्त होता था। उन्हें सब सुनना चाहते थे, पर नियति के सामने कुछ नहीं कर सकते। आज आचार्य महाप्रज्ञ हमारे मध्य नहीं हैं पर उनकी वाणी सदियों तक सम्पूर्ण मानव जाति का पथ-दर्शन करती रहेगी।

तुलसी मसीहा थे तो महाप्रज्ञ महर्षि

डॉ. महेन्द्र भानावत

महाप्रज्ञजी से मेरी पहली भेंट सन् 1962 में आचार्य तुलसी ने कराई जब उदयपुर में उनका चातुर्मास था। पहली बार में ही उनके स्नेहिल अपनत्व और आत्मीयता के कारण मैं सदैव के लिए उनसे बंध गया। मेरा क्षेत्र लोककला, लोकसंस्कृति एवं लोकसाहित्य का था। अतः उन्होंने मेरा तेरापंथ के उन साधु-साध्वियों से परिचय कराया जो साहित्य, संस्कृति और कला के क्षेत्र में बहुप्रसिद्ध एवं साधनारत थे। मैंने धर्मयुग से लेकर अणुव्रत तक की पत्र-पत्रिकाओं में लिखा। उन्हीं दिनों दैनिक हिन्दुस्तान में 'व्यक्ति, साहित्य एवं समस्याएं' नामक एक लोकप्रिय स्तंभ चलता था। मैंने उन दिनों देवीलाल सामर, नरोत्तमदास स्वामी, अगरचंद नाहटा, गोवर्धन बाबा आदि पर उसमें लिखा। इस स्तंभ के लिए मैंने महाप्रज्ञजी पर भी लिखा। तब वे मुनि नथमल के नाम से जाने जाते थे। आचार्य तुलसी ने 'मेरा जीवन मेरा दर्शन' नामक आत्मकथा में मेरी भेंट का जिक्र करते हुए लिखा "महेन्द्र भानावत मूलतः कानोड़ निवासी है और तेरापंथी श्रावक है। उसकी माता गहरी धर्मनिष्ठा रखने वाली भक्त श्राविका थीं। कार्यक्षेत्र बदल जाने से महेन्द्र आदि भाइयों का सम्पर्क कुछ कम हो गया है। महेन्द्र एम.ए. करने के बाद उस समय डॉक्टरेट कर रहा था। लेखन के क्षेत्र में भी उसने अच्छा विकास कर लिया। उसने हिन्दुस्तान पत्र के लिए मुनि नथमलजी के बारे में एक लेख लिखा। लेख मुझे दिखाया, अच्छा लगा।" (आत्मकथा भाग-5, 21 अगस्त 1962, पृष्ठ-166)।

मुनि नथमल तब मुखर्जी चौक स्थित पगारियाजी के निवास पर ठहरे हुए थे। यहां मैं उस चातुर्मास काल के दौरान कई बार उनके दर्शन करने पहुंच जाया करता। मुनिश्री ने मुझे तेरापंथ धर्मसंघ के जिन विशिष्ट साधु-साध्वियों से भेंट कराई उनमें से कुछ अति सूक्ष्म लिपि के धनी थे। कुछ जैन दर्शन संबंधी जैसा कर्म वैसा फल जैसे परिणाम को दर्शाते, स्वर्ग-नर्क के सुख-दुःख भोगते बड़े ही कलात्मक चित्रों के चितेरे थे। उनकी चित्रशैली सर्वथा वैशिष्ट्य लिए थी जो तेरापंथ सम्प्रदाय की शैली ही बनी हुई थी। उन साध्वियों से भी भेंट कराई जो बहुत अच्छी काव्य रचना करती थीं।

मेरे लिए दिक्कत यह थी कि मैं उनके लेखन अथवा कृतित्व को वहीं बैठकर अपनी डायरी में नहीं लिख सकता था और न उनके समक्ष सीधे नोट्स ही ले सकता था। यदि कुछ लिखना होता तो मैं उसे मन में धार कर बाहर आता और लिखता फिर उनके पास जाता और पढ़-सुन बाहर आता और अपनी डायरी में लिखता। यह प्रक्रिया बड़ी लम्बी और उलझन भरी लगी। मैंने इस बाबत महाप्रज्ञजी से निवेदन भी किया तो वे मुस्कराए और बोले, अपने धर्मसंघ की यही परम्परा है लेकिन इस बारे में भी चिंतन चल रहा है, देखो कोई हल निकल आये। उस परम्परा से लेकर आज तक जो सुखद एवं समयानुकूल आवश्यक परिवर्तन हुए वे बड़े ही उपयोगी मूल्यवान और जीवनधर्मिता के व्यावहारिक सोपान हैं। इसके चलते इस धर्मसंघ ने पूरे विश्व में अपनी पहचान पुख्ता की है।

आचार्य तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के सतरंगी प्रकाश थे जिन्होंने अपनी बंधी-बंधाई परम्परा को मथते हुए कई नए प्रभावी सूत्र दिये तो महाप्रज्ञ उन सूत्रों के व्यावहारिक व्याख्या एवं भाष्यकार थे जिन्होंने समय की नब्ज को पहचानते हुए तदनुकूल देशना दी। प्रेक्षाध्यान, अणुव्रत आंदोलन, अहिंसा यात्रा, नशामुक्ति, नया मोड़ जैसे प्रकल्प विश्वशांति के लिए अनुकरणीय सिद्ध हुए।

महाप्रज्ञजी ने मुझे अणुव्रत आंदोलन से भी जोड़ा। देवीलाल सामर और मैं कलामंडल के कठपुतली कलाकारों को लेकर बीदासर पहुंचे। वहां कलामंडल के कठपुतली प्रदर्शनों की बड़ी सराहना हुई तब महाप्रज्ञजी का यह विचार बना कि अणुव्रत के सिद्धांतों के प्रचार के लिए कठपुतलियां कारगर सिद्ध हो सकती हैं। वहीं सामरजी को अखिल भारतीय अणुव्रत समिति का अध्यक्ष बनाया गया और मुझे उसकी कार्यसमिति में लिया गया। दिल्ली के अणुव्रत भवन में तब जो गोष्ठियां हुईं उनमें ऐसे कई विचार उभर कर आये जिनसे अणुव्रत आंदोलन को व्यापक भूमिका मिल सके। कठपुतलियां भी एक सशक्त माध्य बनीं। सामरजी ने वर्षों तक कठपुतलियों के माध्यम से देश के कोने-कोने और विदेशों में भी अणुव्रत के सिद्धांतों का अनुरंजनीय प्रसार किया।

सामरजी के निधन के पश्चात जब मैं कलामंडल का निदेशक था तब एक रात्रि को आचार्य तुलसी सहित अन्य सहवर्ती साधु-साध्वियों ने कलामंडल का भवाई, तेराताली नृत्य तथा कठपुतली प्रदर्शन का कार्यक्रम देखा था तब महाप्रज्ञजी ने मुझे कहा था कि अपने लेखन में लोककला-संस्कृति के साथ धर्म का समन्वय अवश्य रखना। धर्ममय कला-संस्कृति और कला-संस्कृतिमय धर्म ही जीवन को परिपूर्ण बनाता है। आदिम जीवन से लेकर आज के आधुनिकतम जीवन जीने वालों में भी यदि धर्म और कला का उत्तम समन्वय है तो वे सुखी जीवन का निर्वाह कर रहे हैं। विसंगतियां तभी आती हैं जब इनका संतुलन बेमेल हो जाता है। मेरे लिए उनकी यह सीख आज भी प्राणवंत बनी हुई है।

आचार्य तुलसी ने जहां-जहां भी विचरण किया, महाप्रज्ञ सदैव उनके साथ रहे। दोनों का संबंध मसीहा-महर्षि का था। अपनी शोधयात्राओं के दौरान जहां-जहां, जब-जब भी अवसर मिला मैंने आचार्यश्री एवं महाप्रज्ञजी के दर्शन किए। वे सदैव मुझे लेखन की ओर प्रवृत्त करते रहे और लेखन संबंधी जानकारी लेते रहे। मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत और माता डेलूबाई को उन्होंने हर समय याद किया। वे अक्सर जिक्र किया

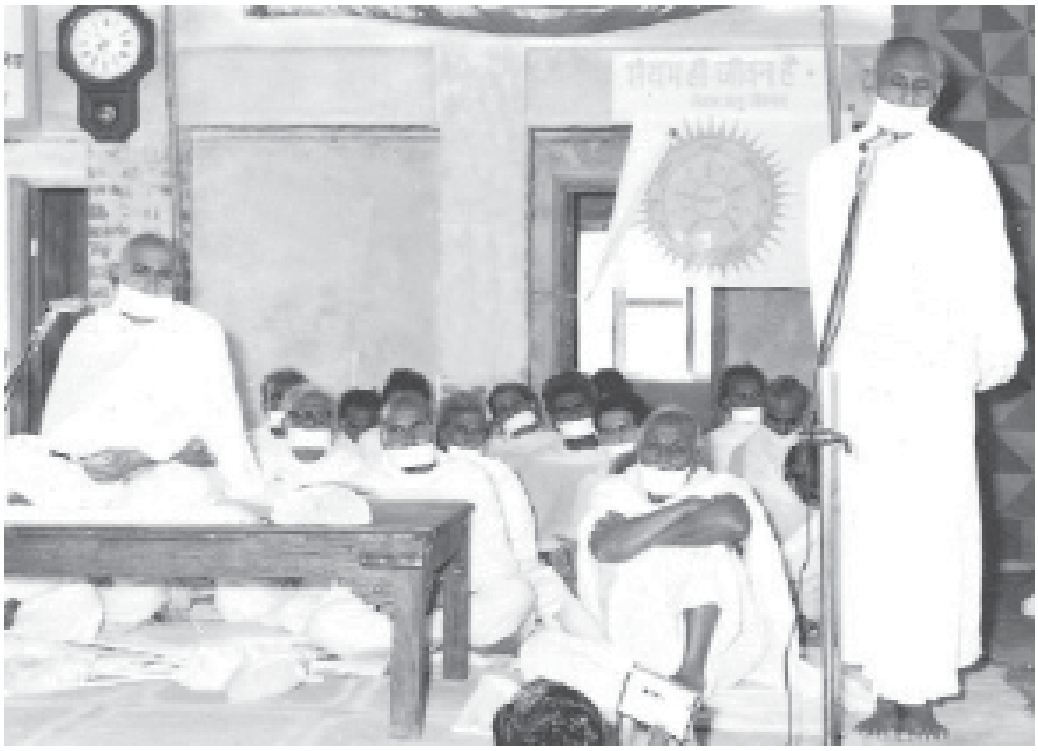

आचार्य तुलसी के सान्निध्य में समायोजित अणुव्रत अधिवेशन में अणुव्रत दर्शन की विवेचना करते हुए मुनि नथमल (आचार्य महाप्रज्ञ)

करते थे कि तुम्हारी माताजी बड़ी सुधारवादी थीं। कानोड़ में सबसे पहले उन्होंने ही आचार्यश्री के कहने से विधवा वस्त्र त्याग कर श्वेत वस्त्र धारण किये। नरेन्द्र ने भी जैन दर्शन की अच्छी पकड़ रखी। जयपुर में आचार्यश्री और महाप्रज्ञजी ने भाई साहब के आवास पर पधार कर माताजी को दर्शन दिये जब वे बीमार चल रही थीं।

उदयपुर के 2007 के चातुर्मास में मैंने महाप्रज्ञजी के सपरिवार दर्शन किये। एक दिन तनिक मुस्कराते हुए उन्होंने कह दिया पहले इतने अधिक आते थे कि अब उसका बैलेंस पूरा कर रहे हो। मुझे समझते देर नहीं लगी कि अब मैं अधिक नहीं जुड़ पा रहा हूं। एक समय था जब मैं प्रतिदिन सामायिक करता था और उसमें नवकार मंत्र की माला फेरता था। मुझे अच्छी तरह याद है, एक दिन सामायिक में मैंने ध्यानस्थ हो पांच नवकार मंत्र की मालाएं फेरी और जब घड़ी देखी तो पूरे 48 मिनट हो गये थे। उसके बाद न सामायिक का वह क्रम रहा और न माला फेरने का ही किन्तु मैं ऐसा मानता हूं कि मेरे लेखन में उसका ही एक भिन्न रूप आ समाया है और जीवन में कई बार ऐसे प्रसंग आये जब जैनत्व के संस्कारों ने ही मुझे बचाये रखा।

उदयपुर में जब-जब भी मैंने उनका व्याख्यान सुना तो मुझे लगा कि वे जैन शास्त्रों की बंधी-बंधाई लीक से परे आमजन के साथ जो व्यावहारिक घटनाएं घटती हैं उन्हीं को अपना विषय बनाकर समस्या का निदान देते हैं और खुशहाल जीवन जीने की नीव बांधते हैं। कई घटना, कोई संस्मरण, कोई आख्यान, कोई समाचार, कोई समस्या, कोई आदर्शपरक दृष्टांत सुनाकर वे अपना वक्तव्य प्रारंभ करते हैं और कई उदाहरणों, उद्धरणों, महापुरुषों के जीवनानुभवों तथा अपने निजी चिंतन से जो निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं वे सभी के लिए अमृत तुल्य होते हैं। इसीलिए उनकी धर्मसभा में हर जगह, हर समय मैंने सभी जाति के बड़े से बड़े तबके से लेकर निम्न कहे जाने वाले तबके के लोगों को देखा है। निश्चय ही उनके सान्निध्य एवं सम्पर्क से कइयों का जीवन बदला है। सोच और समझ बदली है। मन बदला है। कइयों ने सात्विक जीवन जीने की राह पकड़ी है और उन सारे मार्गों को छोड़ा है जो कड़वाहट भरे, अठीक कहे जाने वाले तथा बड़ी कमाई के जरिया थे किन्तु वे दुखद परिणति के ही थे।

कहना नहीं होगा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने धर्मसंघ की परम्परा को पूरे विश्व में प्रतिष्ठित किया और संघ को मर्यादित, संगठित, अनुशासित एवं संयमित बनाए रखा। वे आचार्य तुलसी के सबसे नजदीक वैचारिक मनोरथ के सम्पोषक थे। उन्होंने प्रेक्षाध्यान तथा अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से भारतीय धर्म, अध्यात्म एवं दर्शन की मनोभूमि को संरक्षित करते हुए भगवान महावीर के संदेश को वैज्ञानिक मंथन दिया। उनकी संयम वाणी, संयमी जीवन तथा सदाचारी परिवेश ने पूरे विश्व को शांति एवं भाईचारे का संदेश दिया। महावीर ने अपने युग में जिन मानव मूल्यों को लेकर जन-जन को जो संदेश दिया था, वही संदेश और वही वाणी मैंने आचार्य महाप्रज्ञ में मूर्तिवंत होते पाई।

352 श्रीकृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास
उदयपुर (राजस्थान)

एक अमिट स्मृति

रमेश हिरण

9 मई 2010 की दोपहर अचानक एक फोन आया जिसका संवाद था आचार्य महाप्रज्ञ का महाप्रयाण हो गया। सुनकर स्तब्ध रह गया! यह अनहोनी कैसे हो गई? जिस संवाद श्रवण के लिए मेरे कान बिल्कुल तैयार नहीं थे, यह अकल्पित कार्य आखिर कैसे हुआ? परन्तु ज्यों-ज्यों समाचारों की पुष्टि होती गयी, मेरा मन विचलित होता गया। मुझे तुरन्त अपने व्यवसायिक स्थल से उठना पड़ा।

मन इतना भारी हो गया कि वहां रुकना संभव नहीं हो रहा था। रह-रह कर मुझे उस ज्योतिषी की बात याद आ रही थी, जिसने बताया था कि आचार्य महाप्रज्ञ 105 वर्ष तक संसार को आध्यात्मिक पोषण देते रहेंगे। अतः इस बात की स्वप्न में भी कल्पना नहीं थी कि ऐसी अकल्पित घटना अभी घटित होगी।

विचारों का प्रवाह चल रहा था, मेरा स्वप्न मुझे बिखरता नजर आ रहा था। मैंने भी एक स्वप्न संजोया था आचार्य प्रवर के सान्निध्य में कार्य करने का। इस नश्वर जीवन के कतिपय वर्ष शासन कार्य में लगे, यह शरीर शासन के कुछ काम आ सके, उनका स्नेहिल आशीर्वाद मुझे प्राप्त हो तथा उनके द्वारा निर्दिष्ट कार्य को मैं अन्जाम दे सकूं तथा मेरे जीवन के 20 वर्ष पूज्य गुरुदेव के जीवन में मिल जाए तो यह जीवन सार्थक बन जाए। क्योंकि मेरे तुच्छ जीवन का कोई मूल्य नहीं परन्तु पूज्यवर का जीवन अमूल्य है तो उनका आयुष्य यदि लम्बा होगा तो सकल विश्व के लिये अधिक उपादेय होगा।

परन्तु इस समाचार ने तो मेरे सपनों को एक ही पल में ध्वस्त कर दिया। मन अविकल आचार्य प्रवर के दर्शनों के लिए आतुर हो उठा। जितनी जल्दी संभव हो उतनी शीघ्रता से सरदारशहर पहुंचा जाए। सरदारशहर की धरती पर पहली बार जाने का अवसर आया और वह भी इस रूप में।

पांव भारी हो गए दुःख एवं क्षोभ से। प्रचण्ड गर्मी व विशाल जनमेदिनी को चीर कर जब पूज्यवर के दर्शन हुए अपने आपको रोक नहीं पाया। भावनाओं का आवेग बढ़ा तो आंखों से अविरल अश्रु धार बहने लगी। अब वहां रुकना भी संभव नहीं हो रहा था, तो बाहर आकर भीड़ का हिस्सा बन गया।

बाहर न तो भीड़ शान्त थी और न ही मेरा मन। एक तूफान सा उठ रहा था हृदय में। हलचल सी मच रही थी, आखिर अब क्या होगा? विचारों का प्रवाह बहना शुरू हो गया। फिर-फिर सोचने लगा....

आचार्य महाप्रज्ञ का महाप्रयाण ऐसे समय हुआ है, जब देश को ही नहीं सारे विश्व को उन जैसे मानवता के मसीहा की सर्वाधिक आवश्यकता थी। आज की उपभोक्ता तथा स्वकेन्द्रित संस्कृति तथा बढ़ते आतंकवाद के इस युग में अहिंसा, शांति, सद्भाव और अपरिग्रह जैसे संदेशों का प्रचार-प्रसार करने वाले इस संत की कमी पूर्ति कौन करेगा?

युगों-युगों में कुछ ऐसी दिव्य व विलक्षण आत्माओं का इस धरती पर मानव देह रूप में अवतरण होता है, जिनकी ज्ञान चेतना के प्रकाश पुंज से सम्पूर्ण मानव जाति का पथ प्रकाशित होता है।

शताब्दियों/सहस्त्राब्दियों से आचार्य महाप्रज्ञ जैसा कोई अलौकिक महापुरुष धरती पर अवतरित होता है, वे एक विलक्षण, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक विश्व संत थे। अपनी सन्निधि में आने वाले हर इंसान को वे आत्मीयता की अमृत वर्षा से अन्तस तक भिगो देते थे।

पवित्र जीवन, पूर्ण पारदर्शी व्यक्तित्व एवं उम्दा चरित्र में समाहित, तपस्विता यशस्विता तथा मनस्विता का सम्मिलित जीवन्त स्वरूप, मनीषा के शिखर पुरुष, ख्यात दार्शनिक, ध्यान योग साधना के मर्मज्ञ, आनन्द, वात्सल्य, विनम्रता व करुणा के निर्मल स्त्रोत। आचार्य महाप्रज्ञ ने आजीवन सम्पूर्ण विश्व को अपने मौलिक चिंतन व आध्यात्मिक प्रकाश से आलोकित किया।

महाप्रज्ञ ने युग की नब्ज को पहचाना, युग को तत्कालीन संदर्भों में नूतन संदेश दिया। उनकी वैचारिकता में युग विचार मुखर होते गए, वाणी में युग बोलता था। अपनी महत्ता व दिव्यता से न केवल मानव जाति अपितु वायुमण्डल को दिव्यतम रूप में आलोकित किया।

उनकी उदारता निस्पृहता, गुरु के प्रति सर्वात्मकता, समर्पण, विनम्रता, निश्छलता, प्रसन्न-मुद्रा जन-जन के आकर्षण का केन्द्र थी।

प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अहिंसा प्रशिक्षण जैसे उपक्रमों से विभिन्न समस्याओं का समाधान देकर आपने विश्व पर महान उपकार किया।

महाप्रज्ञ का साहित्य वर्तमान युग की समस्याओं, तनाव, असंवेदनशीलता, आवेश, आवेग, अवसाद, आतंकवाद, हीनभावना, घृणा, धोखाधड़ी, अप्रामाणिकता एवं अशांति से स्थायी समाधान देता है।

पुरानी कथाओं के स्थान पर जीवन्त अनुभूतियों, नए वैज्ञानिक स्त्रोत आदि की आम आदमी के जीवन में उपयोगिता को ध्यान में रखकर नवनिर्माण किया। अनेकांत को व्यवहारिक स्वरूप प्रदान किया। धर्म, विज्ञान को एक धरातल प्रदान किया। तभी पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ एक ऐसा ग्रंथ लिख सके। भीतर की अनुभूतियां समृद्ध हो सकी तभी वो आज धर्म को वैज्ञानिक स्वरूप दे पाए। भगवान महावीर

को वर्तमान जीवन शैली से जोड़ पाए। वैज्ञानिकता की अनिवार्यता के साथ उसका तारतम्य बनाने का मार्ग प्रशस्त कर सके। इसलिये समय-समय पर उन्हें अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया। राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव, लोक महर्षि, महात्मा, शांतिदूत, धर्मचक्रवर्ती आदि संबोधन महाप्रज्ञ से जुड़कर धन्य हो गए।

जिस धर्मसंघ का नेतृत्व आचार्य महाप्रज्ञ कर रहे थे, वह पंथ नितांत अध्यात्म प्रधान है। उस पंथ की अहिंसा की अवधारणा भी मूलतः आध्यात्मिक ही है। इसलिये कुछ लोगों का मत था कि आचार्य महाप्रज्ञ सामाजिक सरोकारों की चिंता शायद नहीं करते हों किन्तु यह धारणा सर्वथा निर्मूल सिद्ध हुई। जब उन्होंने देखा कि हिंसा के अनेक कारणों में भुखमरी भी एक बड़ा कारण है तो उन्होंने अहिंसा प्रशिक्षण पर जोर दिया। अहिंसा की मूल अवधारणा की जानकारी के लिये आपने अहिंसा यात्रा प्रारंभ की, जिसमें आपने जाना कि हिंसा के मूल कारण क्या हैं? इसी के निरूपण के लिये अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र प्रारम्भ किये गये, जिसमें रोजगार का प्रशिक्षण दिया गया। अध्यात्म व मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिये आपने जीवन भर यायावर का पथ चुना। अपने कोमल पावों से पूरे देश को नापा तथा देशवासियों को तनावमुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी।

आचार्य महाप्रज्ञ अतिन्द्रिय चेतना के धनी थे। वे विज्ञान, मनोविज्ञान, पराविज्ञान, दर्शन, अर्थशास्त्र, भौतिक शास्त्र, शरीर विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान आदि के प्रखर ज्ञाता थे। देश के चोटी के विद्वान आपके अद्भुत ज्ञान से चमत्कृत व विस्मित थे?

सच तो यह है कि अनेकांत के प्रयोक्ता होने के नाते आचार्य महाप्रज्ञ में अनेक परस्पर विरोधी तत्वों का ऐसा समन्वय था, जिसे साधारण बुद्धि से समझना कठिन है। चार-चार घंटे निरंतर ध्यान में रहने वाला व्यक्ति देश के शीर्षस्थ राजनेताओं का जब मार्गदर्शन करता था, तो कलीकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य और रघुवंशी राजाओं के गुरु वशिष्ठ का स्मरण हो जाता था। प्रवचन गंगा के समय आचार्य कुन्दकुन्द का बोध होता। अनेकांत की मीमांसा में अखंड ब्रह्मांड के रहस्यों का जब अनावरण होता तो सहसा महर्षि व्यास का भ्रम हो, श्रोता अनजाने लोक में पहुंच जाता। दर्शन की गंभीरता को जिस सरलता से आचार्यवर प्रस्तुति देते श्रोताओं को सहजता से गम्य हो जाता। साहित्य लेखन में सहजता, सत्यता, सरसता, एकरूपता, गंभीरता व वैज्ञानिकता का समावेश होता। सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण जैन आगम संपादन का एक ऐसा दुष्कर कार्य आपने हाथ में लिया, जो युगों-युगों तक अविस्मरणीय रहेगा। उसे आपने पूर्ण प्रामाणिकता व ईमानदारी से पूर्ण किया, जिसे देखकर देश ही नहीं विदेशों के विद्वजजन भी चकित व विस्मित रह गए।

वस्तुतः अतुलनीय संत आचार्य महाप्रज्ञ का निर्वाण केवल धर्मसंघ ही नहीं वरन पूरे राष्ट्र व विश्व के लिए एक अपूरणीय क्षति है। हमने एक ऐसा संत खोया है जिसमें वास्तव में संतति के दर्शन होते थे। एक ऐसा रत्न जिसकी आभा अलौकिक थी, ऐसी दिव्य ज्योति जिसका प्रकाश सर्वत्र था। आज हमसे दूर, बहुत दूर अनन्त में विलीन हो गई।

प्रखर साहित्यकार इकराम राजस्थानी ने अपनी श्रद्धा को शब्दों में उड़ेलते हुए जो पंक्तियां लिखी है, वो हृदय को झंकृत कर देती है। इन चार लाइनों में आचार्य महाप्रज्ञ का सम्पूर्ण जीवन दर्शन झलकता है

''सांस-सांस सुमिरन करे, जो मन अरिहन्त हुआ है,

मानवता के माथे का चंदन, एक संत हुआ है,

दिव्य ज्योति का जहां हमेशा ज्ञान यज्ञ होता है,

जो जीवन का अर्थ समझ ले महाप्रज्ञ होता है।''

यह विडम्बना ही है कि आचार्य महाप्रज्ञ को जितना जैन समाज नहीं परख पाया, उतना देश-विदेश के ख्यातनाम विद्वानों, संतों, महर्षियों ने उन्हें पहचानकर मान दिया इसलिये उनकी कमी सारे विश्व को खलेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ आज दैहिक रूप से हमारे मध्य विद्यमान नहीं है परन्तु वास्तव में चिंतन करें तो महाप्रज्ञ अजर-अमर ज्योति पुंज बनकर महाश्रमण में ही विलीन हो गए। जो कभी मोहन से मुदित बना बाल साधक, तुलसी चरणाम्बुज का चाकर और आचार्य महाप्रज्ञ की ऊर्जा शक्ति का स्त्रोत वह मुदित मुनि, आचार्य महाश्रमण बन गया। जो स्वयं अजर-अमर है। क्योंकि जन्म तो महाश्रमण का भी नहीं हुआ। जैसे महाप्रज्ञ का अवतरण आचार्य तुलसी की चिंतनधारा का आधार है, वैसे ही आचार्य महाश्रमण गुरुदेव तुलसी की दिव्य दृष्टि का चिराग व आचार्य महाप्रज्ञ की वाणी का महाप्रसाद है, जो मानवता को उस युग पुरुष का उपहार है।

''देवरमण''
गंगापुर, भीलवाड़ा (राज.) 311801

याद हमें आ जाती है

सूरज बहुत दूर है फिर भी
किरणें हम तक आ जाती हैं।

महाप्रज्ञ भी ब्रह्मलीन हैं
प्रेरित बातें कर जाती हैं।

उनके कथनों से नैतिकता के
पथ पर दृष्टि टिक जाती है।

सुविचारों की थाती से
जीवन में ऊर्जा आती है।

महाप्रज्ञ के पदचिह्नों से
राहें हमको मिल जाती हैं।

अनायास युगद्रष्टा की
याद हमें आ जाती है।

● हुकमचंद सोगानी
श्रीपाल प्लाजा, द्वितीय माला
फ्लैट नं. 201, महावीर मार्केट
नई पेठ, उज्जैन - 456006 (म.प्र.)

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति क्यों थे इतने आकर्षित

ललित गर्ग

डॉ॰ ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम राष्ट्रपति बनने के साथ नई सहस्त्राब्दी में भारत को एक शक्ति संपन्न राष्ट्र बनाने के एक अभिनव स्वप्न को संजोये हुए सक्रिय हैं। वे भारत को परमाणु शक्ति-संपन्न राष्ट्र बनाने के लिए चर्चित हुए लेकिन अपनी पहली मुलाकात में महान दार्शनिक संत एवं अहिंसा के संदेशवाहक आचार्य महाप्रज्ञ ने उन्हें अध्यात्म साधना केन्द्र, महरौली में भारत को शक्ति के साथ अध्यात्म संपन्न राष्ट्र बनाने की जिम्मेदारी सौंप दी। उन विलक्षण क्षणों के साथ ही एक ऐसा ऐतिहासिक और अभिनव उपक्रम शुरू हुआ।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एवं आचार्य महाप्रज्ञ वार्ता करते हुए

जिसमें विज्ञान के शिखर पुरुष डॉ॰ कलाम और अध्यात्म के शिखर पुरुष आचार्य महाप्रज्ञ भारत को एक आध्यात्मिक और वैज्ञानिक राष्ट्र बनाने के लिए जुट पड़े। दोनों ही महापुरुषों के संयुक्त लेखन में एक पुस्तक भी लिखी है जिसमें भारत को 2020 तक एक समृद्ध और शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में विकसित करने की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी।

समृद्ध एवं शक्ति संपन्न राष्ट्र के स्वप्न को लेकर डॉ॰ कलाम वर्ष में 3-4 बार आचार्य महाप्रज्ञ से आध्यात्मिक प्रेरणा एवं मार्गदर्शन लेते थे। इसी शृंखला में वे गुजरात के सूरत और अहमदाबाद एवं महाराष्ट्र की मुंबई महानगरी में अपने विशिष्ट कार्यक्रम एवं उद्देश्यों को लेकर यात्रा कर चुके हैं। 15 अक्टूबर, 2003 को राष्ट्रपति डॉ॰ कलाम ने अपना जन्मदिन सूरत में मनाया और इस दिन आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आध्यात्मिक नेताओं और विद्वानों ने राष्ट्रपति कलाम के 2020 के समृद्ध भारत के सपने और उससे जुड़े पाँच सूत्रीय कार्यक्रमों पर गंभीर एवं गहन चर्चाएं की थी। इसकी निष्पत्ति देश के लिए एक सुखद एवं शुभ शुरुआत रही कि इससे यूनिटी ऑप माइंड (दिमागों की एकता) यानि सांप्रदायिक सौहार्द, आपसी भाईचारा, प्रेम एवं सद्भावना का एक अनूठा वातावरण बना और इस तरह का वातावरण बनाने के लिए ''फाउंडेशन फॉर यूनिटी ऑफ रिलिजियंस एंड इनलाइटेंड सिटीजनशिप'' के रूप में एक संगठित कार्यक्रम की शुरुआत हुई। गुजरात के सांप्रदायिक दंगों के बाद उत्पन्न आपसी कटुता, घृणा, नफरत, द्वेश और हिंसा को खत्म करने के लिए आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में डॉ॰ कलाम द्वारा किये गये प्रयासों के सार्थक परिणाम आये।

आखिर डॉ॰ कलाम आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति इतने आकर्षित क्यों हुए? यह एक ऐसा प्रश्न है जिससे रूबरू होना जरूरी है। अपनी पहली मुलाकात में आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व से डॉ॰ कलाम इसलिए प्रभावित हुए कि वह मुलाकात पोखरण में परमाणु विस्फोट के एक दिन बाद दिल्ली में आयोजित हुई। उस समय जब समूची दुनिया और देश के विशिष्ट जन डॉ॰ कलाम को इस सफल परीक्षण के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं दे रहे थे तब आचार्य महाप्रज्ञ ने उनसे कहा कि आपने शक्ति का परीक्षण किया है, अब शांति के परीक्षण की ओर अग्रसर होना है। क्या आप शांति के लिए कोई मिसाईल बनायेंगे? आचार्य महाप्रज्ञ की वह प्रेरणा डॉ॰ कलाम को असमंजस की स्थिति में ले गयी और ऊहापोह की स्थिति से वे लंबे समय तक जूझते रहे, क्योंकि डॉ॰ कलाम के लिए परमाणु हथियारों को बेअसर तथा प्रभावहीन कर देने की यह जीवन की सर्वाधिक विषम चुनौती थी। डॉ॰ कलाम ने इस चुनौती को

स्वीकार किया और राष्ट्रपति बनने के बाद वे अहिंसा के संदेश और व्यवहार को जनव्यापी बनाने एवं हिंसा की संहारक शक्ति को कम करने के विशिष्ट अभियान में जुट पड़े।

आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति डॉ॰ कलाम का आकर्षण अकारण नहीं था क्योंकि उन्हें आचार्य महाप्रज्ञ के परिपार्श्व में ऐसे कार्यक्रम और जीवन मूल्य प्राप्त हुए जिनमें संपूर्ण मानवता के कल्याण और उन्नयन के सूत्र निहित थे। इसके साथ ही वे प्रेरणाएं भी रहीं जो मानवता के प्रबल हिमायती एवं अहिंसा के मसीहा आचार्य महाप्रज्ञ ने उन्हें दी, जैसे गुजरात के दंगों के संदर्भ में आचार्य महाप्रज्ञ का यह कथन कि–''कुछ लोगों के अपराध के कारण से समूची जाति को दोषी नहीं ठहराया जा सकता।'' उन्हें तल तक छू गयी। इसके साथ ही विकास की अवधारणा में अहिंसा की भूमिका एवं सभी धर्मों के त्यौहारों में आपसी सहभागिता आदि की प्रेरणाएं उल्लेखनीय रहीं।

अध्यात्म और विज्ञान के दोनों शिखर पुरुषों में कई समानताएं थीं। आचार्य महाप्रज्ञ धर्मगुरु होने के बावजूद विज्ञान के घोर हिमायती थे। डॉ॰ कलाम वैज्ञानिक होते हुए भी धर्म को सही मायने में जीते थे। दोनों शिखर पुरुष धर्म को अध्यात्म से जोड़ना चाहते थे। दोनों प्रयोगधर्मा थे। डॉ॰ कलाम जहाँ राष्ट्रपति भवन को प्रयोगशाला में तब्दील कर वे घंटों-घंटों नए-नए प्रयोग व अनुसंधान करते हैं। वहीं आचार्य महाप्रज्ञ अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय को केवल विचार के स्तर पर ही नहीं, व्यावहारिक स्तर पर उसके प्रयोग प्रस्तुत करते रहे। प्रेक्षाध्यान एक ऐसा अवदान है जो अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय का प्रतीक है। प्रेक्षाध्यान के प्रयोग से अध्यात्म को नवजीवन प्राप्त हुआ है। जो लोग धर्म को रूढ़ि ढकोसला या आडंबर मात्रा मानकर उससे दूर रहने का प्रयास करते थे, धर्म के प्रति जिनकी कोई आस्था और रुचि नहीं रह गई थी। प्रेक्षाध्यान के माध्यम से वे लोग फिर से अध्यात्म की ओर लौटने लगे। आचार्य महाप्रज्ञ ने शिक्षा जगत् के सामने भी जीवन विज्ञान रूप में एक नया प्रकल्प प्रस्तुत किया। जिसका उद्देश्य आने वाले समय में ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना था जो आध्यात्मिक भी हो और वैज्ञानिक भी। कोरा आध्यात्मिक व्यक्ति समाज व राष्ट्र के लिए ज्यादा उपयोगी नहीं होता। अध्यात्मविहीन वैज्ञानिक भी समाज विकास में सहायक नहीं हो सकता। अपेक्षा है कि एक ही व्यक्तित्व में ये दोनों तत्त्व एक साथ निर्मित हों।

राष्ट्रपति डॉ॰ कलाम जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान के उपक्रम से इतने प्रभावित रहे कि वे मानसिक रूप से अविकसित बच्चों के विकास हेतु इनके प्रयोगों को एक आशा की किरण के रूप में स्वीकारते हैं और इस प्रकार के अनुसंधान में प्रेरणा मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। डॉ॰ कलाम का प्रत्येक कार्य सार्थक एवं सोद्देश्य होता है। उनकी सादगी एवं समर्पण बेजोड़ है। उनके हर कर्म का ध्येय राष्ट्र को शक्तिशाली बनाना है। नये भारत के निर्माण के संकल्प को लेकर वे निरंतर प्रयासरत है। यह एक सुखद संयोग है कि राजनीति के शीर्ष व्यक्तित्व के माध्यम से आध्यात्मिक क्रांति की बात हुई। वहीं अध्यात्म के शिखर पुरुष के माध्यम से राजनैतिक और आर्थिक क्रांति की सार्थक पहल की गयी। जब ऐसे सुखद संयोग सामने आते हैं तो निश्चित ही नये निर्माण और संकल्पों की बुनियाद रखी जाती है। अध्यात्म के लिए तो भारत दुनिया में चर्चित रहा ही है लेकिन अब आर्थिक विकास और शक्तिसंपन्नता की दृष्टि से भी वह शिखर पर आरोहण कर रहा है, यह सुखद है। लेकिन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आर्थिक-अध्यात्मिक विकसित राष्ट्र के रूप में भारत एक लम्बी छलांग लगाने में सक्षम बन रहा है। राष्ट्रपति डॉ॰ कलाम 4 जुलाई, 2005 को आचार्यश्री महाप्रज्ञ के 86वें जन्मदिवस पर व्यक्तिशः बधाई देने अध्यात्म साधना केन्द्र दिल्ली पहुँचे। वहाँ उन्होंने दुनिया को बेहतर बनाने की दिशा में आचार्य महाप्रज्ञ के साथ संयुक्त रूप से लिखी गये ग्रंथ के बारे में आचार्यश्री से चर्चा की तथा राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के बारे में गहन चिंतन किया। दोनों शिखर पुरुषों के मधुर मिलन ने मानवता के हित कल्याण के लिए नए दरवाजे खोले।

डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने सरदारशहर में महान जैन संत आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। वे दिल्ली से कार द्वारा सायं 3.00 बजे पहुँचे। वह सीधे वहाँ पहुँचे जहाँ आचार्यश्री का पार्थिव शरीर जनता के दर्शनों के लिए रखा गया था। वे आचार्य महाप्रज्ञ के उत्तराधिकारी आचार्य महाश्रमण से मिले। ''दि फैमिली एंड दि नेशन'' पुस्तक के रचियता दार्शनिक संत आचार्य महाप्रज्ञ को डॉ. कलाम ने अपनी भीगी पलकों से भावभीनी श्रद्धांजलि दी। डॉ. कलाम ने कहा आचार्यश्री अपने संदेशों के द्वारा अहिंसा और समाज में नैतिक मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठापना के लिए मानव सेवा करते रहे हैं। आचार्यश्री ने विभिन्न समुदाय और धर्मों के प्रमुख धर्मावलंबियों से संपर्क कर भारत में सद्भावपूर्ण वातावरण तैयार किया। जिसके फलस्वरूप सभी धर्मों की पारस्परिक एकता की नींव को बल मिला।

इस अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने कहा कि हम सभी आचार्य महाप्रज्ञ के साम्प्रदायिक सौहार्द के मिशन को जारी रखेंगे।

आचार्य महाप्रज्ञ की 91वीं जन्म जयंती राष्ट्रीय सेमिनार के रूप में 14 जून 2010 को फिक्की ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में आयोजित की गयी। डॉ. कलाम ने उसमें भाग लिया एवं आचार्य महाप्रज्ञ को याद करते हुए कहा कि दार्शनिक संत आचार्य महाप्रज्ञ को सदियों तक याद किया जायेगा।

ई-253, सरस्वतीकुंज अपार्टमेंट्स
25, आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-92

मन से आगे हैं भावधारा

6 अगस्त 2007 को दिल्ली दूरदर्शन ने आचार्य महाप्रज्ञ का विशेष साक्षात्कार लिया। दूरदर्शन की ओर से श्रीमती नीलम शर्मा ने सवाल पूछे। उनका समाधान आचार्य महाप्रज्ञ ने इस प्रकार दिया

नीलम शर्मा : बहुत-बहुत स्वागत है आचार्य महाप्रज्ञजी आज हमारे खास कार्यक्रम में। दस साल की उम्र में आपने अपना घर छोड़ दिया। दस वर्ष की उम्र में बच्चे खेलते हैं, कूदते हैं, आपने संसार को त्याग दिया, उसकी मोह-माया से अलग हो गए और एक कठिन रास्ता पकड़ लिया। कैसा रहा आपका यह सफर?

आचार्य महाप्रज्ञ : मैं इसे नियति मानता हूँ। इसकी व्याख्या नहीं की जा सकती कि मैंने घर क्यों छोड़ा? यह अवश्य हुआ कि जब मैं आठ-दस वर्ष का था, तब एक योगी आया। उसने कहा 'यह बच्चा बड़ा योगी बनेगा। मैं उस समय न योगी शब्द को जानता था ओर न योग को। छोटे गांव में रहता था। वहाँ कोई स्कूल भी नहीं था। कभी स्कूल में गया भी नहीं, पर एक अंतःप्रेरणा जागृत हुई, किसी मुनि द्वारा कोई संकेत मिला और मैंने मुनि बनने का संकल्प कर लिया। अपनी माताजी के साथ मैंने संकल्प लिया और मैं दस वर्ष की अवस्था में तेरापंथ के आठवें आचार्य कालूगणी के पास दीक्षित हो गया।

नीलम शर्मा : आपने अपने ही मन से सोचा और चल दिये तो घरवालों ने कहीं कोई विरोध नहीं किया?

आचार्यश्री : घरवालों ने विरोध थोड़ा-बहुत किया, पर संकल्प मजबूत होता है तो घरवाले भी झुक जाते हैं। संकल्प मजबूत बन गया। अब कैसे बना? उसकी व्याख्या करने के कारण भी मेरे पास नहीं हैं, किंतु मैं नियति में बहुत विश्वास करता हूँ कि कुछ ऐसी नियति, नियम होते हैं, कुछ प्राकृतिक सार्वभौम नियम होते हैं, उनकी व्याख्या नहीं की जा सकती, पर घटना हो जाती है, इतना मैं जानता हूँ।

नीलम शर्मा : जब आप आ गए, मुनि दीक्षा स्वीकार कर ली, कैसा रहा वह आपका अनुभव?

आचार्यश्री : अनुभव बहुत अच्छा रहा। प्रारंभ से ही आचार्य तुलसी के पास रहा। उनसे शिक्षा-दीक्षा प्राप्त की और अध्यात्म के प्रति एक गहन रुचि जागृत हो गई। मैं उसमें काम करता रहा। अध्ययन भी चला। संस्कृत प्राकृत का गंभीर अध्ययन चला और भाषाओं का भी चला। अध्ययन भी चलता गया, साथ-साथ अध्यात्म के प्रयोग और साधना भी करता रहा। मैं यह कह सकता हूँ कि मैंने आंतरिक आनंद का स्पर्श किया है। इसका मुझे बड़ा संतोष है।

नीलम शर्मा : उस वक्त हजारों श्लोक आपने कंठस्थ कर लिये। अगर हम यह कहें कि साधारण बच्चों से निश्चित रूप से तुलना नहीं की जा सकती, लेकिन यह जो मन का संकल्प होता है, क्या इसकी कोई परिभाषा दे सकते हैं?

आचार्यश्री : मन का संकल्प और उससे भी आगे है हमारी भावधारा, भाव जगत। भावतंत्र हमें संचालित करता है। भावतंत्र का संबंध सूक्ष्म जगत के साथ बहुत है। हमारा एक सूक्ष्म जगत भी है। यह हमारी स्थूल शरीर की रचना है। इसके भीतर एक सूक्ष्म रचना है, जिसे बहुत कम लोग समझ पा रहे हैं, वहाँ सं संचालित होता है। मैं मानता हूँ कि उसकी प्रेरणा व्यक्ति को एकदम विकास की ओर ले जाती है। मन भी उतना समर्थ नहीं है, जितना समर्थ है हमारा भाव। भाव पर हमने बहुत काम किया है, भाव को समझने का प्रयत्न किया है। मुझे लगता है कि मैं शायद भाव को लेकर ही जन्मा था।

नीलम शर्मा : हम जानते हैं कि गणाधिपति तुलसी आपके गुरु रहे। आपका और उनका जो संबंध है, ऐसा संबंध गुरु और शिष्य का विरल देखने में आता है। कैसे याद करते हैं आप उन्हें?

आचार्यश्री : यह भी एक संयोग की बात थी कि आचार्य तुलसी का मेरे प्रति पूर्ण विश्वास था और मेरी उनके प्रति अगाध श्रद्धा थी। श्रद्धा और विश्वास जहाँ दोनों का योग होता है, वहाँ एक तीसरी बात पैदा हो जाती है। वह एक अज्ञात जगत को जानने की संभावना और प्रेरणा बन जाती है। मुझे लगा कि मैं ज्ञात जगत में रह रहा हूँ किंतु मेरी अंतरयात्रा अज्ञात जगत की हो रही है। उनसे मुझे बहुत कुछ जानने को मिला। लोग आश्चर्य भी करते हैं कि जो बच्चा कभी स्कूल में गया नहीं, पढ़ा-लिखा नहीं, यहाँ तक कैसे पहुँच सकता है? यह प्रश्न तभी होता है जब हम अज्ञात जगत को नकार रहे हों। अगर अज्ञात जगत को स्वीकार करें तो बहुत कुछ हो सकता है। जो अकल्पित असंभावित है, वह कल्पित और संभावित बन सकता है।

नीलम शर्मा : किसी से दीक्षा लेते हैं, शिक्षा लेते हैं, किसी को गुरु मान लेते हैं। गुरु जो कहता है वह हम करते हैं, किंतु कई बार उसमें गलतियां हो जाती हैं। कभी-कभी गुरु से डांट भी पड़ती है। कभी आपके साथ भी ऐसा हुआ कि कुछ ऐसे पल गुजरे हों जो डांट के क्षण रहे हों?

आचार्यश्री : हाँ! जब हम छोटे थे तब कभी-कभी ऐसा होता था। डांट पड़ती थी, उसका कारण था कि पढ़ने में मन नहीं लगता था। दस वर्ष तक

खेल-कूद में रहा, कुछ काम नहीं था। गांव के दस-बीस बच्चों के साथ हम खेलते रहते। न पढ़ना, न और कुछ काम। आज तो छोटे बच्चे को नियोजित कर दिया जाता है?

नीलम शर्मा : ट्यूशन लगा देते हैं।

आचार्यश्री : हाँ! लगा देते हैं। हमें कोई काम नहीं था। हम खेल-कूद में ही रहे। यकायक पढ़ने में मन लगना मुश्किल था। दो-चार वर्ष ऐसे ही चले। बाद में यह सब समाप्त हो गया। न कोई डांट, न कुछ और। कार्य आगे बढ़ता चला गया।

नीलम शर्मा : अणुव्रत आंदोलन जो कि आचार्य तुलसी ने शुरू किया, उस आंदोलन को आपने आगे बढ़ाया, उसको लेकर कई पदयात्राएं कीं। यह जो अणुव्रत आंदोलन है, इसका सार क्या है? और आज की दुनिया के परिप्रेक्ष्य में देखें तो आप इसका रिलेवेन्स कैसे देखते हैं?

आचार्यश्री : मैं मानता हूँ कि अणुव्रत की सदा प्रासंगिकता रही है। वह कभी अप्रासंगिक नहीं बनता। आज तो और अधिक प्रासंगिक है। जब चारों तरफ अनैतिकता और भ्रष्टाचार है, तब अणुव्रत की और प्रासंगिकता बढ़ जाती है। अणुव्रत का मतलब है नैतिकता की आचारसंहिता। उसकी सदा अपेक्षा थी, है और रहेगी। समाज रहेगा तो नैतिक आचार संहिता आवश्यक रहेगी, इसलिए अणुव्रत प्रासंगिक है। हमने अणुव्रत को और कई नये आयाम दिये हैं, जिससे उसकी व्यापक पृष्ठभूमि बन जाए।

नीलम शर्माः हम जानना चाहेंगे कि इसका मूल मंत्र क्या है, तो आप क्या कहेंगे?

आचार्यश्री : अणुव्रत का मूल मंत्र है व्यक्ति-व्यक्ति में एक नई चेतना और नैतिकता के प्रति निष्ठा जागे, प्रामाणिकता जागे। अप्रामाणिक कार्य कोई व्यक्ति न करे। आचार्य तुलसी ने इसे बहुत स्पष्ट किया कि जो धर्म पंथों में है, ग्रंथों में है, धर्मस्थानों में है, किंतु जीवन-व्यवहार में नहीं है, बाजार में अधर्म चलता है, कार्यालयों में नैतिकता नहीं चलती, अधर्म चलता है। यह ग्रंथों का, पंथों का और धर्मस्थानों का धर्म हमारे काम नहीं आएगा, जब तक कि जीवन व्यवहार में धर्म न आए। एक बहुत महत्त्वपूर्ण सवाल है कि धार्मिक के दो चेहरे बन गए। धर्मस्थान में एकदम पवित्र हो जाता है और कर्मस्थान में आता है, वहाँ किसी का गला काटने में भी संकोच नहीं करता। यह जो दोहरा व्यक्तित्व बन गया, इसको समाप्त करना और मनुष्य में नैतिकता, प्रामाणिकता और ईमानदारी की चेतना को जागृत करना इसका मूल मंत्र है।

नीलम शर्मा : महाप्रज्ञजी! आप सही कह रहे हैं। यही वजह है कि शायद आज हम अच्छे डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक तो पैदा करते हैं, लेकिन अच्छे इंसान नहीं। अच्छे इंसान होने की शिक्षा नहीं मिल पा रही है। यही वजह है कि जो पढ़े लिखे लोग हैं, वे अपराध करते हैं, घोटाले करते हैं और दस तरह के खराब काम करते हैं। वहाँ कमी पाते हैं? और क्या इसका समाधान समझते हैं?

आचार्यश्री : आचार्य तुलसी ने बंगाल और बिहार की यात्रा की थी, हम लोग पटना गए। पटना यूनिवर्सिटी में स्वागत का कार्यक्रम था। उस समय राज्यपाल थे जाकिर हुसैन, वे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे और प्रमुख वक्ता थे रामधारीसिंह दिनकर। जाकिर हुसैन ने एक बात कही 'आचार्यजी! हमारा देश विकास कर रहा है, बड़े-बड़े कारखाने स्थापित हो रहे हैं। पंडित नेहरू का इस पर बहुत बल है, सबकुछ हो रहा है, किंतु अच्छा आदमी पैदा नहीं हो रहा है। मैं आपका इसलिए स्वागत करता हूँ कि आपने अणुव्रत के माध्यम से मनुष्य के निर्माण का कारखाना खोला है।'

मैं मानता हूँ कि जब तक हम शिक्षा पर गंभीर चिंतन नहीं करेंगे, अच्छे आदमी पैदा नहीं हो सकते। अच्छे आदमी के निर्माण के दो ही कारण हो सकते हैं धर्मस्थान और शिक्षा। धर्मस्थान में भी यह काम नहीं हो रहा है। यह कहने में मुझे संकोच नहीं कि धर्म जितना बाहरी क्रियाकांडों में उलझा हुआ है, जितना असांप्रदायिक आग्रहों में उलझा हुआ है, उतना अच्छे आदमी के निर्माण की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। उसको तो हम नकार दें।

दूसरा है शिक्षा। शिक्षा में भी अच्छा आदमी बनने का कोई प्रावधान नहीं है। अच्छा व्यापारी आदि बन सकता है। कुछ कर सकता है। जीविका के लिए और धन कमाने के लिए अच्छी क्षमता चल सकती है। आज स्किल और एफिसिएंसी इन दो पर सारा अटका हुआ है। शिक्षा भी उसी दिशा में जा रही है। इसीलिए हमने शिक्षा के साथ

जीवन विज्ञान की कल्पना की। उसका मूलमंत्र यह है कि जब तक हमारा भावात्मक विकास नहीं होगा, तब तक चरित्र का विकास नहीं हो सकता। बड़े-बड़े पढ़े-लिखे लोग अपराध में चले जाते हैं, इसका कारण है कि वे बुद्धिमान हैं, उनका बौद्धिक विकास हुआ है, किंतु भाव की दृष्टि से बहुत कमजोर हैं। उसका विकास नहीं हुआ है, इसीलिए अपराध करते हैं। जिनका भावात्मक विकास होता है, सारे भाव सकारात्मक बन जाते हैं, विधायक बन जाते हैं वे लोग समस्या आने पर भी गलत आचरण नहीं करते।

नीलम शर्मा : लेकिन आचार्यजी! भाव का विकास कैसे होगा? आजकल की जो जिंदगी है, वह इतनी तेज भाग रही है, उसकी इतनी जरूरतें हो गई कि आदमी उसी में उलझा रहता है। वह समझता है कि शायद उसी में उसको जीवन का सब मिल जाएगा, जो कि सच नहीं है।

आचार्यश्री : यह भावात्मक विकास शिक्षा के साथ होना चाहिए। उस समय कोई व्यापार में लगा नहीं रहता। शिक्षा में ही लगा रहता है। विद्यार्थी पढ़ता है तो केवल बौद्धिक विकास न हो, भावात्मक विकास भी हो। वह एक पूरी हमारी प्रायोगिक पद्धति है कि जो आंतरिक जैव रसायन हैं और अंतःस्रावी ग्रंथियों के स्राव, नाड़ी तंत्र, मस्तिष्क और मस्तिष्क के बहुत सारे न्यूरोट्रांसमीटर, प्रोटीन इन सबको मिलाकर तथा अध्यात्म और योग सबका समन्वय कर हमने पद्धति तैयार की है, जिसका नाम दिया है जीवन विज्ञान। यह प्रमाणित हो चुका है कि जहाँ जीवन विज्ञान की शिक्षा चलती है, वहाँ चरित्र का विकास होता है।

आज ही संवाद मिला कि कर्नाटक राज्य में जीवन विज्ञान का बहुत व्यापक काम हो रहा है। वहाँ सरकार ने भी और यहाँ तक कि मुस्लिम समाज ने भी जीवन विज्ञान को अपने मदरसों में पढ़ाने का संकल्प किया है। चरित्र विकास का तंत्र दूसरा है। मुझे आश्चर्य होता है कि हमारे शिक्षा शास्त्रियों ने बायोलोजिकल आस्पेटक्ट से विचार कम किया है। कैसे जैविक परिवर्तन से चरित्र का विकास हो सकता है? केवल बौद्धिक स्तर पर सारा चिंतन हुआ है और निश्चित मानता हूँ कि बौद्धिक स्तर पर चरित्र का विकास लगभग असंभव है। वह हो सकता है भाव परिवर्तन द्वारा और उसका कोई प्रयोग नहीं है।

हमने देखा जहाँ जीवन विज्ञान का प्रयोग चला, वहाँ अभिभावकों की ओर से आया कि बच्चों में परिवर्तन आ रहा है। झाबुआ जिले के सौ आदिवासी विद्यार्थी हमारे पास आए। हमने उनसे बात की। साथ में शिक्षक थे। बातचीत में पूछा कि क्या परिवर्तन आया है? तो सबसे पहले षिक्षक बोले 'हमारा विद्यालय शुरू होता और आधा घंटा में खाली हो जाता है। कोई टिकता नहीं, सब भाग जाते। जीवन विज्ञान के प्रयोग के बाद हमारा विद्यालय पूरे समय चलता है।' विद्यार्थियों से पूछा तो एक बोला कि मेरा क्रोध कम हो गया, एक बोला कि मैं लड़ाई झगड़ा बहुत करता था, अब कम हो गया, मैं हिंसा करता था, कम हो गई। यह प्रत्यक्ष है और इसके प्रयोग भी हुए हैं।

नीलम शर्मा : आचार्यश्री! क्या वजह है कि आज जो धर्म को, द्वेष और वैमनस्य के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है, लोगों की भावनाएं भड़काने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। इसका नतीजा क्या निकल रहा है, यह हम देख रहे हैं। इसका समाधान क्या है?

द्वंद्वात्मक जगत है, समस्या तो आएगी। समस्या का समाधान करें, सुलझाएं, पर दुःखी न बनें। समस्या प्राकृतिक है और दुःखी बनना अपनी मूर्खता है, अपना अज्ञान है। अगर हम इतनी चेतना को स्पष्ट कर सकें कि समस्या आने पर भी दुःख न हो, सुलझाने का प्रयत्न करें तो हमारी शक्ति भी अच्छी रहेगी, पुरुषार्थ भी अच्छा होगा और हम समस्या को सुलझा पाएंगे।

आचार्यश्री : हमने इस बारे में जो अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अनुयायियों की संख्या बढ़ गई, धार्मिकों की संख्या घट गई। धार्मिक कभी लड़ाई-झगड़ा नहीं करते। मेरे पास कुछ वर्ष पहले लंदन से एक पत्रकार का प्रश्न आया था कि इतने धर्म हैं, फिर लड़ाई क्यों होती है? इतने धार्मिक हैं फिर लड़ाई क्यों होती है? मैंने उत्तर में बताया कि आप धार्मिक शब्द का प्रयोग न करें। आप यह पूछें इतने अनुयायी हैं, फिर लड़ाई क्यों होती है? अनुयायी तो लड़ेंगे ही। वे धर्म तक पहुँचे ही नहीं हैं। वह तो भीड़ है। धार्मिक लोग अगर हिंदुस्तान में एक करोड़ हों तो भी शायद स्थिति बदल जाए। इतने धार्मिक नहीं हैं। यह संख्या है धर्म के अनुयायियों की। उनका काम क्या होता है? वे न धर्म को खुद जानते हैं, न धर्म का आचरण करते हैं, न उनमें नैतिकता है, तो फिर बात-बात पर लड़ाई होती है। लड़ाई करने का भी एक कारण है। जो लड़ाई में अग्रणी होता है उसे कुर्सी भी प्राप्त हो जाती है, वह मुखिया बन जाता है। इसे मैं एक तरह का व्यवसाय मानता हूँ। यह भी व्यवसाय बन गया।

नीलम शर्मा : महाप्रज्ञजी! क्या यही वजह है कि आज विश्व में हमें शांति नजर नहीं आती, आतंकवाद नजर आता है, लड़ाई-झगड़े नजर आते हैं, बम, गोले, विस्फोट नजर आते हैं। इस विश्व शांति की जो परिकल्पना है आखिर इसका होगा क्या?

आचार्यश्री : देखिए, उसके कई कारण हैं। सांप्रदायिक कट्टरता का कारण है ही। दूसरा कारण गरीबी भी है, अभाव भी है। बहुत सारे कारण हैं। आज ही हमने समाचार पत्र में पढ़ा कि मैक्सिको अपहरण के मामले में सबसे आगे हैं। क्योंकि बेरोजगार युवक हैं उनको काम नहीं मिलता। अपहरण

करके फिरौती में लाख, करोड़ रुपया ले लेते हैं और आराम से रहते हैं। यह पूरा व्यवसाय बन गया। आतंकवाद भी एक व्यवसाय हो गया। इसलिए हमने कहा कि जब तक हम भूख की समस्या पर विचार नहीं करेंगे, आतंकवाद, उग्रवाद, हिंसा की समस्याओं को नहीं रोका जा सकता। हमें इसे अनेक कोणों से देखना होगा। एक कारण नहीं है। भूख भी एक कारण है, गरीबी भी एक कारण है, धार्मिक कट्टरता भी एक कारण है और आवेश की प्रबलता, ईमोशन बहुत प्रबल होते हैं, वह भी एक कारण है। हमें सब कारणों पर विचार करना चाहिए। अहिंसा यात्रा में हमने इन सब कारणों को पकड़ा, इन सबके आधार पर काम किया तो काफी सफलता भी मिली।

नीलम शर्मा : महाप्रज्ञजी! आजकल की जो जिंदगी है, लोगों को बड़े तनाव हैं। लोग दबावों में काम करते हैं। ऐसे में ध्यान शायद एक रास्ता हो सकता है। आपने प्रेक्षाध्यान पर काम किया है, लेकिन आजकल लोग यह कहते हैं कि ध्यान लगाने के लिए कहाँ जाएं? अब तो जंगल और पर्वत भी नहीं रहे।

आचार्यश्री : जाने की कहीं जरूरत नहीं। तनाव का एक ही कारण नहीं है। कुछ तनाव के काल्पनिक कारण हैं। कुछ वास्तविक कारण हैं, यथार्थ में होते हैं। कल्पना से भी बड़ा तनाव हो जाता है। एक पति अपनी पत्नी के प्रति संदेह करता है तो तनाव से भर जाता है। पत्नी पति के प्रति संदेह करती है तो तनाव से भर जाती है। ऐसे ही भाई-भाई का संबंध है, औरों का संबंध है। तो एक काल्पनिक तनाव शायद बहुत ज्यादा चल रहा है और कुछ यथार्थ की समस्याएं हैं। उसके आधार पर भी तनाव है। लेकिन सबसे बड़ा तनाव आज धनी बनने, उस होड़ में अग्रणी बनने और धन की सुरक्षा करने में है कि काले धन को कैसे बचा सकें? दो नंबर को कैसे रख सकें? इसमें सबसे ज्यादा तनाव है और वही तनाव आज हृदय रोग को बढ़ा रहा है, और भी बीमारियों को बढ़ा रहा है, मानसिक उलझनें भी पैदा कर रहा है।

नीलम शर्मा : महाप्रज्ञजी! हम जानते हैं कि आपका एक प्रवचन लोगों की जिंदगी बदल डालता है। एक मूल मंत्र संवाद में दीजिए, जिसको लेकर लोग यह सोचें कि हाँ, अब जिंदगी का अर्थ हमें मिल सकता है?

आचार्यश्री : एक बात को मैं बहुत महत्त्व देता हूँ। प्रेक्षाध्यान का एक मंत्र है रहें भीतर जियें बाहर। बाहर तो हमें जीना पड़ेगा। दुनिया है, उसमें जीना है, रोटी-पानी वहाँ मिलेगा, किंतु भीतर रहें, इसका अर्थ है कि हम अपनी चेतना के साथ रहें। पदार्थ का हम उपयोग करेंगे किंतु पदार्थ के प्रति हमारी आसक्ति नहीं होगी। प्रेक्षाध्यान का दूसरा सूत्र है, जिसका बहुत सफल प्रयोग हमने किया है समस्या और दुःख को एक न मानें। जीवन में समस्या तो आएगी। जहाँ द्वंद्वात्मक जगत है, समस्या तो आएगी। समस्या का समाधान करें, सुलझाएं, पर दुःखी न बनें। समस्या प्राकृतिक है और दुःखी बनना अपनी मूर्खता है, अपना अज्ञान है। अगर हम इतनी चेतना को स्पष्ट कर सकें कि समस्या आने पर भी दुःख न हो, सुलझाने का प्रयत्न करें तो हमारी शक्ति भी अच्छी रहेगी, पुरुषार्थ भी अच्छा होगा और हम समस्या को सुलझा पाएंगे। दुःखी बन जाएंगे तो पचास प्रतिशत शक्ति वहीं कम हो जाएगी।

नीलम शर्मा : बहुत-बहुत धन्यवाद। आचार्यश्री! हमारे दर्शक इस मूल मंत्र से जरूर लाभ उठाएंगे 'रहें भीतर जियें बाहर।'

प्रस्तुति : नीलम शर्मा

कला वही जो जीवनानुष्ठान से जुड़े

महाप्रज्ञजी से मेरी पहली भेंट 1986 में हुई जब आचार्य तुलसी का उदयपुर में चातुर्मास था। मैं तब कॉलेज में पढ़ रही थी। उन्होंने मुझे गृहकला में दक्ष होने को कहा। मैंने जब बताया कि गृहविज्ञान विषय ले रखा है तो वे बड़े खुश हुए। बोले संस्कारी गृहस्थ जीवन ही खुशहाल जीवन होता है। आगे जाकर तुम बालिका शिक्षा पर अपना ध्यान अधिक केन्द्रित करना।

पिछले उदयपुर चातुर्मास में जब मैंने उनसे भेंट की तो जरा सा संकेत देने पर वे मुझे भली प्रकार पहचान गये। उन्हें यह सुन बहुत अच्छा लगा कि मैं कॉलेज में चित्रकला पढ़ा रही हूं और मैंने बालिकाओं की धार्मिक अनुष्ठानपरक सांझीकला पर शोधकार्य किया है। पुस्तक देखकर उन्होंने कहा कि कला कोई हो, संस्कृति कोई हो, उसके साथ धर्म और जीवनानुष्ठान जुड़ता है तब ही वह सार्थक होती है। तुम कला की पारखी हो तो सदा धर्ममय कला और कलामय धर्म को अंगीकार किये अपना अध्ययन जारी रखना और जो भी बालिका तुम्हारे सम्पर्क में आये उसे सुधर्मी और सुसंस्कारी बनाने का प्रयत्न करना, यही जीवन की सार्थकता है।

अब जब वे नहीं हैं, मुझे उनके विचार और अधिक सार्थक, सामयिक और जीवनमूल्यों को संस्कारित करते प्रतीक हो रहे हैं। मेरे पास जो भी बालिका आती है, मैं उसे हर सहयोग देकर ही संतुष्ट होती हूं। लगता है महाप्रज्ञ हर समय मेरे साथ हैं और उनके स्मरण से मैं अपनी हर समस्या का निदान पाती हूं।

◆ डॉ. कहानी मेहता

352 श्रीकृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राजस्थान)

महाप्रज्ञ को नमन हमारा

मुनि सुखलाल

महाप्रज्ञ को नमन हमारा, नमन हमारा नमन हमारा,
कोटि-कोटि कंठों से गूंजा सत्य अहिंसा का जयकारा।

हिंसा का तूफान उठा जब गर्वीला गुजरात हिल गया,
जगन्नाथ रथयात्रा को तब एक सजौला संत मिल गया,
सब धर्मों को एक मंच पर हमने अपनी नजर निहारा।

अरब समन्दर के तट पर जब वही अहिंसा धार निराली
तब भिंडी बाजार क्षेत्र में छाई एक अजीब खुशाली
मस्जिद के द्वारे तब चमका एक दूज का चांद-सितारा
मलाबार हिल पर चमका था एक ईद का चांद सितारा

चिश्ती की दरगाह जहां पर एक संत सोया था निश्चल
एक संत दलबल से आया लेकर के जीवन की हलचल
अंजुमन महफिल में गूंजा अनहद मैत्री का इकतारा

सूरत में सिटीलाइट पर संतों की जब भीड़ लगी थी
अद्भुत आभा से फ्यूरेक की दीपशिखा उज्जवल सुलगी थी
दुनियां भर में हुआ उजागर तेरापंथ भवन का तारा

महलों में रहकर भी जिसने नहीं झोपडी को बिसराया
और झोंपडी में रहकर भी महलों को सन्मार्ग दिखाया
नगर-नगर ओ डगर-डगर में बही अमृत करुणा रस धारा

सद्भावों के फूल खिले तब दिल्ली में भी खुशबू छाई
इसीलिए विज्ञान भवन में शासन ने हलचल दिखलाई
भारत के इतिहास गगन का एक फकीर बना ध्रुवतारा

अंतिम क्षण सरदारशहर में उमड़ा था उच्छल जन सागर
गीली थी तब अश्रुकणों से लाख-लाख नयनों की गागर
पूर्व राष्ट्रपति श्री कलाम ने अपने मुख से यही उचारा
महाप्रज्ञ को नमन हमारा।

भाव वंदन

मुनि मोहजीतकुमार

इस वसुन्धरा पर
अमल-धवल
अस्तित्व के साथ
नई संभावनाओं का जन्म
ग्रामीण परिवेश में
नये व्यक्तित्व का अवतरण।
जिन्होंने अदम्य उत्साह....
प्रबल पुरुषार्थ....
और
अविचल समर्पण की
त्रिपुटी ने
आलोकित किया
अन्तःकरण।
उसी आलोक रश्मि से
आपका कर्तृत्व
अन्त क्षितिज का
छोर छू पाया
जिसमें....
सब कुछ समाया
उसी में से प्रकटी
अटूट आस्था....
नैसर्गिक निर्मलता
चरित्र की पारदर्शिता
सत्य की सूक्ष्म पारगामिता
सहज समता
भाव प्रवणता
स्वभाव से आत्मस्थता
ऐसे....
बीसवीं, इक्कीसवीं सदी के
अप्रतिम उज्जवल आभा के धनी
महाप्राण के
महाप्रयाण की
प्रथम वार्षिकी पर
समस्त आत्म प्रदेशों का
भाव वन्दन
अन्तः नमन।

महाप्रज्ञ के योगदान को सदैव याद रखा जायेगा

मुनि गिरीशकुमार

रहे भीतर जीएं बाहर का संदेश देने वाले आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण से तुलसी-महाप्रज्ञ के युग का एक अध्याय समाप्त हो गया। आचार्य महाप्रज्ञ के योगदानों को सदैव याद रखा जायेगा।

राजस्थान के झुंझनू जिले के छोटे से कस्बे टमकोर में 14 जून 1920 को मां बालुजी (साध्वी बालुजी) की कुक्षी से आपका जन्म हुआ। पिता का नाम तोलाराम चोरड़िया था। आपका नामकरण हुआ नथमल के रूप में। 11 वर्ष की आयु में 29 जनवरी 1931 में सरदारशहर में तत्कालीन आचार्य कालूगणी के हाथों से आपने मुनि दीक्षा स्वीकार की। नामकरण हुआ मुनि नथमल। 12 नवंबर 1978 में नथमल से महाप्रज्ञ बने। 3 फरवरी 1979 में आचार्य तुलसी ने आपको अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। नामकरण हुआ युवाचार्य महाप्रज्ञ। 18 फरवरी 1994 में सुजानगढ़ में आचार्य तुलसी ने अपना पद विसर्जन करके आपको आचार्य पद पर स्थापित किया। 5 फरवरी 1995 को नई दिल्ली में अपने हाथों पदाभिषेक किया। 19 सितंबर 1999 को वर्तमान आचार्य महाश्रमण ने युगप्रधान अलंकरण से अलंकृत किया और 9 मई 2010 को मध्याह्न 2.55 पर अपनी दीक्षा भूमि पर अंतिम श्वास ली।

अहिंसा यात्रा के प्रवर्तक, दार्शनिक, साहित्यकार, महामनस्वी, ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी, प्रभावी और सक्षम आचार्य के रूप में भी आपकी पहचान बनी हुई है। वर्तमान में प्रभावक आचार्य की श्रेणी में भी आपकी एक विलक्षण पहचान बनी। प्रेक्षाध्यान के अनुसंधाता जीवन विज्ञान के मंत्रदाता, अणुव्रत अनुशास्ता, अहिंसा समवाय, फ्यूरेक आदि आपके प्रमुख अवदान बने। इन अवदानों के द्वारा संसार आपको सतत याद करता रहेगा।

जन-जन में अहिंसा का संदेश पहुंचाने वाले आचार्य महाप्रज्ञ को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, लोकमान्य महर्षि पुरस्कार, शांतिदूत पुरस्कार, महात्मा पुरस्कार, धर्म चक्रवर्ती पुरस्कार, साम्प्रदायिक सद्भाव पुरस्कार, मदर टेरेसा पुरस्कार आदि अनेकों पुरस्कार प्राप्त हुए। इतने पुरस्कार प्राप्त होने के बाद भी आचार्य महाप्रज्ञ के मन में, चेहरे पर एक सहज भाव बना रहा। उनका लक्ष्य रहा, हमको हमारा कार्य करना है।

आचार्य महाप्रज्ञ मैनेजमेंट में न केवल विश्वास ही करते थे बल्कि वे मैनेजमेंट में जीकर दिखाते भी थे। उनकी दिनचर्या पूरी की पूरी व्यवस्थित थी। किस समय साहित्य का कार्य करना, किस समय आगम का कार्य करना, किस समय श्रद्धालु जनों से बात करना, किस समय संदेश लिखवाना आदि कार्यों से उनकी दिनचर्या नियमित चलती रहती थी। आचार्य श्री महाप्रज्ञ के जीवन की एक विशेषता रही कि वे छोटे से छोटे साधु को भी याद करते तो उनके नाम के पीछे जी लगाना कभी नहीं भूलते थे। हालांकि उनके लिए जरूरी नहीं था पर यह उनका ही बड़प्पन था।

आचार्य महाप्रज्ञ का जन्म राजस्थान में हुआ इसलिए वे सहज राजस्थान वालों के थे। पर वे जब गुजरात पधारे तो गुजरात वालों ने महासूस किया कि आचार्य महाप्रज्ञ गुजरात के हैं। वैसे ही वे महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब पधारे और सभी राज्य वालों ने यह महसूस किया कि आचार्य महाप्रज्ञ हमारे राज्य के हैं। वे जिससे भी बात करते, उनकी स्नेहमयी वाणी से उनमें अपनत्व जग जाता। और वह यह महसूस करता कि आचार्य महाप्रज्ञ मेरे हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ ने 250 से अधिक पुस्तकें लिखकर सरस्वती के भंडार को समृद्ध किया। जिसमें से कई पुस्तकों का अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। 50 से अधिक पुस्तकों का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद हो चुका है। जिससे देश के साथ-साथ विदेशों में रहने वाले लोगों के मन में आपके प्रति एक सहज आकर्षण पैदा हुआ है।

आचार्य महाप्रज्ञ एक महान यायावर थे। व्यक्ति की जब अस्सी साल की अवस्था हो जाती है तब वह चारपाई पकड़ लेता है ऐसी स्थिति में आपने राजस्थान से गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, दमन, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली तक की लम्बी-लम्बी अहिंसा यात्राएं कीं। इन यात्राओं के मध्य लगभग 2500 गांवों में जन-जन के बीच जाकर अहिंसा का उपदेश दिया, नशामुक्ति की प्रेरणाएं दी, सहज जीवन जीने की प्रेरणाएं दी। आचार्य महाप्रज्ञ की अहिंसा यात्रा का काफिला जिधर से भी निकला वह क्षेत्र आज भी उस महामानव को भूल नहीं पाया है। आचार्य महाप्रज्ञ के आभामंडल से प्रभावित होकर भारत के राजनेताओं के अलावा देश का प्रबुद्ध वर्ग, बौद्धिक वर्ग, साहित्यकार पत्रकार वर्ग समय-समय पर उनके सान्निध्य में पहुंचते और मार्गदर्शन प्राप्त करते थे।

आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के पश्चात सैकड़ों व्यक्ति श्रद्धांजलि देने सरदारशहर पहुंचे। 10 साल के बच्चे से लेकर 80 साल के वृद्ध भी उस महामानव को अपनी श्रद्धांजलि देने पहुंचे। जैन समाज के चारों संप्रदायों के अतिरिक्त अनेक लेखक, साहित्यकार, पत्रकार सहित राजनीति के अनेक शीर्षस्थ व्यक्ति भी पहुंचे। आचार्य महाप्रज्ञ जाते-जाते यह विशेषता छोड़ गये कि उनके पास आने वाला न कोई कांग्रेसी है न कोई बीजेपी। सभी मानव हैं। उन्होंने राजनीति की किसी भी पार्टी से अपना व्यक्तिगत जुड़ाव महसूस नहीं कराया। इस बात को सब जान गये। उन्होंने सभी को मानवता और अहिंसा का संदेश दिया। अब हम सभी का दायित्व है कि हम उनके अवदानों को व्यक्ति-व्यक्ति तक पहुंचाये ताकि हमें आचार्य महाप्रज्ञ की स्मृति महसूस हो सकेगी और उनको संसार याद रखेगा।

पाठक दृष्टि

◆ 'अणुव्रत' पाक्षिक बराबर मिल रहा है, पढ़कर आत्मा प्रसन्न होती है। गुरुओं एवं अन्य लेखकों के लेख सभी को पढ़ता हूं। 1-15 अप्रैल 2011 के अंक में विरधीचंद पोखरना का लेख ''बनते बिगड़ते विवाह सम्बन्ध'' आज की स्थिति का सही मूल्यांकन करते हुए अच्छा सुझाव है। ''सन्तान के प्रति हमारा दायित्व'' गिरिजा सुधा का लेख भी अच्छा बन पड़ा है। ''कहां गई हमारी आत्मीयता'', ''महंगाई का दैत्य'' सही दिशा-दर्शन करते हैं। आचार्यों के लेख हमारे पर गुरु की कृपा है वह हम ग्रहण करें। अणुव्रत के बताये मार्ग पर चलें।

◆ आपका सम्पादकीय सुझाव भरा होता है। संपादकीय में आप हर समस्या को उठाते हैं वह अच्छा है। बात सम्वत 2014 सन् 1957 की है, जब गुरुदेव का चातुर्मास सुजानगढ़ में था। मैं विद्यार्थी के रूप में वहां से निकलकर 1958 में दिल्ली जा रहा था, तब प्रवेश अणुव्रती बना और 1969 में अणुव्रती बना। लिखने का मकसद है कि हमने उस समय मोहल्ले-मोहल्ले में अणुव्रत का प्रचार किया, परीक्षा भी दी। लेकिन वर्तमान में यह नहीं हो पा रहा है। जबकि आज अणुव्रत की महत्ती आवश्यकता है।

विजयसिंह कोठारी *(गांधीनगर-दिल्ली)*

◆ मैं विगत कई वर्षों से 'अणुव्रत' का पाठक हूं। मैं सामान्यतया इसके सभी लेख बड़े ध्यान से पढ़ता हूं। पत्रिका में प्रकाशित सभी बड़े स्तरीय लेख होने के साथ नैतिक मूल्यों पर आधारित होते हैं। प्रत्येक अंक में प्रकाशित आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण के साथ-साथ अन्य सामग्री भी पठनीय होती है। समसामयिक विषयों पर प्रकाशित लेखों में समसामयिक विचारों के साथ-साथ सामग्री स्तरीय होती है। यदाकदा प्रकाशित बाल रचनाएं भी बड़ी अच्छी और शिक्षाप्रद होती हैं।

मैं पत्रिका का संपादकीय बड़े मनोवेग से पढ़ता हूं। प्रबुद्ध विचारोत्पादक डॉ. महेन्द्र कर्णावट की लेखनी की जितनी प्रशंसा की जाये कम है। सरल, स्पष्ट व प्रभावी शब्दों से ओतप्रोत विचारों हेतु साधुवाद।

शिवचरण मंत्री *(अजमेर-राजस्थान)*

◆ आप द्वारा प्रेषित 'अणुव्रत' पाक्षिक के अंक 11 के संपादकीय वक्तव्य में मानवता को बचाने का संकल्प का आह्वान किया गया है। बड़ी गहरी बात है, हृदयस्पर्शी चिंतन है। मानव इस बात को अगर गले से नीचे उतार ले तो अनेक समस्याओं का समाधान संभव हो सकता है। संपादकीय में गहन चिंतन व मर्म को उजागर करने वाले तथ्य आप प्रस्तुत कर रहे हैं। धन्यवाद। अणुव्रत पत्रिका परिवार के प्रति मंगलमनीषा।

सुरेश चन्द दक *(गांधीनगर-बैंगलोर)*

◆ 'अणुव्रत' पाक्षिक का स्तर सुधरा है। सुधार के मार्ग पर है, पर बहुत बदलाव की जरूरत है। पत्रिका की यात्रा बहुत हुई है एवं बहुत संकटों से गुजरी है। विशेष रूप से ले तो ठीक रहेगा जैसे अन्य रंगीन पत्रिकाएं निकल रही हैं।

नरेन्द्र एम. रांका, *कोयम्बटूर*

◆ 'अणुव्रत' पाक्षिक मुझे बराबर मिल रही है। 1-15 मार्च 2011 के अंक में आचार्य महाश्रमण द्वारा लिखित 'मेरे लिए संघ सर्वोपरि' पढ़ा। खान-पान की शुद्धता पर बोलते हुए गुरुदेव ने कहा, भोजनालयों में जमीकन्द का प्रयोग न हो। मुख्य रूप से, मूली, आलू, गाजर, शकरकन्द लहसुन व प्याज इन छः जमीकन्द का व्यक्तिगत रूप में त्याग रहना चाहिए।

चन्दनमल चिंडालिया *(सरदारशहर-अहमदाबाद)*

◆ 'अणुव्रत' पाक्षिक 16-31 मार्च 2011 का अंक मिला प्रसन्नता हुई। कवर पर आनन्दोल्लास : होली से पाठक निश्चित ही आनंदित हुआ होगा। लेकिन अंक में होली से संबंधित सामग्री अधिक मात्रा में दी जाती तो अंक निश्चित रूप से सुरुचिपूर्ण हो जाता।

सुरेश आनन्द *(रतलाम-मध्यप्रदेश)*

राजसमंद अंचल में अहिंसा यात्रा

राजसमंद। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के आध्यात्मिक नेतृत्व में गतिशील अहिंसा यात्रा ने 7 अप्रैल 2011 को राजसमंद जिले में प्रवेश किया। भीलवाड़ा एवं राजसमंद जिले की सीमारेखा टपरिया खेड़ी पर राजसमंदवासियों ने आचार्य महाश्रमण एवं संतवाहिनी का भावभरा स्वागत किया। राजसमंद सीमा पर गुणसागर कर्णावट, सुमति मेहता, घीसूलाल पीतलिया, गणपत धर्मावत, मदन धोका, ललित बड़ोला, विधायक कल्याणसिंह चौहान, उपखंड अधिकारी राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल, तहसीलदार प्यारेलाल शर्मा, पंचायत समिति प्रधान रेखा अहीर, सरपंच गीतादेवी रेगर, भाजपा जिलाध्यक्ष नंदलाल सिंघवी, नरेन्द्र लोढ़ा, रोशनलाल जैन, डॉ. महेन्द्र कर्णावट इत्यादि ने स्वागत किया।

आचार्य महाश्रमण ने अपने वक्तव्य में कहा आज जिला बदल रहा है। सड़क के उस पार भीलवाड़ा जिला है और इस पार राजसमंद जिला। जिसका हमारे धर्मसंघ के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। राजसमंद जिले में आते ही लगता है मैं मेरी जन्मभूमि में आ गया हूं। राजनगर से आचार्य भिक्षु को बोधपाठ मिला और केलवा में आचार्य भिक्षु ने भाव दीक्षा ग्रहण कर तेरापंथ के इतिहास को शब्द दिये।

● जूणदा

टपरिया खेड़ी से 3 किलोमीटर का पादविहार कर आचार्य महाश्रमण जूणदा गांव पहुंचे। धर्मसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा मानव जीवन अमूल्य है और जीवनकाल में गलतियां अक्सर हो जाती हैं। मानव गलतियों का ही पर्याय है। गलती स्वाभाविक प्रक्रिया अवश्य है पर उसे दोहराना स्वाभाविकता नहीं है। जो मनुष्य ठोकरें खाकर भी सुधरना नहीं चाहता, उसका जीवन व्यर्थ है। सुधरने के कई मौके मिलते हैं लेकिन मानव इसके महत्व को नहीं समझता। ऐसे मनुष्य का जीवन अंधकार की ओर खिसकता जाता है।

जूणदावासियों ने आचार्य महाश्रमण को अभिनंदन पत्र भेंट किया। स्वागत समारोह में डॉ. महेन्द्र कर्णावट, डॉ. बसंतीलाल बाबेल, लक्ष्मणसिंह कर्णावट, सवाईलाल पोखरना, उत्तमचंद सुखलेचा, ललित बड़ोला, पुखराज दक इत्यादि की प्रमुख उपस्थिति रही।

● रेलमगरा

8 अप्रैल। जूणदा से प्रस्थान कर कुरज गांव को छूते हुए अहिंसा यात्रा का कारवां रेलमगरा पहुंचा। स्वागत समारोह को सांसद गोपाल सिंह शेखावत, नाथद्वारा विधायक कल्याणसिंह चौहान एवं आचार्य महाश्रमण ने संबोधित किया। आचार्य महाश्रमण ने कालू मुनि का स्मरण करते हुए कहा शिष्य को गुरु के प्रति विनय भाव रखना चाहिए, लेकिन गुरु का भी फर्ज है कि शिष्यों का पथ प्रदर्शन करें। बिना अनुशासन के जीवन नहीं चल सकता। इसके लिए संयम भी जरूरी है। जब तक निज पर शासन नहीं होगा, किसी को भी अनुशासन में रखना बहुत कठिन है। रेलमगरा उस महान संत कालू मुनि की जन्मभूमि है जिसने तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य का निर्वाचन किया था। हालांकि कालू मुनि तेरापंथ के आचार्य नहीं रहे, लेकिन वे आचार्य तुल्य थे।

धर्मसभा में जिला प्रमुख किशनलाल गमेती, हरिसिंह राठौड़, पंचायत समिति प्रधान रेखा अहीर, राजेन्द्र अग्रवाल, प्यारेलाल शर्मा, गुणसागर कर्णावट, डॉ. बसंतीलाल बाबेल, डॉ. महेन्द्र कर्णावट इत्यादि की प्रमुख उपस्थिति रही।

9 अप्रैल। प्रातःवेला में नशामुक्ति रैली का आयोजन हुआ एवं पंचसूत्रीय संकल्प पत्र आचार्यश्री को भेंट किये गये। नशामुक्ति रैली उपरांत आयोजित धर्मसभा में सुखाड़िया विश्व विद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. बी. एल. चौधरी, हिंदुस्तान जिंक दरीबा माइंस के महाप्रबंधक पी.के. जैन, भाजपा जिलाध्यक्ष नंदलाल सिंघवी, प्रकाश खेरोदिया, श्यामलाल चौहान इत्यादि उपस्थित थे।

आचार्य महाश्रमण ने नैतिक जीवन जीने एवं अहिंसात्मक जीवन शैली अपनाने पर जोर देते हुए कहा मनुष्य को ईमानदारी के साथ कार्य कर धोखा नहीं करना चाहिए। अगर मनुष्य को जीवन बचाना है तो जीवन में जुआ नहीं खेलें। मृत्यु शाश्वत है शरीर अस्थायी है लेकिन आत्मा चिरकाल तक स्थायी है। इस स्थायित्व एवं अस्थायित्व के चक्र को ही जीवन कहते हैं।

राजस्थान पत्रिका के संवाददाता से बातचीत करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा देश में फैल रहे भ्रष्टाचार के खिलाफ सबको सार्थक प्रयास करने होंगे। चाहे वह संत समाज हो या राजनीति से जुड़े लोग। यह विषय मंथन का है। इसके विरोध में जो कदम अन्ना हजारे ने उठाया है उसी पुरुषार्थ की अपेक्षा सभी वर्ग से है। संतों को सक्रिय राजनीति में उतरने की बजाय राजनीति कर रहे लोगों का पथ-प्रदर्शक बनना चाहिए। संत यदि अपनी ही भूमिका में रहें तो ज्यादा अच्छी बात है। देश में कई जातियां और धर्म सम्प्रदाय हैं। सबकी अपनी-अपनी आचार संहिता हैं। वर्तमान में जरूरत इस बात की है कि सब संतों में मैत्री भाव बना रहे।

● बनेड़िया

10 अप्रैल। रेलमगरा से सादडी, मेणिया ग्रामों को छूते हुए अहिंसा यात्रा बनेड़िया ग्राम पहुंची। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा आदमी को कार्य नियोजित ढंग से करना चाहिए। नियोजित ढंग से किए गए कार्य के परिणाम भी सुखद होते हैं। आदमी को भी तपस्या, स्वाध्याय, सेवा जैसे कार्यों में से चयन करना चाहिए कि वह किस कार्य में सफल हो सकता है। साधक को अपनी क्षमता के अनुरूप कार्य का चयन करना चाहिए।

राजसमंद जिले के 21वें स्थापना दिवस के संदर्भ में आचार्य महाश्रमण ने कहा राजसमंद जिला सशक्त ऐतिहासिक पृष्ठभूमि रखता है। राजनगर से आचार्य भिक्षु को धर्म का विशेष संकल्प प्राप्त हुआ, तो केलवा तेरापंथ का उद्गम स्थल बना। राजसमंद को जिला बने बीस बसंत पूरे हो गए और 21वें स्थापना दिवस पर यही कामना है कि इस जिले का उत्तरोत्तर विकास हो। किसी भी जिले को आगे बढ़ाने के लिए भौतिक व आर्थिक विकास तो जरूरी है ही, साथ ही वहां पर लोगों को साम्प्रदायिकता से ऊपर उठकर नैतिक विकास की भी जरूरत होती है।

धर्मसभा में उपस्थित राजसमंद जिला वासियों को आचार्य महाश्रमण ने संकल्प दिलाया कि वे जिले में साम्प्रदायिकता से ऊपर उठकर नैतिकता के आधार पर विकास की सोच रखते हुए इसके लिए काम करेंगे।

संयम पथ पर चलकर जीवन को सफल बनाएं

धर्मसभा को समणी निर्मलप्रज्ञा, डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने भी संबोधित किया। गंगापुर नगरपालिका अध्यक्ष पूनम मेहता, उत्तमचंद सुखलेचा, पुखराज दक, राजस्थान पत्रिका राजसमंद ब्यूरो प्रमुख अविनाश इत्यादि की प्रमुख उपस्थिति रही।

सायं वेला में अहिंसा यात्रा बनेडिया से प्रस्थान कर 4 किलोमीटर आगे ढीली ग्राम में शासन सेवी स्व. जोरावरमल सोनी के सोनी फार्म हाउस पहुंची। जहां मदनलाल रमेशकुमार सोनी ने अणुव्रत अनुशास्ता का भावभरा स्वागत किया। सोनी फार्म हाउस पर लक्ष्मण सिंह कर्णावट, सवाईलाल पोखरना, डॉ. महेन्द्र कर्णावट, पदमचंद पटावरी, भंवरलाल कर्णावट, विधायक कल्याण सिंह चौहान, उत्तमचंद सुखलेचा, पुखराज दक, रमेश मूथा, कान्ति धाकड़ इत्यादि की प्रमुख उपस्थिति रही।

● कोठारिया

11 अप्रैल। सोनी फार्म हाउस से प्रस्थान कर बिजनोल, डगवाडा, नमाणा चौराहा ग्रामों को अहिंसा का संदेश देती हुई अहिंसा यात्रा कोठारिया ग्राम पहुंची। बिजनोल विद्यालय में छात्र-छात्राओं ने अणुव्रत अनुशास्ता का अभिवादन करते हुए व्यसनों से दूर रहने का संकल्प लिया। नाथद्वारा के विधायक कल्याणसिंह चौहान ने अपने ग्राम डगवाडा में आचार्यश्री की अगवानी की। नमाणा चौराहा पर नमाणावासियों, गांव के लोककर्मी मांगीलाल कर्णावट एवं उनके सुपुत्र तेरापंथी सभा मुम्बई के अध्यक्ष भंवरलाल कर्णावट ने पूज्यश्री का स्वागत किया।

कोठारिया में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा संयम पथ पर चलकर जीवन को सफल बनाया जा सकता है। समय गुजरने के बाद कुछ कर पाना संभव नहीं है। समाज में व्याप्त बुराइयों से नई पीढ़ी को दूर रखना जरूरी है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि दुनिया में दो तरह की विचारधारा विद्यमान है। इसमें आस्तिकवाद व नास्तिकवाद। आस्तिकवादी विचारधारा से व्यक्ति सकारात्मक कार्य की ओर प्रेरित होता है। नास्तिक सोच से उठाए जाने वाले कदम दुर्जन व्यक्ति की भावना के अनुरूप होते हैं। आचार्यश्री ने उपस्थित जनसमुदाय से अपील की कि वे सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ें।

● कुंचौली

12 अप्रैल। कोठारिया से प्रस्थान कर अहिंसा यात्रा गुंजोल ग्राम एवं श्रीनाथ फैक्ट्री को छूते हुए कुंचौली ग्राम स्थित कोठारी फार्म हाउस पहुंची। श्रीनाथ फैक्ट्री पर मेवाड़ कान्फ्रेंस के पूर्व अध्यक्ष सवाईलाल पोखरना ने आचार्यश्री की अगवानी की। कुंचौली ग्राम में स्थित कोठारी फार्म हाउस पर शांतिलाल कोठारी परिवार ने भावभरा स्वागत किया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा व्यक्ति को अपने जीवन की, आत्मा के हित की परवाह करनी है तो सदैव चार दोषों का वमन करना होगा इससे जीवन धन्य हो जायेगा। क्रोध, मान, माया एवं लोभ ऐसे दोष हैं जो जीवन के उद्देश्य को बदल देते हैं। आज राम नवमी है। भगवान राम का जीवन दर्शन महत्वपूर्ण है। आचार्य भिक्षु का अभिनिष्क्रमण दिवस भी आज ही है। इस संदर्भ में आचार्य महाश्रमण ने ''प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर जीवन अर्पण है सारा'' गीत का ऊंची आवाज में संगान किया। मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं', साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर विचार व्यक्त किये।

● कूंठवा

13 अप्रैल। ग्रामवासियों ने आचार्य महाश्रमण का भावभरा स्वागत किया। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने सभा को संबोधित करते हुए कहा अणुव्रतों के द्वारा हम हमारे जीवन को सफल बना सकते हैं। वर्तमान युग में नैतिक मूल्यों का अकाल गहराता जा रहा है। संयमपूर्ण जीवनशैली अपनाकर हम नैतिक मूल्यों को आत्मसात कर सकते हैं।

आचार्य महाश्रमण ने अपने महत्वपूर्ण उद्बोधन में कहा जब तक राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति में नैतिकता का का विकास नहीं होगा तब तक प्रदेश व देश का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति आत्मावलोकन करे कि हमारे अंदर क्या-क्या बुराइयां हैं? इनके विनाश के बाद ही भविष्य उज्जवल हो सकता है। पाप 18 प्रकार के होते हैं। इन पापों से मुक्त होना ही साधना है। इंद्रिय संयम कठिन है, किन्तु असंभव नहीं। जब इंद्रियों पर संयम हो जाता है तो बंधनमुक्ति का मार्ग सहज व सरल हो जाता है। अहिंसा आत्मा का उद्देश्य अनुकम्पा की चेतना के विकास के साथ-साथ व्यसनमुक्ति, भ्रूणहत्या की रोकथाम, ईमानदारी का संदेश, सत्य पालन व लोगों में नैतिकता का विकास करना है।

● शिशोदा

14 अप्रैल। हमेरलाल धाकड़ आरोग्य सेवा प्रकल्प एवं आचार्य महाप्रज्ञ अन्न क्षेत्र का अवलोकन करते हुए अहिंसा रैली के साथ आचार्य महाश्रमण शिशोदा ग्राम पहुंचे। स्वागत समारोह को नाथद्वारा विधायक कल्याणसिंह चौहान, राजसमंद विधायक किरण माहेश्वरी एवं रमेश धाकड़ ने संबोधित किया। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने संबोधन में कहा जीवन में नैतिकता का बहुत ही महत्व है। इससे व्यक्ति का जीवन सकारात्मक सोच की ओर बढ़ता है जो समाज व परिवार के लिये भी हितकर होता है।

आचार्य महाश्रमण ने जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा व्यक्ति को जीवन में अहंकार नहीं करना चाहिए। अहंकार से गुस्सा आता है जो जीवन को समस्याग्रस्त बना देता है। दूसरों से सम्मान पाने की भूमिका पर अहंकार विराजमान होता है वो अभिमान मदिरा पान के समान है। अहंकार का परित्याग बुराई से मुक्त हो जाता है। अतः व्यक्ति को जीवन में कभी भी अहंकार नहीं रखना चाहिए। संचालन मुनि दिनेशकुमार ने किया।

अहिंसा यात्रा का लक्ष्य

अनुकम्पा की चेतना का विकास

- साम्प्रदायिक सौमनस्य
- भ्रूणहत्या निरोध
- नशामुक्ति
- ईमानदारी का प्रयास

- आचार्य महाश्रमण -

मेवाड़ में अणुव्रत, नशामुक्ति अभियान की लहर

राजसमंद। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के आध्यात्मिक नेतृत्व में गतिशील अहिंसा यात्रा-2011-12 के यात्रा पथ में मेवाड़ अंचल के प्रवेशद्वार गुलाबपुरा से रींछेड़ तक के पचास ग्राम्य एवं नगरीय क्षेत्र में अणुव्रत दर्शन एवं नशामुक्ति का सघन अभियान अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट के प्रयासों से अणुव्रत समिति आसीन्द, अणुव्रत समिति नाथद्वारा, अणुव्रत समिति राजसमंद तथा राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति ने संचालित किया। अणुव्रत अभियान के अंतर्गत फरवरी-मार्च 2011 में डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने गुलाबपुरा, गागेडा, दांतडा, शम्भुगढ़, जेतगढ़, बदनोर, आसीन्द, बराणा, लाछुडा, भगवानपुरा, लुहारिया, विनयपुरम्, बावलास, आशाहोली, देवरिया, उल्लाई, खांखला, जूणदा, रेलमगरा, सादडी, बनेडिया, सोनी फार्म हाउस, कोठारिया, कुंठवा, शिशोदा, रींछेड इत्यादि गांवों-नगरों की यात्रा कर कार्यकर्ताओं से सम्पर्क साधा, अणुव्रत प्रचारात्मक साहित्य का वितरण किया, पंचसूत्रीय अणुव्रत संकल्प पत्र भरने का आह्वान किया तथा अणुव्रत उद्घोषों का भित्ति अंकन करवाने का अनुरोध किया। डॉ. कर्णावट के साथ सम्पत सामसुखा भीलवाड़ा, नौरतमल कांठेड़, कल्याणमल गोखरू, रामप्रसाद मेवाड़ा आसीन्द, मदनलाल रांका बदनोर, शंकरलाल दूगड़ लुहारिया, मदन धोका राजसमंद, रमेश सोनी, राजेन्द्र कोठारी, कमलेश धाकड़, सुरेश धाकड़ नाथद्वारा ने समय-समय पर अपने क्षेत्र में यात्रा के दौरान सहयोगी बने। अणुव्रती कार्यकर्ताओं की अहिंसा यात्रा पथ क्षेत्रों की पूर्व तैयारी यात्रा से मेवाड़ के ग्राम्य अंचल में सकारात्मक वातावरण बना और सभी गांवों में अणुव्रत साहित्य का वितरण एवं आदर्श वाक्यों का भित्ति अंकन हुआ।

मुनि सुरेशकुमार 'हरनावां' एवं सहयोगी मुनि संबोधकुमार ने भी आसीन्द, विजयनगर, गुलाबपुरा, गागेड़ा, दांतड़ा, शंभुगढ़, जेतगढ़, आसीन्द, बराणा, भगवानपुरा, लुहारिया इत्यादि गांवों की दो बार श्रमसाध्य पदयात्रा कर जन-जन से सम्पर्क साध उन्हें अहिंसा यात्रा में सहभागी बनने को प्रेरित किया। मुनिश्री हरनावां के प्रयासों से मेवाड़ के प्रवेश द्वार गुलाबपुरा में नगरपालिका ने अहिंसा मार्ग तथा आसीन्द में नगरपालिका ने अहिंसा द्वार का निर्माण करवाया।

अणुव्रत समिति आसीन्द ने समीपवर्ती गांव बोरेला को अणुव्रत ग्राम के रूप में अणुव्रत महासमिति के सहयोग से विकसित करने का संकल्प व्यक्त किया। इस हेतु अणुव्रत समिति आसीन्द के अध्यक्ष नौरतमल कांठेड़ एवं पूर्व अध्यक्ष कल्याणमल गोखरू, सरपंच श्रीमती कमला गुर्जर ने अपने प्रयास प्रारंभ किये हैं। बोरेला गांव में स्वच्छता एवं सभी को शिक्षा के व्यापक अभियान के साथ ही 50 X 50 फीट का अणुव्रत भवन एवं लघु अणुव्रत उद्यान का निर्माण कराया जायेगा। अणुव्रत ग्राम की योजना डॉ. कर्णावट ने अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष जुगराज नाहर चेन्नई के समक्ष प्रस्तुत करते हुए उन्हें सहभागी बनने को प्रेरित किया। उदारमना जुगराज नाहर ने अणुव्रत भवन-उद्यान निर्माण हेतु दस लाख रु. अनुदान की घोषणा लाछुड़ा ग्राम में अणुव्रत अनुशास्ता के समक्ष की। जुगराज नाहर ने अपने दादाजी स्व. टेकचंद नाहर की स्मृति में बोरेला ग्राम को गोद लेने की घोषणा करते हुए कहा अणुव्रत आंदोलन के रचनात्मक कार्यों में हमारा सदैव सहयोग रहेगा। गांव का अणुव्रत आदर्शों के अनुरूप विकास करने का प्रयास अणुव्रत समिति आसीन्द के कार्यकर्ता करेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।

आसीन्द तहसील से प्राप्त 2600 पंचसूत्रीय अणुव्रत संकल्प पत्रों को नौरतमल कांठेड़, कल्याणमल गोखरू, रामप्रसाद मेवाड़ा ने अणुव्रत अनुशास्ता को लाछुड़ा ग्राम में समर्पित किये। अणुव्रत महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा भी चार दिनों तक लाछुड़ा, भगवानपुरा, लुहारिया, विनयपुरम् में अहिंसा यात्रा में साथ रहे।

ज्ञात रहे अणुव्रत महासमिति का वाहन अणुव्रत साहित्य के साथ राजलदेसर से अहिंसा यात्रा में साथ रह जनजागरण अभियान में संलग्न है। नथमल नाहटा, सम्पत सुराणा एवं कमल शर्मा इस अभियान में संलग्न हैं। अणुव्रत शिक्षक संसद के कार्यकर्ता मार्गवर्ती विद्यालयों में छात्र-छात्राओं से नशामुक्ति संकल्प पत्र भरवा उन्हें नशामुक्त रहने को प्रेरित कर रहे हैं।

अहिंसा यात्रा पथ के वासियों को अणुव्रत अनुशास्ता नशामुक्त रहने एवं हिंसा न करने की प्रेरणा दे रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप सैकड़ों-सैकड़ों व्यक्तियों ने नशामुक्त रहने, भ्रूणहत्या न करने, ईमानदारी से व्यापार करने एवं घरेलू हिंसा से दूर रहने के संकल्प व्यक्त किये हैं।

अणुव्रत ग्राम भारती विनयपुरम् के रजत जयंती समारोह का समारंभ अणुव्रत अनुशास्ता के सान्निध्य में हुआ। संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष प्रेमसिंह तलेसरा एवं छात्राओं ने मेवाड़ी परम्परा से अणुव्रत अनुशास्ता की अगवानी की। संस्था प्रांगण में ही मेवाड़व्यापी अणुव्रत सम्मेलन भी आयोजित हुआ जिसमें अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका, महामंत्री विजयराज सुराणा, राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत सामसुखा, गणेश डागलिया, मनोहरलाल इत्यादि की प्रमुख उपस्थिति रही।

जुगराज नाहर की अनुकरणीय घोषणा

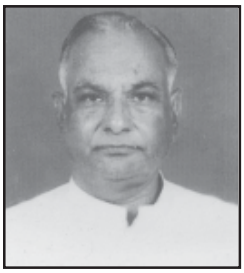

अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष जुगराज नाहर ने आसीन्द तहसील के बोरेला ग्राम को अणुव्रत ग्राम के रूप में विकसित करने की दृष्टि से दादाजी स्व. टेकचंद नाहर की स्मृति में दस लाख रु. अनुदान अणुव्रत महासमिति को देने की महत्वपूर्ण घोषणा लाछुड़ा में आयोजित श्रावक सम्मेलन में की।

अन्ना हजारे भ्रष्टाचार अभियान में अणुव्रत आंदोलन की सहभागिता

नई दिल्ली। वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे ने दिल्ली के जंतर-मंतर पर सड़क के किनारे देश में व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ जन-लोकपाल कानून का मसौदा तैयार करने के लिए भ्रष्टाचार के खिलाफ 5 अप्रैल 2011 से आमरण अनशन कर धरना देते हुए कहा
मैं तब तक आमरण अनशन पर रहूंगा जब तक सरकार जन-लोकपाल विधेयक मसौदा बनाने वाली संयुक्त समिति में 50 फीसदी अधिकारियों के साथ शेष नागरिकों और विद्वानों को शामिल नहीं करती। इस अवसर पर दिल्ली एवं देश के अन्य क्षेत्रों से आए हजारों-हजार कार्यकर्ताओं और मीडियाकर्मियों का भारी हुजूम इकट्ठा हो गया।

अणुव्रत महासमिति नई दिल्ली ने 5 अप्रैल 2011 को अनशन पर बैठे अन्ना हजारे और उनके सहयोगी अरविंद केजरीवाल, स्वामी अग्निवेश और किरण बेदी (आई.पी.एस.) को एक समर्थन-पत्र दिया कि अणुव्रत महासमिति अपने उद्देश्यों के अनुरूप गांधीवादी व अहिंसात्मक तरीके से किए जा रहे भ्रष्टाचार के विरुद्ध इस मुहिम को पूरा समर्थन देगी।

7 अप्रैल 2011 को अणुव्रत कार्यकर्ताओं और महिला मंडल की बहनों ने प्रातः 7 बजे से सायं 7 बजे तक अन्ना हजारे के उपवास स्थल पर धरना देकर सहभागिता निभाई। इस हेतु अणुव्रत महासमिति नई दिल्ली के बड़े-बड़े बैनर ''वक्त है शिष्टाचार बनते जा रहे भ्रष्टाचार से लड़ने का...। हम 'खिलाते' हैं इसलिए वो 'खाते' हैं'' वहां पर लगाये गये। इसी क्रम में भ्रष्टाचार विरोधी पेम्फ्लेट तथा फोल्डर भी उपस्थित जनमेदिनी में वितरित किये गये।

अणुव्रत महासमिति के पूर्व कार्याध्यक्ष
धनराज बैद

उपवास स्थल पर उपस्थित बाबा रामदेव ने अणुव्रत आंदोलन के संदर्भ में दो बार अपने वक्तव्य में जिक्र किया एवं अणुव्रत की अवधारणा की भी सराहना की। स्वामी अग्निवेश जो अणुव्रत आंदोलन से परिचित हैं ने भी अपने वक्तव्य में अणुव्रत का हवाला देकर लोगों को नैतिक मूल्यों को अपनाने की बात कही।

इस अवसर पर अणुव्रत महासमिति के पूर्व कार्याध्यक्ष धनराज बैद उपवास स्थल पर देश में व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ चलाई जा रही इस मुहिम में शामिल हुए और उन्होंने उपवास स्थल पर बैठकर 36 घंटे का अनशन किया यही नहीं उन्होंने अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार विरोधी अभियान के लिए दीप चेरिटेबल इंस्टीट्यूशन की ओर से एक लाख रुपए का अनुदान भी दिया। अणुव्रत महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा, संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा, दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बाबूलाल दूगड़ एवं समाज के अनेक कार्यकर्ताओं का सराहनीय श्रम रहा। इस क्रम में अणुव्रत महासमिति के एल.आर. भारती, सतेन्द्र भारद्वाज, सत्यपाल धामा एवं गंगा सहाय ने सायं 6 बजे के बाद तीन दिन तक दो-दो घंटे का समय लगाकर अपनी भागीदारी दर्शायी।

संस्थाप्रधानों द्वारा अणुव्रत का शंखनाद

आमेट। नगर एवं ब्लॉक के लगभग 87 सरकारी एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों की दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन निकटवर्ती भोलीखेड़ा ग्राम में हुआ। अणुव्रत समिति आमेट के मंत्री चांदमल छाजेड़ ने अणुव्रत की उपयोगिता एवं आचार्य महाश्रमण के मेवाड़ प्रवास के कार्यक्रमों की जानकारी दी। उत्तमचंद बोहरा ने प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान पर प्रकाश डाला। मोतीलाल डांगी ने अणुव्रत के उद्देश्य एवं वर्तमान में अणुव्रत की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

संगोष्ठी में उपस्थित बड़ी संख्या में प्रबुद्धजनों एवं शिक्षकों ने हर्ष व्यक्त करते हुए अणुव्रत, जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान के आयामों को विद्यालयों में साकार करने का संकल्प व्यक्त किया। इस अवसर पर उपस्थित प्रधानाध्यापकों ने अणुव्रत एवं व्यसनमुक्ति के संकल्प पत्र भरे। कार्यक्रम में क्षेत्रीय विधायक गणेश सिंह परमार को अणुव्रत समिति आमेट की ओर से आचार्य महाश्रमण का संदेशयुक्त नशामुक्ति एवं पर्यावरण संरक्षण का बैनर तथा अन्य साहित्य भेंट किया गया। नगरपालिका अध्यक्ष केलाश मेवाड़ा, जिला शिक्षा अधिकारी घनश्याम दहिया, उपखंड अधिकारी सुरेश कुमार सिंघी, विकास अधिकारी भूपेन्द्र जैन, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी सत्यदेव शर्मा, क्रय-विक्रय सहकारी समिति अध्यक्ष खुमाणसिंह राठौड़, भूमि विकास बैंक निदेशक रत्नेश आमेटा, प्राचार्य जसराज खटीक सहित कई प्रबुद्धजनों का अणुव्रत समिति आमेट ने साहित्य द्वारा सम्मान किया।

बांग्लादेश सीमा पर अणुव्रत की गूंज

फूलबाड़ी (पश्चिमी बंगाल)। साध्वी त्रिशलाकुमारी धूपगुड़ी से प्रस्थान कर मयनागुड़ी, जलपाईगुड़ी होते हुए सिलीगुड़ी के निकट फूलबाड़ी पहुंची। बांग्लादेश बार्डर पर कार्यक्रम रखा गया। यहां बी.एस.एफ. के जवानों ने साध्वीश्री का भावभीना स्वागत किया। बी.एस.एफ. के अधिकारी मुकेश ने स्वागत करते हुए कहा
यह हमारे लिए प्रसन्नता की बात है कि हमारे यहां संत-चरण पड़े। साध्वी त्रिशलाकुमारी ने आचार्य महाश्रमण की अहिंसा यात्रा की जानकारी देते हुए अणुव्रत आंदोलन पर प्रकाश डालते हुए जवानों से व्यसनमुक्त रहते हुए ईमानदारी से कार्य करने की बात कही। कलाम ने साध्वीश्री से हिन्दी में बातचीत की। इस अवसर पर बाबूलाल जैन, मदन मालू, अशोक पुगलिया, तोलाराम सेठिया, किशन आंचलिया, सुभाष सिंघी, धनराज दूगड़, प्रेम पांडे उपस्थित थे।

आर.जी. बुराड़िया का निधन

कोयम्बटूर। आर.जी. बुराड़िया का निधन हो गया। वे कोयम्बटूर अणुव्रत समिति के प्रथम अध्यक्ष थे। सामाजिक व धार्मिक कार्यों में भी बहुत रूचि लेते थे। इसके अलावा वे कोयम्बटूर वेलफेयर एसोशिएशन के अध्यक्ष रहे। नेहरू स्कूल व कॉलेज के मुख्य कार्यदर्शी रहे। आर.जी. बुराड़िया के निधन से कार्यकर्ता शक्ति को भारी क्षति हुई है। अणुव्रत परिवार की भावभीनी श्रद्धांजलि।

www.terapanthinfo.com

छापर में प्रभात फेरी

छापर, 16 अप्रैल। भिक्षु साधना केन्द्र छापर में मुनि सुमतिकुमार के सान्निध्य में महावीर जयंती मनाई गयी। मुनिश्री ने कहा विश्व के महापुरुषों में भगवान महावीर का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। उन्होंने सदैव पशु बलि, जातिवाद एवं दास प्रथा का विरोध करते हुए नारी जाति का उत्थान किया। मुनि देवार्यकुमार, मुनि आदित्यकुमार, मुनि देवराज, प्रदीप सुराणा, सूरजमल नाहटा, रणजीत दूगड़, संतोष भंसाली, महिला मंडल एवं कन्या मंडल ने गीतिका के माध्यम से अपने श्रद्धाभाव प्रकट किये।

इससे पूर्व प्रातःकालीन कार्यक्रम में भिक्षु साधना केन्द्र से सभी संघीय संस्थाओं के तत्वावधान में प्रभात फेरी निकाली गयी। यह प्रभात फेरी कस्बे के विभिन्न मार्गों से होते हुए भिक्षु साधना केन्द्र में पहुंच कर सभा के रूप में परिवर्तित हो गयी। सेवा केन्द्र व्यवस्थापक मुनि सुमतिकुमार से मंगल पाठ सुनकर प्रभात फेरी रवाना हुई।

प्रभात फेरी में चमन दुधोड़िया, दिलीप दुधोड़िया, लोमा भंसाली, प्रिया नाहटा, हर्षा दुधोड़िया, यशा दुधोड़िया, प्रीति सुराणा, ज्योति सुराणा, हेमलता नाहर, सरोज भंसाली, कविता भंसाली, हेमलता दुधोड़िया, ज्योति दुधोड़िया, छाया दुधोड़िया, उत्तम दुधोड़िया, लक्ष्मीपत सुराणा, बजरंग नाहटा, धर्मप्रकाश बैद एवं रूपचन्द बैद ने महावीर के प्रेरणादायी संदेशों का उद्घोष किया। संचालन प्रदीप सुराणा ने किया।

अणुव्रत समिति की बैठक

जयपुर। युवक परिषद् के तत्वावधान में अणुव्रत आंदोलन के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से क्षेत्रीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें तेयुप, अणुव्रत समिति जयपुर एवं अन्य संस्थाओं की सार्थक सहभागिता रही। जयपुर युवक परिषद् के पदाधिकारियों द्वारा समिति को इस कार्यक्रम में सहभागिता हेतु अवसर प्रदान किया गया। अणुव्रत के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से इस कार्यक्रम में आगन्तुकों को साहित्य, फोल्डर्स आदि वितरित किए गए। साथ ही समिति के पदाधिकारियों द्वारा उन्हें अणुव्रत से जुड़ने की प्रेरणा भी दी गई। इस अवसर पर समिति की पूर्व अध्यक्षा विमला दूगड़, वर्तमान अध्यक्षा आशा नीलू टाक, मंत्री पुष्पा बांठिया, कल्पना जैन इत्यादि के अलावा शहर के गणमान्य व्यक्ति एवं सभाओं के प्रतिनिधि तथा सदस्य उपस्थित थे। उपस्थित सभी सदस्यों ने इस अवसर पर विचार-विमर्श उपरांत गहन चर्चा करते हुए अणुव्रत आंदोलन में तेजस्विता लाने की बात कही।

भ्रष्टाचार के खिलाफ समर्थन

उदयपुर, 8 अप्रैल। अणुव्रत समिति उदयपुर की एक महत्वपूर्ण बैठक संस्था अध्यक्ष गणेश डागलिया की अध्यक्षता में आयोजित हुई। उक्त बैठक में भ्रष्टाचार का विरोध कर रहे समाज सेवी अन्ना हजारे का समर्थन करते हुए सरकार से मांग की कि लोकपाल बिल बनाया जाए तथा प्रत्येक व्यक्ति को इसके दायरे में रखा जाए। प्रचार मंत्री राजेन्द्र सेन ने बताया कि देश में पहली बार गांधीवादी विचारक समाज सेवी अन्ना हजारे ने देश में भ्रष्टाचार के बढ़ते प्रचलन से दुखी होकर सरकार से मांग की है कि लोकपाल बिल बनाने वाली समिति का गठन कर देश के किसी भी नागरिक या मंत्री के खिलाफ भ्रष्टाचार की कार्यवाही करने का अधिकार दिया जाय। बैठक में डॉ. कैलाश मानव, शब्बीर के. मुस्तफा, सवाईलाल पोखरना, माणक नाहर, निर्मल कुणावत, राजेन्द्र सेन, सुनिल खोखावत, सुरेश सियाल, अरविन्द चित्तौड़ा, जमनालाल दशोरा, राकेश चित्तौड़ा, डॉ. रंगलाल धाकड़ सहित कई सदस्य उपस्थित थे।

अणुव्रत प्रभारियों की नियुक्ति

उदयपुर। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण की अहिंसा यात्रा में सहभागिता एवं अणुव्रत आंदोलन को गति देने के क्रम में अणुव्रत समिति आसीन्द द्वारा क्षेत्र में निम्न क्षेत्रों में अणुव्रत प्रभारियों की नियुक्ति की गई।

दौलतगढ़ ज्ञानचन्द बडौला, गौतमचन्द बुरड़, राजेन्द्रकुमार बडौला। शंभुगढ़ बसंतीलाल बोरदिया, सम्पतलाल बाफणा, सज्जन सिंह बाफणा। कटार रतनलाल रांका, लादूलाल रांका। लाछूड़ा भीकमचंद चोरड़िया, विनोदकुमार चोरड़िया। तिलोली भागचंद बाफणा, मनोजकुमार बाफणा। गुलाबपुरा पारसमल लोढा। रघुनाथपुरा नोरतमल नौलखा, सम्पतलाल आंचलिया। बदनोर गौतमचंद रांका, मदनलाल रांका, ज्ञानचंद रांका, अमित रांका, पवनकुमार रांका एवं विमलकुमार रांका। बराणा शांतिलाल बडौला, प्रकाशचन्द बडौला एवं ओमप्रकाश नौलखा। लुहारिया शंकरलाल दूगड़, माणकचंद दूगड़ एवं माणकचंद चोरडिया।

अणुव्रत समिति की बैठक

किशनगढ़, 7 अप्रैल। मुनि मोहनलाल 'शार्दूल', मुनि मधु एवं मुनि अशोक कुमार के सान्निध्य में विश्व स्वास्थ्य दिवस पर अणुव्रत समिति की बैठक आयोजित हुई। मुनिश्री ने अणुव्रत अभियान को आगे बढ़ाने का मार्गदर्शन देते हुए कहा भ्रष्टाचार, मिलावट एवं भ्रूणहत्या को खत्म करने के लिए समिति अभियान चलाये। समिति के मंत्री सुरेश जामड़ ने अणुव्रत समिति के कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। मुनि अशोक कुमार ने किशनगढ़ के सार्वजनिक स्थानों पर अणुव्रत आचार संहिता के बोर्ड लगवाने की बात कही। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष कृष्ण चन्द्र टवाणी ने इस अवसर पर राजस्थानी भाषा में दो गीतों का संगान किया। मुनि मोहनलाल ने मुक्तक सुनाये।

बिरदीचन्द पोखरना ने कहा कि अणुव्रत अभियान की सफलता के लिए लोगों का हृदय परिवर्तन कराना एवं अहं भाव का त्याग कराना आवश्यक है। इस अवसर पर उपस्थित अनेक महानुभावों ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

www.terapanthinfo.com

महिला हिंसा : कारण और निवारण

फतेहपुर-शेखावटी, 6 अप्रैल। अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा चंदनमल रायजादा के सौजन्य से संचालित लीलावती देवी रायजादा स्मृति भवन में अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र के तत्वावधान में प्रखर गांधीवादी चिंतन माणकचंद सोनी की अध्यक्षता में महिला हिंसा : कारण और निवारण एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन हुआ। उद्घाटन करते हुए स्त्रीरोग विशेषज्ञ डॉ. गोरधन शोकिया ने कहा महिला हिंसा का मुख्य कारण अशिक्षा है। अतः महिलाओं का शिक्षित होना जरूरी है। फतेहपुर नगरपालिका उपाध्यक्ष कैलाश मिश्रा ने कहा भारतीय संस्कृति में जो प्रतिष्ठा महिलाओं की रही वह उन्हें मिलनी चाहिए। आचार्य रामगोपाल शास्त्री ने कहा रूढ़िवादिता, अंधविश्वास एवं अपसंस्कृति भी हिंसा का एक प्रमुख कारण है। रूढिवादिता एवं अंधविश्वास को उखाड़कर फेंक देना चाहिए तथा अपसंस्कृति से बचना चाहिए। यूथ क्लब फतेहपुर के अध्यक्ष इस्लाम खां ने कहा महिलाओं को व्यसन एवं फैशन से बचना चाहिए। स्वावलम्बी जीवन जीना चाहिए। साहित्यकार एस.डी. जोया ने कहा कि महिला अबला नहीं सबला है। उन्हें स्वयं को कभी कमजोर नहीं समझना चाहिए। स्वागत भाषण सुरेश वांगरवा ने किया। इस अवसर पर उपस्थित अनेक महानुभावों ने अपने विचार रखे।

सभाध्यक्ष गांधीवादी चिंतक माणकचंद सोनी ने कहा कि गिरते संस्कार और नैतिक पतन भी हिंसा का कारण है। आभार व्यक्त मेवाराम प्रजापत ने किया। कार्यक्रम में कपिल पारीक, मनोज प्रजापत एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

हनुमानसिंह बैद का निधन

जयपुर। अणुव्रत प्रचार-प्रसार में संलग्न जयपुर निवासी हनुमानसिंह बैद का आकस्मिक निधन हो गया। उनके निधन से न केवल परिवार को बल्कि कार्यकर्ता शक्ति को भी क्षति हुई है। उनका सम्पूर्ण जीवन अनुशासन, संयम, कर्त्तव्यनिष्ठा में समर्पित रहा। संघ एवं संघपति के प्रति वे पूर्णरूप से समर्पित थे। जयपुर में पिछले कुछ वर्षों से उनका अणुव्रत के प्रचार-प्रसार में निकटता से जुड़ाव रहा। उनका परिवार सुसंस्कारों से ओतप्रोत है। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि उनके परिवार को इस असहनीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। अणुव्रत परिवार की भावभीनी श्रद्धांजलि।

दिल्ली के विद्यालयों में अणुव्रत कार्यक्रम

दिल्ली, 29 मार्च। अ.भा. अणुव्रत न्यास द्वारा आयोजित दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों में अणुव्रत प्रतियोगिताओं के विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण का क्रम रहा। इस दौरान विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया एवं अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान की जानकारी दी गयी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अ.भा. अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी धनराज बोथरा ने कहा बच्चों के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास हेतु शुरू से ही बच्चों को संस्कारों का सिंचन दिया जाए, तभी उनका वास्तविक विकास हो सकेगा। अणुव्रत आंदोलन द्वारा इस दिशा में जीवन विज्ञान के माध्यम से विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु दिल्ली के विविध स्कूलों में अणुव्रत कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

संयुक्त प्रबंध न्यासी सुशील कुमार जैन ने कहा अणुव्रत दर्शन को घर-घर पहुंचाने हेतु अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास सतत् प्रयत्नशील है। न्यासी शांति कुमार जैन ने कहा अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से लाखों विद्यार्थियों को संस्कारित किए जाने का प्रयास किया जा रहा है। प्रतियोगिताओं के संयोजक विजय वर्धन डागा ने कहा अणुव्रत आधार संयम है, यह प्रत्येक समस्या को संयम के माध्यम से सुलझाना चाहता है। अ.भा. अणुव्रत न्यास के प्रशिक्षक रमेश काण्डपाल ने अणुव्रत आंदोलन पर प्रकाश डालते हुए कार्यक्रम का संचालन किया।

सभी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों ने इसे प्रासंगिक बताया एवं अणुव्रत दर्शन की सराहना की। अणुव्रत प्रतियोगिताओं के इस राष्ट्रीय कार्यक्रम में सैकड़ों विद्यालयों के हजारों विद्यार्थी सम्मिलित हो रहे हैं।

जीवन विज्ञान द्वारा व्यक्तित्व विकास

कोकराझाड़। साध्वी निर्वाणश्री के सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन हायर सेकेन्ड्री विद्यालय सिलगाड़ा में हुआ। विद्यालय के प्रधानाचार्य अनुपम चक्रवर्ती एवं शिक्षकवृंद को जीवन विज्ञान के संदर्भ में अवगति देते हुए साध्वीश्री ने कहा शिक्षा के क्षेत्र में सर्वत्र आज द्रुतगति से कार्य हो रहा है। शारीरिक और बौद्धिक विकास के साथ-साथ जब तक मानसिक व भावनात्मक विकास के उपक्रम को शिक्षा के साथ नहीं जोड़ा जाएगा उसमें अधूरापन बना रहेगा। इस अधूरेपन को भरने की दृष्टि से जीवन विज्ञान ने अहम भूमिका निभाई है। देशभर में लाखों विद्यार्थी इस विषय के द्वारा लाभान्वित हो रहे हैं। यदि असम प्रांत के विद्यार्थियों को जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम से जोड़ दिया जाये तो परिणाम काफी सकारात्मक एवं उत्साहवर्द्धक हो सकते हैं। जीवन विज्ञान के प्रयोगों से प्रभावित होकर सभी शिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त करने की इच्छा जाहिर की। साध्वी लावण्यप्रभा ने विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी विविध विषयों की जानकारी दी।

स्थानीय बोडो लोगों ने साध्वीवृंद के कार्यक्रमों में उपस्थित होने की विशेष रूचि दिखायी। साध्वीश्री ने उन्हें आहार शुद्धि एवं व्यसनमुक्ति की विस्तृत जानकारी दी। अनेक लोगों ने प्रेरित होकर सप्ताह में दो दिन, चार दिन के लिए मांसाहार के परित्याग किए। कई लोगों ने शराब के परित्याग किए। विलासीपाड़ा एवं झाड़ के भाई-बहनों ने मार्गवर्ती उपासना का पूरा लाभ लिया। कार्यक्रम की आयोजना में स्थानीय सभा, युवक परिषद्, महिला मंडल एवं अन्य कार्यकर्ताओं का सराहनीय श्रम रहा।

www.terapanthinfo.com

अणुव्रत प्रसार आज के युग की मांग

लाडनूं। आजादी के बाद आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के रूप में एक नैतिक क्रांति का सूत्रपात किया। अहिंसा प्रशिक्षण एवं अहिंसा यात्रा के माध्यम से आचार्य महाप्रज्ञ ने अणुव्रत आंदोलन को गति दी। वर्तमान में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने पुनः अहिंसा यात्रा की शुरुआत की जो अणुव्रत मूल्यों को जन-जन तक पहुंचाने में सक्रिय हैं। भ्रष्टाचार की समस्या आज चरम पर है। युवा पीढ़ी नशे के मकड़जाल में फंसती दिख रही है। अतः जरूरत इस बात की है कि अणुव्रत के माध्यम से युग की समस्याओं को समाहित किया जाए। ये विचार मुनि महेन्द्रकुमार ने अणुव्रत गोष्ठी में उपस्थित कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आज के युग की मांग है कि अणुव्रत के मूल्य जन-जन तक पहुंचें। इस हेतु शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों, ग्रामीणों, व्यापारियों इत्यादि के समय-समय पर शिविर आयोजित कर उन्हें सामाजिक जीवन जीने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

अणुव्रत महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा ने अणुव्रत की पूरी योजना प्रस्तुत की। प्रारंभ में लाडनूं और पड़िहारा को केन्द्र बनाकर कार्य शुरू किया जायेगा। विजयराज सुराणा ने इस कार्य को गति देने हेतु महीने में दस दिन का अपना समय देने का संकल्प व्यक्त किया।

अणुव्रत समिति लाडनूं के मंत्री डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने गोष्ठी का संयोजन करते हुए कहा प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसका बेटा अच्छा इन्सान बने, ईमानदार हो, माता-पिता की आज्ञा का पालन करने वाला हो, सत्यवादी हो किन्तु वे यह भूल जाते हैं कि पहले ये गुण स्वयं में आत्मसात करने चाहिएं। क्योंकि माता-पिता एवं अभिभावकों के संस्कार ही बच्चों में आते हैं। अतः पहले स्वयं सुधरें उसके बाद युग को सुधरने की नसीहत दें। समिति के उपमंत्री अब्दुल हमीद को प्रत्येक विद्यालय के एक-एक शिक्षक एवं दूसरे उपमंत्री सीताराम टेलर को प्रत्येक विद्यालय के दो-दो विद्यार्थियों की सूची बनाकर प्रस्तुत करने की जिम्मेदारी दी गयी। कंचनलता शर्मा ने प्रशिक्षण के लिए मई-जून का समय उपयुक्त बताया। किरण बरमेचा एवं सुशील दूगड़ ने महिलाओं के प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया। अशोक भास्कर एवं जे.पी. सिंह ने कहा कि जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय से प्रशिक्षित होकर निकलने वाले विद्यार्थियों को अणुव्रत प्रचार की जिम्मेदारी दी जानी चाहिए। संरक्षक विजयसिंह बरमेचा ने सभी वर्ग, सम्प्रदाय के लोगों के लिए अणुव्रत के मूल्यों को अत्यन्त उपयोगी बताया। इस अवसर पर जगमोहन माथुर, जयचंदलाल सोनी, श्रीचंद चौहान, भाणुखां टॉक, नंदलाल वर्मा, शरद जैन एवं राजेश नाहटा ने भी अपने वक्तव्यों में अणुव्रत के प्रचार पर विशेष बल दिया। धन्यवाद ज्ञापन अली अकबर रिजवी ने किया।

● अणुव्रत समिति लाडनूं के तत्वावधान में जैन विश्वभारती परिसर में समाजसेवी भंवरलाल मूंधड़ा के निधन पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी, विजयराज सुराणा, विजयसिंह बरमेचा, सीताराम टेलर, अली अकबर रिजवी, कंचनलता शर्मा आदि ने छापर निवासी स्वर्गीय भंवरलाल मूंधड़ा का देश भर में अणुव्रत एवं समाज सेवी के लिए उनके द्वारा किये गये कार्यों पर प्रकाश डालकर उनके प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त की।

कैदियों ने लिया नशामुक्ति का संकल्प

रोहतक। जिला कारागार गृह रोहतक में मुनि विनयकुमार 'आलोक' के सान्निध्य में व्यसनमुक्ति कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मुनिश्री ने कैदियों को संबोधित करते हुए कहा क्रोध हथियार से भी घातक वार करता है। क्रोध के कारण ही मनुष्य में बदले की भावना बलवती होती है एवं वह अपराध की दिशा में चला जाता है। संयम के द्वारा अपराध वृत्ति से बचा जा सकता है। मुनि नरेश ने अणुव्रत गीत का संगान किया।

मुनिश्री ने आगे कहा जेल में दण्ड भोगने से आपके बुरे कर्मों का बोझ हल्का हो जाता है। पापों को पश्चाताप से धो लेने पर व्यक्ति महान बन जाता है। कैदी जेल को जेल न समझ कर सुधार गृह समझें। मुनिश्री ने नशे की आदत को त्यागने की अपील करते हुए कहा नशा आतंकवाद से भी भयानक शत्रु है, जो देश को तबाह करने पर तुला हुआ है। 40 प्रतिशत अपराध नशे के कारण ही होते हैं। मनुष्य अनावश्यक स्मृतियों और कल्पनाओं के जाल में फंसा रहता है, अतः वर्तमान में रहने के लिए उसे बहुत कम समय मिलता है या मिलता ही नहीं। व्यक्तित्व विकास के लिए स्मृतियों और कल्पनाओं के चक्र को तोड़ना जरूरी है। जीवन में केवल वही करें जो अनिवार्य है। अनावश्यक सोच से तनाव पैदा होता है और व्यक्तित्व विकास में बाधक बनता है। मुनिश्री ने उपस्थित कैदी भाइयों को आवेश, उद्वेग व वासना से बचने के हेतु प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाये। जेल अधीक्षक राजेन्द्र सिवाच ने मुनिश्री का स्वागत करते हुए कहा कि आप द्वारा बताया गया श्वास दर्शन का प्रयोग बहुत अच्छा लगा। क्योंकि जीवन का सार है श्वास। आपका जब भी रोहतक आना हो जेल में कार्यक्रम अवश्य रखवायें। कार्यक्रम में लोकेश जैन, पंजाब केसरी ब्यूरो चीफ मनमोहन कथूरिया, अनिल जैन, राज जैन, तरसेम जैन, संदीप जैन प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

दूरदर्शन केन्द्र में अणुव्रत प्रेक्षाध्यान के प्रयोग

सिकंदराबाद। अणुव्रत समिति सिकंदराबाद की उपाध्यक्ष निर्मला बैद ने दूरदर्शन केन्द्र रमन्तपुरा के अधिकारियों के मध्य अणुव्रत की जानकारी देते हुए प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाये। साथ ही आचार्य महाश्रमण की अहिंसा यात्रा की जानकारी भी दी। उन्होंने अणुव्रत आचार संहिता, पर्यावरण बचाओ, बिजली बचाओ, पृथ्वी बचाओ इत्यादि के स्टीकर भी अधिकारियों को भेंट किए। आचार्य महाप्रज्ञ का साहित्य डायरेक्टर शैलजा सुमन को दिया। इस कार्यक्रम में लगभग 60 व्यक्तियों ने भाग लिया। दूरदर्शन अधिकारियों ने इस कार्यक्रम का प्रसारण दूरदर्शन पर करने की बात कही।

www.terapanthinfo.com

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना

अणुव्रत की आचार संहिता व्यापक आचार संहिता है। अणुव्रत का अर्थ है नैतिकता। आज चहुँ ओर हाहाकार है। समूचा मानव समाज पीड़ित है अनैतिकता से। विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, संचार माध्यम, शिक्षण संस्थान सभी भ्रष्टाचार, नशा और आडम्बर में लिप्त हैं। बढ़ते भ्रष्टाचार, नशा और आडम्बर ने हमारी विकास यात्रा की गति को मंद कर दिया है। समाज में व्याप्त इन बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाना भी आसान नहीं है क्योंकि हर डाल पर वे अपना डेरा डाले बैठे हैं। हाँ, इन बुराइयों के मूल कारणों पर प्रहार कर एक दीपक जला समाज में नैतिकता के प्रति निष्ठा को पुनः पैदा किया जा सकता है।

अणुव्रत आंदोलन ने समाज में व्याप्त बुराइयों पर अँगुली उठाई है। हमारे साधन, शक्ति सीमित हैं। अँगुली निर्देश का यह क्रम न सिर्फ गतिशील रहे वरन् लोकव्यापी बने और अणुव्रत की कार्यकर्ता शक्ति अनैतिकता के सामने प्रतिरोधक शक्ति बनकर खड़ी हो इस दृष्टि से अणुव्रत महासमिति के पास पूरे साधन हो यह भी अत्यन्त आवश्यक है।

आने वाले पाँच वर्षों में अणुव्रत की सर्व प्रवृत्तियाँ सुचारू रूप से संचालित हों और अणुव्रत के आंदोलनात्मक स्वरूप में तेजस्विता आए इस दृष्टि से अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना का वर्ष 2009–10 से प्रारंभ हुआ है। इस योजना के अन्तर्गत प्रतिवर्ष एक निश्चित अर्थ राशि विसर्जित करने वाले अर्थ प्रदाताओं के तीन वर्ग हैं–

विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी	**प्रतिवर्ष 51000=00 रु. का अर्थ सहयोग**
विशेष अणुव्रत योगक्षेमी	**प्रतिवर्ष 21000=00 रु. का अर्थ सहयोग**
अणुव्रत योगक्षेमी	**प्रतिवर्ष 11000=00 रु. का अर्थ सहयोग**

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना के अन्तर्गत पाँच वर्षों तक नियमित रूप से अर्थ विसर्जन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। महाप्रतापी अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के जन्म शताब्दी वर्ष को दृष्टिगत रखते हुए अणुव्रत महासमिति की प्रवृत्तियों के सुचारू संचालन हेतु इस योजना का श्रीगणेश हुआ है। आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना से जुड़कर अणुव्रत आंदोलन के प्रचार–प्रसार में सहभागी बनें। आपका अर्थ सहयोग हमारे कार्य का आधार सम्बल बनेगा। अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना में अभी तक निम्न महानुभावों ने जुड़कर अणुव्रत के आंदोलनात्मक स्वरूप को निखारने में अपनी सहभागिता अंकित कराई है

- **विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी**

1. श्री जुगराज नाहर	चैन्नई	2. श्रीमती शांता नाहर	चैन्नई
3. श्री बी.सी भलावत	मुम्बई	4. श्री रमेश धाकड़	मुम्बई
5. श्री कमलेश भादानी	तिरूपुर	6. श्री मगन जैन	तुषरा

- **विशेष अणुव्रत योगक्षेमी**

1. श्री बाबूलाल गोलछा	दिल्ली	2. श्री सम्पत सामसुखा	भीलवाड़ा
3. श्री जसराज बुरड़	जसोल	4. श्री निर्मल नरेन्द्र रांका	कोयम्बतूर
5. श्री गोविन्दलाल सरावगी	कोलकाता	6. श्री ताराचंद दीपचंद ठाकरमल सेठिया	जलगांव
7. श्री रूपचंद सुराना	गुवाहाटी	8. श्री मूलचंद पारख (वैरायटी हॉल)	ऊँटी
9. श्री डालमचंद–तारादेवी सुराना	कोलकाता		

- **अणुव्रत योगक्षेमी**

1. श्री जी.एल.नाहर	जयपुर	2. श्री विजयराज सुराणा	दिल्ली
3. श्री मीठालाल भोगर	सूरत	4. श्री बाबूलाल दूगड़	आसीन्द
5. श्री गुणसागर डॉ. महेन्द्र कर्णावट	राजसमन्द	6. श्री अंकेशभाई दोषी	सूरत
7. श्री इन्द्रमल हिंगड़	भीलवाड़ा	8. श्रीमती भारती मुरलीधर कांठेड़	दिल्ली
9. श्री लक्ष्मणसिंह कर्णावट	उदयपुर	10. श्री सुबोध कोठारी	गुवाहाटी
11. श्री जयसिंह कुंडलिया	सिलीगुडी	11. श्री राजेन्द्र सेठिया	गंगाशहर
12. श्री सी.एल. सरावगी	झांसी	13. श्री तनसुखलाल बैद	पटना
14. श्री पूनमचंद बोथरा	जयपुर	15. श्री रतनलाल सुराणा	दिल्ली
16. श्री विनोद दूगड़	पटना	17. श्री नरपत वागरेचा	हुगली
18. श्री मूलचंद–प्रतिभा कोठारी	कोलकाता	19. श्री जब्बरमल दूगड़	कोलकाता

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना से जुड़कर हम सभी प्रयास करें स्वस्थ समाज संरचना के सपने को धरती पर उतारने की। इस क्रम में आपका त्वरित सहयोग प्राप्त हो यही अनुरोध है। आप अपनी विसर्जन राशि बैंक ड्राफ्ट से अणुव्रत महासमिति नई दिल्ली के नाम से भिजवायें अथवा केनरा बैंक की किसी भी स्थानीय शाखा में अणुव्रत महासमिति के खाता क्रमांक **0158101010750** में जमा कर लिखित सूचना भिजवाएं।

आपका सहयोग : हमारा आधार संबल

www.terapanthinfo.com